“અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્” ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર ૧૫૦

અનુભૂત સિધ્ધ વિશા યંત્ર

: દ્રવ્યસહાયક :

સૂરિરામચન્દ્ર દીક્ષા શતાબ્દિ વર્ષે
સંયમજીવનની અનુમોદનાર્થે
શ્રીમતી લહેરીબેન વનેચંદજી શ્રાવિકા ઉપાશ્રયમાં
સં. ૨૦૬૮ માં થયેલ આરાધક શ્રાવિકાઓની
જ્ઞાનખાતાની ઉપજમાંથી

: સંયોજક :

શાહ બાબુલાલ સરેમલ બેડાવાળા
શ્રી આશાપૂરણપાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર
શા. વિમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, સાબરમતી, અમદાવાદ-૩૮૦૦૦૫
(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ.) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (રહે.) ૨૭૫૦૫૭૨૦

સંવત ૨૦૬૮ ઈ.સ. ૨૦૧૨

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – શાહ બાબુલાલ સરેમલ
શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.
(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૫ (ઈ. ૨૦૦૯) – સેટ નં-૧

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.jainelibrary.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમાંક	પુસ્તકનું નામ	કર્ત્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
001	श्री नंदीसूत्र अवचूरी	पू. विक्रमसूरिजी म.सा.	238
002	श्री उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णी	पू. जिनदासगणि चूर्णीकार	286
003	श्री अर्हद्गीता-भगवद्गीता	पू. मेघविजयजी गणि म.सा.	84
004	श्री अर्हच्चूडामणि सारसटीकः	पू. भद्रबाहुस्वामी म.सा.	18
005	श्री यूक्ति प्रकाशसूत्रं	पू. पद्मसागरजी गणि म.सा.	48
006	श्री मानतुङ्गशास्त्रम्	पू. मानतुंगविजयजी म.सा.	54
007	अपराजितपृच्छा	श्री बी. भट्टाचार्य	810
008	शिल्प स्मृति वास्तु विद्यायाम्	श्री नंदलाल चुनिलाल सोमपुरा	850
009	शिल्परत्नम् भाग-१	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	322
010	शिल्परत्नम् भाग-२	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	280
011	प्रासादतिलक	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	162
012	काश्यशिल्पम्	श्री विनायक गणेश आपटे	302
013	प्रासादमञ्जरी	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	156
014	राजवल्लभ याने शिल्पशास्त्र	श्री नारायण भारती गोंसाई	352
015	शिल्पदीपक	श्री गंगाधरजी प्रणीत	120
016	वास्तुसार	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	88
017	दीपार्णव उत्तरार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	110
018	જિનપ્રાસાદ માર્તણ્ડ	શ્રી નંદલાલ ચુનીલાલ સોમપુરા	498
019	जैन ग्रंथावली	श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फ्रन्स	502
020	હીરકલશ જૈન જ્યોતિષ	શ્રી હિમ્મતરામ મહાશંકર જાની	454
021	न्यायप्रवेशः भाग-१	श्री आनंदशंकर बी. ध्रुव	226
022	दीपार्णव पूर्वार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	640
023	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-१	पू. मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.	452
024	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-२	श्री एच. आर. कापडीआ	500
025	प्राकृत व्याकरण भाषांतर सह	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	454

026	**तत्त्वोपप्लवसिंहः**	**श्री जयराशी भट्ट, बी. भट्टाचार्य**	188
027	**शक्तिवादादर्शः**	**श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री**	214
028	**क्षीरार्णव**	**श्री प्रभाशंकर ओघडभाई**	414
029	**वेधवास्तु प्रभाकर**	**श्री प्रभाशंकर ओघडभाई**	192
030	**शिल्परत्नाकर**	**श्री नर्मदाशंकर शास्त्री**	824
031	**प्रासाद मंडन**	**पं. भगवानदास जैन**	288
032	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-१**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	520
033	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-२**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	578
034	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-३ (१)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	278
035	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-3 (२) (३)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	252
036	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-५**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	324
037	વાસ્તુનિઘંટુ	પ્રભાશંકર ઓઘડભાઈ સોમપુરા	302
038	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૧	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	196
039	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૨	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	190
040	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૩	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	202
041	સપ્તસન્ધાન મહાકાવ્યમ્	પૂ. વિજયઅમૃતસૂરિશ્વરજી	480
042	સપ્તભઙ્ગીમિમાંસા	પૂ. પં. શિવાનન્દવિજયજી	228
043	ન્યાયાવતાર	સતિષચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ	60
044	વ્યુત્પત્તિવાદ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	218
045	સામાન્યનિર્યુક્તિ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	190
046	સપ્તભઙ્ગીનયપ્રદીપ બાલબોધિનીવિવૃત્તિઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	138
047	વ્યુત્પત્તિવાદ શાસ્ત્રાર્થકલા ટીકા	શ્રીવેણીમાધવ શાસ્ત્રી	296
048	નયોપદેશ ભાગ-૧ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	210
049	નયોપદેશ ભાગ-૨ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	274
050	ન્યાયસમુચ્ચય	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	286
051	સ્યાદ્યાર્થપ્રકાશઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	216
052	દિન શુદ્ધિ પ્રકરણ	પૂ. દર્શનવિજયજી	532
053	બૃહદ્ ધારણા યંત્ર	પૂ. દર્શનવિજયજી	113
054	જ્યોતિર્મહોદય	સં. પૂ. અક્ષયવિજયજી	112

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – શાહ બાબુલાલ સરેમલ

શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન

હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.

(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૬ (ઈ. ૨૦૧૦) – સેટ નં-૨

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.jainelibrary.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	ભાષા	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
055	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहद्न्यास अध्याय-६	सं	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	296
056	विविध तीर्थ कल्प	सं	पू. जिनविजयजी म.सा.	160
057	ભારતીય જૈન શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને લેખનકળા	ગુજ.	पू. पूण्यविजयजी म.सा.	164
058	सिद्धान्तलक्षणगूढार्थ तत्त्वलोकः	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	202
059	व्याप्ति पञ्चक विवृत्ति टीका	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	48
060	જૈન સંગીત રાગમાળા	ગુ.	श्री मांगरोळ जैन संगीत मंडळी	306
061	चतुर्विंशतीप्रबन्ध (प्रबंध कोश)	सं	श्री रसिकलाल एच. कापडीआ	322
062	व्युत्पत्तिवाद आदर्श व्याख्यया संपूर्ण ६ अध्याय	सं	श्री सुदर्शनाचार्य	668
063	चन्द्रप्रभा हेमकौमुदी	सं	पू. मेघविजयजी गणि	516
064	विवेक विलास	सं/ગુ.	श्री दामोदर गोविंदाचार्य	268
065	पञ्चशती प्रबोध प्रबंध	सं	पू. मृगेन्द्रविजयजी म.सा.	456
066	सन्मतितत्त्वसोपानम्	सं	पू. लब्धिसूरिजी म.सा.	420
067	ઉપદેશમાલા દોઘટ્ટી ટીકા ગુર્જરાનુવાદ	ગુજ.	पू. हेमसागरसूरिजी म.सा.	638
068	मोहराजापराजयम्	सं	पू. चतुरविजयजी म.सा.	192
069	क्रियाकोश	सं/हिं	श्री मोहनलाल बांठिया	428
070	कालिकाचार्यकथासंग्रह	सं/ગુ.	श्री अंबालाल प्रेमचंद	406
071	सामान्यनिरुक्ति चंद्रकला कलाविलास टीका	सं.	श्री वामाचरण भट्टाचार्य	308
072	जन्मसमुद्रजातक	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	128
073	मेघमहोदय वर्षप्रबोध	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	532
074	જૈન સામુદ્રિકનાં પાંચ ગ્રંથો	ગુજ.	श्री हिम्मतराम महाशंकर जानी	376

075	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	374
076	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	238
077	સંગીત નાટ્ય રૂપાવલી	ગુજ.	**श्री विद्या साराभाई नवाब**	194
078	ભારતનાં જૈન તીર્થો અને તેનું શિલ્પસ્થાપત્ય	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	192
079	શિલ્પ ચિન્તામણિ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री मनसुखलाल भुदरमल**	254
080	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
081	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	238
082	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૩	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
083	આયુર્વેદના અનુભૂત પ્રયોગો ભાગ-૧	ગુજ.	**पू. कान्तिसागरजी**	114
084	કલ્યાણ કારક	ગુજ.	**श्री वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री**	910
085	**विश्वलोचन कोश**	**सं./हिं**	**श्री नंदलाल शर्मा**	436
086	કથા રત્ન કોશ ભાગ-1	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	336
087	કથા રત્ન કોશ ભાગ-2	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	230
088	હસ્તસઞ્જીવનમ્	સં.	**पू. मेघविजयजीगणि**	322
089	એન્દ્રયતુર્વિંશતિકા	સં.	**पू.यशोविजयजी, पू. पुण्यविजयजी**	114
090	સમ્મતિ તર્ક મહાર્ણવાવતારિકા	સં.	**आचार्य श्री विजयदर्शनसूरिजी**	560

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६७ (ई. 2011) सेट नं.-३

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.jainelibrary.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टीकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
91	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-१	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	272
92	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-२	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	240
93	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-३	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	254
94	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-४	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	282
95	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-५	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	118
96	पवित्र कल्पसूत्र	पुण्यविजयजी	सं./अं	साराभाई नवाब	466
97	समराङ्गण सूत्रधार भाग-१	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	342
98	समराङ्गण सूत्रधार भाग-२	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	362
99	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरिजी	सं.	वेंकटेश प्रेस	134
100	गाथासहस्त्री	समयसुंदरजी	सं.	सुखलालजी	70
101	भारतीय प्राचीन लिपीमाला	गौरीशंकर ओझा	हिन्दी	मुन्शीराम मनोहरराम	316
102	शब्दरत्नाकर	साधुसुन्दरजी	सं.	हरगोविन्ददास बेचरदास	224
103	सुबोधवाणी प्रकाश	न्यायविजयजी	सं./गु	हेमचंद्राचार्य जैन सभा	612
104	लघु प्रबंध संग्रह	जयंत पी. ठाकर	सं.	ओरीएन्ट इन्स्टीट्युट बरोडा	307
105	जैन स्तोत्र संचय-१-२-३	माणिक्यसागरसूरिजी	सं,	आगमोद्धारक सभा	250
106	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-१,२,३	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	514
107	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-४,५	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	454
108	न्यायसार – न्यायतात्पर्यदीपिका	सतिषचंद्र विद्याभूषण	सं.	एसियाटीक सोसायटी	354
109	जैन लेख संग्रह भाग-१	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	337
110	जैन लेख संग्रह भाग-२	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	354
111	जैन लेख संग्रह भाग-३	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	372
112	जैन धातु प्रतिमा लेख भाग-१	कांतिविजयजी	सं./हि	जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार	142
113	जैन प्रतिमा लेख संग्रह	दौलतसिंह लोढा	सं./हि	अरविन्द धामणिया	336
114	राधनपुर प्रतिमा लेख संदोह	विशालविजयजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	364
115	प्राचिन लेख संग्रह-१	विजयधर्मसूरिजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	218
116	बीकानेर जैन लेख संग्रह	अगरचंद नाहटा	सं./हि	नाहटा ब्रधर्स	656
117	प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग-१	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	122
118	प्राचिन जैन लेख संग्रह भाग-२	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	764
119	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-१	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
120	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-२	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
121	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-३	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	540
122	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-१	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	274
123	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-४	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	414
124	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-५	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	400
125	कलेक्शन ऑफ प्राकृत एन्ड संस्कृत इन्स्क्रीप्शन्स	पी. पीटरसन	अं.	भावनगर आर्चीऑलॉजीकल डिपा.	320
126	विजयदेव माहात्म्यम्	जिनविजयजी	सं.	जैन सत्य संशोधक	148

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६८ (ई. 2012) सेट नं.-४

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.jainelibrary.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	भाषा	प्रकाशक	पृष्ठ
127	महाप्रभाविक नवस्मरण	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	754
128	जैन चित्र कल्पलता	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	84
129	जैन धर्मनो प्राचीन इतिहास भाग-२	हीरालाल हंसराज	गुज.	हीरालाल हंसराज	194
130	ओपरेशन इन सर्च ओफ सं. मेन्यु. भाग-६	पी. पीटरसन	अंग्रेजी	एशियाटीक सोसायटी	171
131	जैन गणित विचार	कुंवरजी आणंदजी	गुज.	जैन धर्म प्रसारक सभा	90
132	दैवज्ञ कामधेनु (प्राचिन ज्योतिष ग्रंथ)	शील खंड	सं.	ब्रज. बी. दास बनारस	310
133	करण प्रकाश	ब्रह्मदेव	सं./अं.	सुधाकर द्विवेदि	276
134	न्यायविशारद महो. यशोविजयजी स्वहस्तलिखित कृति संग्रह	यशोदेवसूरिजी	गुज.	यशोभारती प्रकाशन	69
135	भौगोलिक कोश-१	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	100
136	भौगोलिक कोश-२	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	136
137	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	266
138	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	244
139	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	274
140	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	168
141	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	282
142	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	182
143	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-१	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	384
144	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-२	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	376
145	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-३	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	387
146	भास्वति	शतानंद मारछता	सं./हि	एच.बी. गुप्ता एन्ड सन्स बनारस	174
147	जैन सिद्धांत कौमुदी (अर्धमागधी व्याकरण)	रत्नचंद्र स्वामी	प्रा./सं.	भैरोदान सेठीया	320
148	मंत्रराज गुणकल्प महोदधि	जयदयाल शर्मा	हिन्दी	जयदयाल शर्मा	286
149	फक्कीका रत्नमंजूषा-१, २	कनकलाल ठाकूर	सं.	हरिकृष्ण निबंध	272
150	अनुभूत सिद्ध विशायंत्र (छ कल्प संग्रह)	मेघविजयजी	सं./गुज	महावीर ग्रंथमाळा	142
151	सारावलि	कल्याण वर्धन	सं.	पांडुरंग जीवाजी	260
152	ज्योतिष सिद्धांत संग्रह	विश्वेश्वरप्रसाद द्विवेदी	सं.	ब्रीजभूषणदास बनारस	232
153	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्रम्	रामव्यास पान्डेय	सं.	जैन सिद्धांत भवन	160
	नूतन संकलन				
१	आ. चंद्रसागरसूरिजी ज्ञानभंडार – उज्जैन	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	
२	श्री गुजराती श्वे.मू. जैन संघ-हस्तप्रत भंडार – कलकत्ता	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	

अर्हं श्रीमहावीर ग्रन्थमाला

सप्तम पुष्पं ७

महामहोपाध्याय श्रीमेघविजयजी गणि

विरचित

अनुभूत सिद्धबिशा यंत्र आदि छे कल्पका संग्रह

भाषांतर सहित.

प्रकाशकः—श्रीमहावीर ग्रंथमाला के मानदमंत्री

एस्. के. कोटेचा, धुलीया.

(आग्रारोड) प. खानदेश.

मुद्रकः—रामचंद्र गोविंद पावसकर

मालिक, श्रीराम इलेक्ट्रिक छापखाना धुलीया.

सर्वोधिकाराः स्वाधिनाः

वीर संवत् २४६३ विक्रमाद्ब १९९३

मुल्य पंचरुप्यकम्.

Aho ! Shrutgyanam

अनुक्रमणिका.

१	सिद्धबीसा....	१ से १०१ तक.
२	परिशिष्ट नं. १ यंत्र	१०२ से १२० तक.
३	गाहाजुअल टीका	१२१ से १२६ तक.
४	गाहाजुअल आम्नाय	१२६ से १२७ तक.
५	उग्रवीर	१२८ से १२९ तक.
६	दादासाहेबका बावन तोला पावरत्ति	१२९ से १३१ तक.
७	जगत् शेटजीका चंद्रकल्प....	१३१

Aho ! Shrutgyanam

अर्हं श्रीमहावीर ग्रन्थमाला

सप्तम पुष्पं ७

महामहोपाध्याय श्रीमेघविजयजी गणि

विरचित

अनुभूत सिद्धविशा यंत्र आदि छे कल्पका संग्रह

भाषांतर सहित.

प्रकाशकः—श्रीमहावीर ग्रंथमाला के मानदमंत्री

एस्. के. कोटेचा, धुलीया.

(आग्रारोड) प. खानदेश.

मुद्रकः—रामचंद्र गोविंद पावसकर

मालिक, **श्रीराम** इलेक्ट्रिक छापखाना धुलीया.

सर्वेधिकाराः स्वाधिनाः

वीर संवत् २४६३ विक्रमाद्ब १९९३

मुल्य पंचरूप्यकम्.

Aho ! Shrutgyanam

मुनिरत्न श्रीमंगलसागरजीका अभिप्राय.

श्रीमहावीर ग्रंथमाला-एस्. के. कोटेचा

धुलीया, ता. १।६।३७

धर्मलाभ के साथ विदीत होकी मेरे जीवनमे आपके ग्रंथमालाकी विचित्र वस्तुएं एसी कही देखनेमे न आई. आपका सिद्ध बिशा आदि कल्पका निरीक्षण किया सिद्ध बिशा कल्प जो देवी पद्मावतीने महामहोपाध्याय श्रीमेघविजयजी गणिको स्वप्नमे बताया।था वह बिशा यंत्र देखनेसेही बनता है यहबात आपके ग्रंथ परसेही साबित होती है.

गाहाजुअल स्तुति सोपज्ञ आम्नाय यह बहुत अलौकीक है. ईसे जो कोइ शौकीन ईसके अनुसार क्रिया करेगा. व दरिद्रता रुप दावानलमे कभी न जलेगा । आपके पासकी जो मुलप्रती है जिसके टीकाकार जिनप्रभसूरि है वह बहुतही अपूर्व है.

श्रीजिनदत्तसूरिश्वरजीका बनाया हुवा बावन तोला पावरती कल्प नाम जैसा गुण है.

चंद्रकल्पः—जो जगत सेटजीने स्वयं अनुभव किया है. तब इस कल्पका क्या लिखना.

उग्रवीरः—यहकल्प हमने वर्णन सुणाथा । परंतु नजरसे देखनेमे नही आयाथा । आजही यह कल्प देखा है. यह बहोतही उत्तम है । विशेशमे बिशा यंत्रके साथमे आपने ४५२ यंत्राकृती दिया इससे सोनेमे सुगंध जैसा हुवा है. बहुत क्या लिखना.

खरतरगच्छीय उपाध्यायजी श्रीसुखसागरजी महाराजके
शिष्य मुनि मंगलसागरजी.

नोटः-हमारे ग्रंथमालाकी प्रत्येक पुस्तक पुराणे पुस्तकोंके आधारसे अक्षरशा नकल करके छपाई जाती है. अगर पाठकोंको भाषामें गलती मालुम होतो सुधारकर ओर बिचार करके पढे कारण भाषा पुराणी होनेसे भाषाका गौरव नष्ट न हो जाय इसलिये भाषामे परिवर्तन नही किया जैसाथा वैसाही छपाया गया है. छपानेका कार्य हमारा है और पढनेका का कार्य पाठकोका है.

Aho ! Shrutgyanam

प्रस्तावना.

प्रिय विज्ञ पाठक वृन्द.:—

लिखते हुये मुझे अत्यानन्द होता है कीं, श्री. महाबीर ग्रंथमालाके यह अंक सजधजके साथ लुप्त प्राय: विद्याओंका और औषधियोंका बडीही खोजके और परिश्रमके साथ पुन: प्रचार किया जा रहा है.

यद्यपि इस बीसमींशदीमें अधिकांश महानुभावोंका इतना विश्वास इन विद्याओंपर नहीं रहा है और वे इस विषयमें अनेक प्रकारकी शंकाएँ किया करते है लेकिन इस साम्प्रतिक कालमेंभी यह विद्याएँ पहिले जितनीही सिद्ध और कार्यकारिणी हो सकती है बशर्तेकि यथाविधी दृढ विश्वासपूर्वक इनकी साधना की जावे। क्योंकि " विश्वासों फलदायकः " इस न्यायानुसार विश्वासहीसे फलकी सिद्धि होती हैं. उपेक्षा करना ठीक नहीं हो सकता । अत इस विषयमें अब जादा न लिखकर आपके समक्ष जो लिखनेंका है वही लिखा जा रहा है.।

सिद्धबिसाकल्पः—यह कल्प वही है कीं, जो श्रीपद्मावती देवीने महामहोपाध्या श्रीमेघविजयजी गणिको स्वप्नमें बताया था.

देव्यापद्मावत्या स्वप्नकथित यंत्रस्याप्राहुबाहुबल्याद्याः मुनयाः नयकोविदाः

उसीको हमने ४'५० यंत्र प्रति कृती ओर करीबन ३५०० श्लोक मूल भाषांतरके साथ पाठकोंके सामने उपस्थित किया है उसके अंदर **'अर्हं'** शब्दसे बिसा किस तरह बनता हैं वह बडीही सरल युक्ति योंसें समजाया गया है. इस ग्रंथको देखकर पाठकोंकी यह शंका विनष्ट होती है की बिसा यंत्र नव कोठेमें भी बनता है. इस ग्रंथमे तिखुणा चोखुणा पद्माकार पचासोंही प्रकारके बिसा सिद्ध करके दिखला दिया है. लौकीक कहावत है कीं, **" जिसके घर बिशा । उसका क्या करेगा जगदीशा ॥** यह ग्रंथ बहोत उपादेय वा संग्राहणीय है. यह यंत्र राजदरबारमें विजय दिलाता है, वसीकरणमें इसका सानि दुसरा नहीं रखता. व्यापारमें लाभ दिलानेमें इसके ढंगका यह एकही है, आरोग्यादी प्राप्तिमें अपने जोडका दुसरा नहीं रखता. बंदीखानेसे छुटकारा दिलानेमे यह अद्वितीय है, ओर दुखीयोंका दुखको यह बीसा क्षणभरमें कापुर कर देता है. इत्यादि—

नोट—आजकल दुनियामे यंत्रोकी हरिफाई बहुतसी चलती है. परंतु हमारे भाईयोंको उसीका कुछ भी लाभ नहीं मिल सकता है. इस लिये उनसे हमारा निवेदन है कीं इस ग्रंथको संग्रह करे. ताकी इस ग्रंथके आधारसे कोईभी यंत्रकी हरिफाई करनेमें ठीक पडेगा. यह ग्रंथ यंत्रोकी हरिफाईमे रामबाण है. (मेघविजयजी के हस्तलिखित ग्रंथोकी यादी ओर उनके समयका वर्णन अर्हद् गीताग्रंथके प्रस्तावनामें देख लेवें.)

गाहाजुअल स्तुतिः —कर्ता अंचलगच्छीय श्रीपादलिप्तसूरीश्वरजी टीकाकार पूण्यसागर वाचकने किया है. दुसरी सोपज्ञआम्नाय सहित है आम्नाय बहुत सरल है. ईसमें बहुतसी

Aho ! Shrutgyanam

आलौकीक हेमसिद्धि आदि गुप्तविद्याएं है जो थोडासा श्रम करनेपर सिद्ध हो सकती है. सं. १३८० में जिनप्रभसूरिने अपने हातोसे टीका रची है ओर लिखी है वहभी समयपर छपाया जायगा पुस्तकोंकी प्रेस कॉपी तयार हो रही है.

बावन तोला पावरती—यह कल्प उन्ही महात्माका बनाया हुवा है की जिनोंने सवालाख अजैनकों जैन बनाया था उन्ही महात्माका यहकल्प पांठकोंके सामने रखा जाता है. वही श्रीदादाजी जिनदत्तसूरीश्वरजी महाराज जो दुनीयामे धर्मार्थ काम और मोक्षके आले-दरजेके डॉक्टर या वैद कहे जाते है.

धर्मके लिये बडे बडे ग्रंथ निर्माण करगये है उदाहरणार्थ [उपदेशरसायन, कलिकोश, चरचरी इत्याहि.] दुनीयामें ३५ महान बिमारी या [देहरोग] ३६ मी दरिद्रावस्था और ३७ मी मौत [कर्मरोग] है. इसकल्पकेद्वारा ३५ महानबिमारी [देहरोग] और ३६ मी दरीद्रा-वस्था नस्ट होती है. और मौत (कमरोग) के लिये उपदेश रसायन आदि ग्रंथ मोजुद है.

पाठकस्वयं—इसकल्पको परीक्षा करदेख सकते है. उस महात्माका निर्वाण वि. संवत १०११ मे अजमेरमें हुवा है इससे समयका निर्णय की कल्पना हो सकती है.

उग्रवीर कल्प—यहएक महात्माका अनुभूत किया हुवा कल्प है. इसके विषयमें अधिक तारीफ करना व्यर्थ होगी. जबकि इसकी महत्ता इसके नामसेही प्रकट होती है। इसकी साधनासे अनेकों प्रकारकी बाधाएँ और दरिद्रिता देखतेही देखते नष्ट हो जाती है साधना बहुतही सरल है। षट प्रयोगोमे चलता है.

चंद्रकल्प—श्रीमान् जगतशेठजीका सिद्ध किया हुवा। यह चंद्रकल्प बडीही खोज और परिश्रमसे जगतशेठकी उनपुस्तकोंसे प्राप्त हुवा है. जिनका कि वे हमेशा अध्ययन किया करतेथे।

इसकी दढ विश्वासपूर्वक यथाविधी साधना करनेसे ६ महिनेमें चन्दका साक्षातकार होता है यह लिखना कोई गलतफहमी नही होगी कि जगतशेठने इसकी साधनासेही अतुल यश प्राप्त किया था।

हम अपने उत्तर दायित्व पूर्ण कृतकार्यमें कहांतक सफल हुवे है इसका निर्णय विज्ञ पाठकोंपर ही निर्भर हैं।

प्रेसके भूतोंकी कृपासे यदि कहीं शुद्धाशुद्धीका नियम भंग हुवा हो तो विज्ञ उसे सुधारकर पढें।

यह सिद्ध बिसाकल्प आदि ६ कल्प समाजमें नई लहर पैदा करही देगी.

यदि पाठकोने इसे अपनाया तो फीरसे मै दुसरा ग्रंथ लेकर उपस्थित होउगा एसी आशा है।

निवेदन,

एस्. के कोटेचा.

मु० धुलीया, (जि. प. खानदेश.)

Aho ! Shrutgyanam

॥ श्रीरावण पार्श्वनाथस्तवम् पाठः ॥

श्रीपार्श्वः प्रकटः प्रभाकर इव प्राज्यप्रभावैभवा–
तेजोनन्ततया जगत्त्रयमपिप्रोद्भासयनंजसा ॥
श्रीमद्रावणनामतीर्थविषये ख्यातस्तमोनाशकः ।
स्तुत्यादर्शन निर्मलश्रियमयं पुष्णातु मे नित्यशः ॥ १ ॥

अर्थः–विशाळ प्रभावना वैभवथी अनन्त तेजवडे त्रणे जगतने पण शीघ्र उद्भासन करता (प्रगट करता) अेवा, तथा श्रीमद्रावण नामना तीर्थना विषयमां (संबंधमां अथवा ते क्षेत्रथी) प्रसिद्ध थयेला, तथा स्तुतिवडे अज्ञान-रुपी अंधकारनो नाश करनारा अेवा प्रगट सूर्यसरखा श्री पार्श्वनाथ प्रभु (अेटले श्रीरावण पार्श्वनाथ), ते हमेशा मारी सम्यक्त्वरुपी निर्मळ लक्ष्मीने पुष्ट करो [वृद्धि पमाडो] ॥ १ ॥

श्रीमद्श्रावणमासवत् त्रिजगतीसन्तापविच्छित्तये ।
प्रोन्नीताम्बुदगर्भ (वत्स्व) देहविमलज्योतिर्जलैर्विस्तृतैः ॥
यो वै रावण मेघवत्सितरुचिश्चिन्तामणी वाग्रणी ।
लोकालोक नमो ददान विधिना जागर्तिमूर्त्याविधुः ॥ २ ॥

अर्थः–आकाशमां चढेला मेघना गर्भ सरखा पोताना शरीरनी विस्तार पामेली निर्मल कांति वडे [अर्थात् मेघ सरखी कृष्ण कान्ति वडे] श्रीमद् (मेघ जळनी लक्ष्मी वाला) श्रावण मास सरखा जे पार्श्वप्रभु त्रण जगतना संतापने नाश करनारा छे, तथा जे प्रभु वैरावण मेघसरखी कृष्ण कान्तिवाला छे, अथवा जे प्रभु मुख्य चिंतामणी रत्न सरखा छे, तथा लोकना [लोकालोकना] आलोकनथी [ज्ञानथी] हर्ष आपवा वडे मूर्तिमान् [साक्षात्] चन्द्र सरखा जागृत छे–प्रगट छे [संबंध अग्रे] ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

यस्यश्रावणगोचरेपि विचरन्नामापिनिर्मापितः ।
त्रैलोक्याद्भुतवैभवान्भवभृतां प्रोद्भावयेद्भावतः ॥
स श्रीरावणनामधेय भगवान् पार्श्वः सदा सम्पदे ।
भूयाद्मंगलमालिकाकमलिनी प्रोल्लासभानूदयः ॥ ३ ॥

अर्थः—तथा जे प्रभुनुं नाम पण श्रावणना विषयमां वर्तुं निर्माण थयेलुं छे. [श्र् रहित करतां रावण पार्श्वनाथ नाम थयेलु छे], तथा त्रणे लोकना अद्भुत वैभवथी प्राणीओने भावथी जे प्रभु ज्ञानादि वडे प्रगट करनारा [अर्थात् जीवोनी ज्ञानादिलक्ष्मीनो वैभव प्रगट करनारा] छे, ते मंगलीकनी माळा [मंगळना समुह] रुपी कमलिनीने विकश्वर [प्रगट] करवामां सूर्योदय सरखा श्रीरावण पार्श्वनाथ नामना प्रभु हंमेशां संपदानेमाटे थाओ ॥ ३ ॥

स्पष्टश्चाष्टम एव यः प्रतिहरि र्नाम्नातिधाम्नाहरिः ।
पूर्वंरावण एष ते चलनयोः भक्ति प्रसक्तोभवत् ॥
ते न त्वत् प्रतिमासमान महिमा कैलाशशैलाशयात् ।
निन्येऽर्चारचनैः स्तवादि वचनैः स्वीयं पुरं पावितुम् ॥ ४ ॥

अर्थः—स्पष्ट (प्रगट थयेला) एवो जे आठमोज प्रतिवासुदेव केजे पोतना नाम वडे अने अत्यंत तेज वडे हरि=इन्द्र सरखोथयो ते रावण प्रति वासुदेवज प्रथम तारा बे चरण कमळनी भक्तीमां अत्यंत लीन थयो, अने ते रावणेज तारी समान महिमावाळी [उत्तम महिमावाळी] प्रतिमा कैलाशपर्वतना स्थान उपरथी (अष्टापद पर्वत उपरथी) पुजा रचवा पुर्वक अने स्तुति विगरेनां वचनो सहीत (अर्थात् पुजा स्तुती करीने) पोतानुं नगर पवित्र करवाने माटे लइ गयो [अर्थात रावण पोताना नगरमां श्रीपार्श्व प्रभुनी प्रतिमा लाव्यो]॥४॥

जानेतज्जनकात्मजाव्यतिकर प्रोद्भुयमानानया··
न्मत्वा त्वं ननुभङ्गमेवभगवन्नैतस्थले तस्थिवान् ॥
सेवार्थं भुविरावणाख्यनगरं तत्तेन संवासितम् ।
पार्श्वे चेन्द्रपथं सुतेन विहितं तेनेन्द्रजिच्छर्मणा ॥ ५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः—जाणे ते सीताना वृत्तान्तथी प्रगट थयेला अन्यायथी हे भगवन् निश्चय आ नगरनो भंगज थशे एम जाणीने तमो ते स्थळे न रह्या, तेथी तेणे सेवाने माटे पृथ्वीमां रावण नामनुं नगर वसाव्युं, अने तेनी पासे इन्द्रजीत नामना पुत्रे पोताना कर्म वडे (पोतानी इच्छा वडे) इन्द्रप्रस्थ नामनुं नगर वसाव्युं ॥ ५ ॥

तत्तीर्थं प्रथितं पुराणकथितं त्वत्संज्ञयैव प्रभो ॥
लोकाभ्यर्थनयार्थसार्थयुगपद्दानेन देवार्चितम् ॥
श्रीवामेयममेयमेवभवताद्बुद्धिर्भवेत्सेवने ।
यस्याश्चक्रिरमा रसेन परमा वश्याभवेदाभवम् ॥ ६ ॥

अर्थः—तेथी लोकनी प्रार्थना वडे लोकना वांछितार्थना समूहने समकाळे–शीघ्र पूर्ण करवाथी हे प्रभु! देवोने पण पूजनीक एवुं ते नगर तारा नामवडेज तीर्थ रूपे प्रसिद्ध थयुं, अने पुराणमां–शास्त्रमां पण तेनुं वर्णन लखायुं. एवा तीर्थमां रहेला ते श्री वामेय=पार्श्व प्रभु के जे अमेय=अपार महिमा वाळा छे तेमने सेववाथी बुद्धि–ज्ञान लक्ष्मी प्रगट थाय छे, तेमज जे सेवा थी चक्रवर्तिनी पण उत्कृष्ट लक्ष्मी हर्ष सहित संपूर्ण भवपर्यन्त पोताने वशवर्ती थाय छे. ॥ ६ ॥

त्वज्जन्मन्यमृतं जगत्समभवद्दुःखोपशान्तेर्जने ।
सा कल्याणमयी तदामृतरसैः वृष्टिः सुरैर्निमिता ॥
विस्तीर्णं जिनशाशनं तवगिरा यत्रामृतस्थापना ।
लोकेनामृतमस्ति तेनसुलभं देवप्रमादोदयात् ॥ ७ ॥

अर्थः–जे वखते हे प्रभु! तमारो जन्म थयो त्यारे लोकमां दुःखनी शान्ति थवाथी आ जगत अमृत (मरणादि दुःख रहित) थयुं ते वखते देवोए पण कल्याणकारी एवी ते अमृत रसनी वृष्टि करी, तेमज तारूं विस्तीर्ण एवुं जिनशासन के जेमां त्हारी वाणी वडे अमृतनी स्थापना थयेली छे (अर्थात् जिनशासनमां तारी वाणी रूप अमृत सदा विद्यमान छे), तेथी लोकमां हे देव! प्रमादना उदयथी अमृत मळवुं सुलभ नथी. (कारण के अमृत तो सघळुं श्री जीनेन्द्रनी वाणीमांज वसेलुं छे [तो लोकमां बीजे क्या मळे!] ॥ ७ ॥

Aho ! Shrutgyanam

इन्द्रास्त्वज्जनने जिनेन्दुसहसा सर्वेसमीयुर्भुवि ।
वैरस्यापि विहाय सर्वमसुरा वैरस्यमभ्यैयरुः
इन्द्रैराग्निकुमारकासुरगणैः सत्राभवत्सौहृदम् ।
नक्षत्रस्यततोजनेऽजनिकथा देवर्द्धिदैवाख्यया ॥ ८ ॥

अर्थः—हे श्री जिनचंद्र ! त्हारा जन्म वखते सर्वे इन्द्रो आ पृथ्वीप सहसा-शीघ्र आव्या, तेमज पोतानी वैरी देवोनी साथेना वैरनो त्याग करी सर्वे असुरा=असुरन्द्रो पण आव्या. (सुर अने असुरनो वैर लोक प्रसिध्ध तेथी अेम कह्युं.) तेमज [लोक प्रसिद्ध वैरवाळा अेवा] इन्द्रोने अने अ कुमारादि असुर देवोने पण अेक बीजा साथे परस्पर मित्राई थई, ते देवाधिदेवना नामथी लोकमां नक्षत्रनी कथा प्रसिद्ध थई [आ कथा श्र बहुश्रुतथी जाणवी] ॥ ८ ॥

द्रागुविद्रावणमेतिमोहचरट स्तेवीक्षणात्तत्क्षणात् ।
नामश्रावणभावसौख्यकरणं विश्वेशितस्तावकम् ॥
श्रीमद्रावणपार्श्वमेघविजयाज्जोतिर्भवन्मूर्तिजां ।
नित्यानन्दपदं ददातु विशदं शैवं च दैवं शुभम् ॥ ९ ॥

अर्थः—हे प्रभु ! त्हारा दर्शनथी तत्क्षण-शीघ्र मोह रुपी चरट-चोर तु विनाश पामे छे, हे विश्वना ईश ! त्हारुं नाम सांभळवुं (त्हारा नामनुं श्रवण ते) पण भावसुखने (मोक्षसुखने) करनारुं छे. हे श्रीमद् रावणपार्श्व प्रभु मेघना विजयथी उत्पन्न थयेली त्हारी मूर्त्तिनी ज्योतिः [मेघने जितनार त्हारा शरीरनी कान्ति] अथवा श्री मेघविजयजी उपाध्याय जे आ स्तोत्रन कर्ता तेमनाथी स्तुति करायली त्हारा शरीरनी कान्ति] ते निर्मळ, उपद्रव रहित अने शुभदैवरुप अेवुं नित्यानंदपद अेटले मोक्षपद आपो ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीरावणपार्श्वनाथ स्तोत्रम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

श्रीअर्जुनपताकाख्ये, विजयापर नामनि ।
स्यादर्धे ५ भू १ मितेयंत्रम्, मध्ये पंचप्रतिष्टया ॥ १ ॥

अर्थः–जेनुं बीजुं नाम विजययन्त्र छे, अेवा अर्जुनपताका नामना यन्त्रमां [अर्ध=५ अने भू=१, अंकोनां वामतो गतिः अे प्रमाणे] १५ प्रमाणनो अेटले पंदरीयो यन्त्र मध्यखानामां ५ नो अंक स्थापवाथी थाय छे ॥ १ ॥

एवं यत्र त्रिभागाप्ति – र्यन्त्राणि पूर्वसूरिभिः ।
सर्वाणि तानि फलदा – न्युक्तानि नव वेश्मसु ॥ २ ॥

अर्थः–अे प्रमाणे ज्यां पूर्वाचार्योअे त्रीजा भागनी प्राप्तिवाळां यन्त्रो दर्शाव्या छे, ते सर्वे यंत्रो नव गृहमां–खानामां स्थपाय छे, अने ते सर्वे फळदाता कह्या छे[१] ॥ २ ॥

पूर्वनैऋतिकोदीची – वायु मध्याऽग्निदक्षिणः !
ऐशानी पश्चिमा तासु, क्रमादंकनिवेशनम् ॥ ३ ॥

अर्थः–प्रथम पूर्वदिशामां, त्यारबाद नैऋत्यकोणमां उत्तरदिशामां वायव्यकोणमां मध्यमां अग्निकोणमां दक्षिणदिशामां ईशानकोणमां अने पश्चिमदिशामां अेप्रमाणे क्रमपूर्वक कहेली दिशाओमां अनुक्रमे अंकस्थापन करवुं ॥ ३ ॥ आ ९ खानावाळा कोठामां पंदरीयो यन्त्र करवानो छे, तेथी उपर कह्या प्रमाणे पंदरनो त्रीजो भाग ५, तेने प्रथम मध्य खानामां स्थापवो. त्यारबाद अे ५ जतां वधेला दशमांथी अेक अंक न्यून करीने त्यारबाद अेकेक न्यून न्यून अंक त्रीजा श्लोकमां कहेला अनुक्रम प्रमाणे स्थापतां पूर्वखानामां ९, नैऋत्य खानामां ८, उत्तर

१ दो अट्ठहिं न दीजइ दीजइ छक्केण तह चउक्केण । सत्तमितइएवत्ता नव पंचेकेणआगमणं॥ =५ जे मध्यमां स्थापेल छे तेनी साथे २–८ स्थापतां ६–४ स्थापतां ७–३ स्थापतां, अने ९–१ स्थापतां पंदरीयो यंत्र थाय छे. उपरनो पंदरीयो यंत्र अे प्रमाणेज बन्यो छे ते अनुक्रमे इशान नैऋत्य २–८, वायु अग्नि ६–४, उत्तर दक्षिण ७–३, पूर्व पश्चिम ९–१ अे क्रमथी मध्यगत ५ पूर्वकज बन्यो छे.

Aho ! Shrutgyanam

ईशान पूर्व अग्नि.

	२	९	४	
उ.	७	मध्य५	३	द.
	६	१	८	

वायु पश्चिम नैऋत्.

१५ यन्त्रमिदम्

र	चं	मं
बु	बृ	शु
श	रा	के

४	९	२
३	५	७
८	१	६

वैश्ये मध्यमगति
विजययंत्रं

खानामां ७, वायव्य खानामां ६ मध्य खानामां ५ (नो अंक तो प्रथमथी स्थापेलोज छे), अग्नि खानामां ४, दक्षिणखानामां ३, इशान खानामां २, अने पश्चिम खानामां १, पुनः दिशिना फेरद्वारथी [जे खानामां जे अंक आ यंत्रमां आवेल छे ते प्रमाणे नहिं आवतां बीजी बीजी रीते] पण पंदरीया यंत्र अनेक बने छे. जेम के–उपरना यंत्रमां पूर्वदिशिने उध्ध्वं स्थापी छे, तेने बदले जमणी बाजूमां स्थापीअे तो बीजी रीते पण पंदरीयो यन्त्र थाय ते आ प्रमाणे–

वा. उ. इ.

	६	७	२	
प.	१	५	९	पू.
	८	३	४	

नै. द. अ.

अे रीते दिशिस्थापनना फेरफारथी जेम आ बीजो पंदरीयो यंत्र बने तेवी रीते मध्यखानुं वर्जीने शेष ८ खानामां ९ ना अंकने फेरवतां आठ प्रकारना पंदरीया यंत्र बनी शके छे, परन्तु मध्यखानामां नवनो अंक राखीने पंदरीयो यंत्र बनी शके नहिं.

क्रमाङ्कोल्लंघनेऽपाच्या – मेकेऽधिके धृते भवेत् ।
रस ६ भू १ यंत्रानिष्पत्तिः, एवमेकोनविंशतिः ॥ ४ ॥

अर्थः–पंदरीयामां जे अनुक्रमे अंक स्थाप्या छे तेनुं उल्लंघन [ते कामनुं उल्लंघन] करीने जो दक्षिणदिशाथी प्रारंभीने तेज क्रमथी अेकेक अंक अधिक स्थापता जईअे तो (रस = ६ भू = १) रसभू अेटले * १६ ना

Aho ! Shrutgyanam

यंत्रनी उत्पत्ति थाय छे, अने अेज प्रमाणे[१] १९ नो यंत्र पण बने छे. ॥४॥

वायावेकेधिकेतद्वत्, मुनिभू १७ यंत्र निर्मितिः ।
एवंद्वयेधिके विंश -- त्यादि यंत्रं प्रसाध्यते ॥ ५ ॥

अर्थः-तेनी पेठे [१६ ना यंत्रनी पेठे] वायुकोणमां [वायु- मध्य- अग्निमां] १ अधिक कर्याथी [मुनि ७ भू १ अेटले] १७[२] ना अंकनो यंत्र थाय छे, अने अे प्रमाणे बे अधिक [तथा अेक] कर्याथी २० विगेरेनो यंत्रो बने छे ॥ ५ ॥

दश१० द्य२ ष्ट८ चतु४ सप्त७ -- नव९ षड्वे६ षवः५* शिवाः११ ।
त्रयंचेत्यंक राजीस्यात्, साकस्माद्विंशयंत्रके ॥ ६ ॥

अर्थः-१०-२-८-४-७-९-६*-५-११ अे अंकश्रेणि जे २०[१] ना यंत्रमां आवे छे ते शा माटे ? -इति प्रश्नः- ॥ ६ ॥

तत्रोत्तरं नवस्थान्यां, शकुनार्थग्रहस्थितौ ।
भानुर्दशशतार्चिष्मान्, आदावुच्चोदिगं १० शतः ॥ ७ ॥

---

* इ.

३	९	४
७	५	४
६	२	८

द. प.

१६ यन्त्रम्

३	९	५
७	६	४
७	२	८

१७ यन्त्रम्

१ २ अे प्रमाणे दक्षिण पश्चिम इशानमां अेकेक अंक अधिक करवाथी १६ नो यंत्र थयो. अेमां वायुथी आग्नि कोणनी श्रेणिमां १६ थता नथी, तेमज४नो अंक बे वार आव्यो तेनो विरोध विचारवो नहिं. पुनः अेज१६ ना यंत्रमां वायुकोणथी वायु-मध्य अग्नि अे त्रणस्थाने अेकेक अंक वधारतां १७ नो यंत्र अे प्रमाणे थयो. १९-२० नो यंत्र आगळ कहेवाशे.

* ३ नो अंक पण आवे छे.

१ २० नो यंत्र—
अहिं यंत्रमां ५-६ अंक छे तेनुं कारण आगळ कहेवाशे.

१० र.	२ सो.	८ मं.
४ बु.	७ गु.	९ शु.
५-६ श.	११ रा.	३ के.

२०

५ ६	४	१०
११	७	२
३	९	८

२०

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः–उत्तर–अे प्रश्ननो उत्तर आ प्रमाणे छे के–ग्रहस्थानोमां रहेला अर्थात् नव स्थानोमां रहेला नव ग्रहो उपरथी शकुन (शुभाशुभफळ) देखवाने अर्थे–जाणवाने अर्थे नव स्थानोमां अे नव अंक स्थपाय छे. त्यां प्रथम १० नो अंक स्थापवानुं कारणके–सूर्यग्रह हजार किरणवाळो छे, अने पहेली राशिमां [मेष राशिमां] दिग्=१० अंश जेटलो होय त्यांसुधी अति उच्च गणाय छे, माटे ९ खानावाळा यंत्रमां प्रथम १० नो अंक स्थपाय छे. ॥ ७ ॥

उत्तरायणतः पूर्वो -- त्तरयोरंतरेस्थितः ।
श्रेष्टोदिगर्क योगोस्मात्, एकोने नवमोपिच ॥ ८ ॥

अर्थः–वळी ते सूर्य उत्तरायणथी (उत्तरायणमां वर्ततो होय त्यारे) पूर्व अने उत्तर दिशाना आंतरामां (इशानकोणमां) रहेलो [उगतो] होय छे तेथी (दिग्=१० अर्क=सूर्य अेटले) सूर्यनो १० अंशवाळो योग श्रेष्ठ कह्यो छे, अने तेथी १० नो अंक ईशान कोणमां स्थपाय छे. अने तेमांथी १ न्यून करतां नवमो सूर्ययोग पण श्रेष्ठ गण्यो छे ॥ ८ ॥

चंद्रःप्राच्यां वृषेप्युच्चौ, द्विकेवारो द्वितीयेकः ।
अंशेऽत्युच्चः कृष्णपक्ष -- हान्या चैकोन भावतः ॥ ९ ॥

अर्थः–चंद्र पूर्व दिशामां उदय पामे छे, अने बीजी वृषभराशिमां ते अति उच्च गणाय छे, ते त्रण अंश सुधी अति उच्च गणाय छे, जेथी बे अंशमां वर्ततो पण उच्च गणाय, तेमज चंद्रनो वार (सोमवार) पण सूर्यवारथी [रवीवारथी] बीजो छे, पुनः त्रण अंशनी उच्चतामांथी अहिं बे अंशनी उच्चतागणी ते कृष्णपक्षमां हानि पामवाथी अहिं अंशमां पण अेकनी न्यूनता गणीने बे अंशनो उच्च गण्यो, जेथी दशना अंक पछी बीजो २ नो अंक स्थापवो. ॥ ९ ॥

अंगारकस्तथाग्नेय्यां, नवार्चिष्मान् स चक्ररुक् ।
तदेकोनेस्थितोऽष्टांके, दशातोऽस्याष्टवार्षिका ॥ १० ॥

अर्थः–अंगारक=मंगल ग्रह अग्निकोणमां रहे छे, अने नव आर्चि [नव

Aho ! Shrutgyanam

जीव्हा] वाळो तथा मुखरोग वाळो गणाय छे, अथवा वक्री होय त्यारे रोग फळने आपनारो छे, ते नवमांथी अेक न्यून करतां ८ अंकमां रहेलो गणाय, अने ते कारणथी अे मंगळनी दशा पण ८ वर्षनी छे. ॥ १० ॥

पतिरष्टमराशेश्च, सिद्धैकोनांक ९ पादवान् ।
आगामिराशिफलदो, भवेदष्ट दिनांतरे ॥ ११ ॥

अर्थः—वळी अे मंगळ ग्रह आठमी राशिनो (वृश्चिक राशिनो) पति छे, तेथी (अेक न्यून अंक अेटले) ८ पादवाळो सिध्धिने अर्थे छे, तेमज ८ दिवसने आंतरे (८ दिवस बाद) आगामी राशिनुं (वृश्चिक राशि पछी आवती धनराशिनुं) फळ आपवा वाळो छे. [माटे वीसना यंत्रमां बे पछी ८ नो अंक स्थपाय छे. ॥ ११ ॥

पंचार्चिष्मान् बुधोवक्र – भावादेकोनतः कृते ।
दशासप्तदशाद्बास्याऽ – र्कभागे शेषमाशुगाः ॥ १२ ॥

अर्थः—पांच आर्चिवाळो [पांच जीभवाळो] छे, अने ते वक्रभाव वाळो [वक्री] होवाथी ४ प्राप्त थया. वळी अेनी १७ वर्षनी दशा छे, तेने [अर्क-वडे=] बार वडे भागतां शेष [आशुग—बाण अेटले] पांच रह्या. ॥१२॥

तत्राप्येकोनतायां स्यात्, द्विगुणंश्चन्द्रतो बुधः ।
अष्टस्थानाक्षरास्याद्गीः – पतिस्तस्या वृहस्पतिः ॥ १३ ॥

अर्थः—ते पांचमांथी पण अेक न्यून करतां ४ रह्या, जेथी चंद्रथी बुध द्विगुण थयो. [कारणके पूर्वे चंद्रमाटे २ नो अंक छे अने अहिं बुध माटे ४ नो अंक थयो तेथी द्विगुणथयो], माटे विंशातियंत्रमां ४ नो अंक स्थपाय छे तथा गीः=वाणी—सरस्वती आठ स्थानना अक्षरवाळी (कंठ्य-स्थानादि आठ स्थानथी अक्षरोच्चार गण्या छे माटे आठ स्थान वाळी) कही छे, अने ते गी [=वाणी पति गिष्पति=बृहस्पति छे.] ॥ १३ ॥

अष्टबुद्धेर्गुणस्तद्वान्, सप्तांगे मध्यगो गुरुः ।
वक्रत्वादेकहीनत्वे, सिद्धछायाप्रसप्तपात् ॥ १४ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः–बुद्धिना ८ गुण वाळो गुरु छे, परंतु वक्रपणाथी [गुरुवक्री होवाथी] अेक न्यून करतां ७ रह्या, ते सात अंशमां वर्ततो गुरु मध्यम गणाय छे, [अर्थात् गुरु कर्कराशिनो ५ अंश सुधी वर्ततो होय त्यारे अति उच्च गणाय छे, अने ते उपरान्त छ सात आदि अंशमां वर्ततो मध्यम गणाय छे], तेमज सिद्ध छायावडे प्राप्त थयेला ७ ना अंकथी गुरुस्वामी विंशतियंत्रमां कह्यो छे ॥ १४ ॥

दशास्यैकोनविंशाब्दाऽ – र्के १२ भागेशेषसप्तकात् ।
वागिन्द्रियंसप्तमंत-त्स्वामी सप्तांकवान् गुरुः ॥ १५ ॥

अर्थः–वळी अे गुरुनी दशा १९ वर्षनी छे, तेने अर्क-सूर्य अेटले बार वडे भागतां शेष ७ रहेवाथी, तेमज वचनेन्द्रिय [१० कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रियमां] वचनेन्द्रिय सातमो छे, तेनो स्वामी गुरु छे, माटे गुरु विंशतियंत्रमां ७ ना अंकवाळो छे. ॥ १५ ॥

अश्विन्यांदशमंपैत्रं, तज्जातत्वात्कवेर्दश ।
नववक्रैकहीनत्वे, नवाहं पश्चिमास्ततः ॥ १६ ॥

अर्थः–अश्विनी नक्षत्रथी दशमुं पैत्र [मघा] नक्षत्र छे, ते दशमा पैत्र नक्षत्रमां जन्म थवाथी अने वक्रीहोवाथी अेक अंक न्यून करतां शुक्रनो विंशतियंत्रमां ९ नो अंक छे. तेमज पश्चिम दिशामां नव दिवस वर्ततो होवाथी नव अंक शुक्रना स्थापना करेला छे ॥ १६ ॥

दशैकविंशत्यब्दा – स्यादर्कोने नवशेषतः ।
सिद्धसार्धाष्टपादेषु, राशिमध्यफलावम् ॥ १७ ॥

अर्थः–तथा शुक्रनी दशा अेकवीस वर्षनी छे, तेने सूर्यना बार अंकवडे बाद करता (अथवा भागतां) ९ शेष रहेवाथी, तथा पोतानी राशिमां ८॥ पादोमां वर्ततो शुक्र मध्यफळवाळो होवाथी (साढा आठ ते नवमानो अर्ध अंक छे माटे) शुक्रनो ९ नो अंक विंशतियंत्रमां स्थपाय छे ॥१७॥

Aho ! Shrutgyanam

कविसार्धाष्टमासान्प्राग्, प्रतीच्यां नवमासभुक् ।
सप्तार्चिष्मान्शनिर्वक्र – भावात्षड्चैकहानितः ॥ १८ ॥

अर्थः–शुक्र पूर्व दिशामां साढा आठ मास अने पश्चिम दिशामां ९ मास भुक्त होय छे, (भोगी होय छे), ते कारणथी शुक्रनो ९ नो अंक विंशतियंत्रमां होय छे. तथा शनि सात आर्चि [७ जिव्हा] वाळो छे, अने ते वक्री होवाथी अेक बाद करतां ६ ना अंकवाळो गणाय छे ॥ १८ ॥

षन्मासानातिचरेत, फलंदद्यात्ताथग्रिम ।
वक्रत्वेपंचमास्यस्य, युगाग्निभूदिनो१३४क्तितः ॥ १९ ॥

अर्थः—तथा शनि ६ मास अतिचार गतिवाळो छे, तथा ६ मासे अग्रिम [पछीनी राशिनुं] फळ आपनारो होय छे, अने वक्र होवाथी ते बन्ने छमांथी १–१ बाद करतां पांचमो अंक आवे छे, तेमज वक्रीपणाना १३४ दिवस कहेला होवाथी चार मास उपरान्त पांचमो मास पण १४ दिवस सुधी वक्री छे ते कारणथी शनिनो ५ नो अंक विंशतियंत्रमां स्थपाय छे ॥ १९ ॥

राहुकेतुर्वक्रगती, त्रिभी३रुद्रै११स्तयोर्गतिः ।
स्थानद्वये वैपरीत्यात्, प्रतिष्टाऽत्र द्वयोरिह ॥ २० ॥

अर्थः–तथा राहुनी अने केतुनी गति अनुक्रमे ३ मास तथा ११ मासनी छे. माटे विंशतियंत्रमा स्थानमां विपरीतपणे ते बन्ने अंकनी स्थापना करवी, अर्थात् प्रथम केतु संबंधि ११ नो अंक स्थापीने त्यारबाद राहु संबंधि ३ नो अंक स्थापवो ॥ २० ॥

एवं शकुनखेटानां; स्थानाद्विंशतियंत्रकम् ।
निश्चितं मेघविजय–श्रिया विभववृद्धिदम् ॥ २१ ॥

अर्थः–अे प्रमाणे शकुन निमित्तवाळा ग्रहोना स्थानोथी [नव स्थानोथी] श्री मेघविजयजी उपाध्याये लक्ष्मीवडे वैभवनी वृद्धि-आपनारो=करनारो २० ना अंकनो यंत्र [विंशति यंत्र] नो निश्चय कर्यो ॥ २१ ॥

Aho ! Shrutgyanam

दशावतारादाशार्हे, चंद्रार्कौ द्दशि जन्मना ।
अष्टमीदोश्चतुष्कं च, नगभृत्त्वं७च नंदजे९ ॥ २२ ॥

अर्थः—दाशार्हना-कृष्णना १० अवतार थया, चंद्र अने सूर्य बे छे [अथवा जम्बूद्वीपमां २ सूर्य २ चंद्र छे], तेनो जन्म-उदय ८ दिशिमां थाय छे [आठे दिशिमां भिन्न भिन्न क्षेत्रनी अपेक्षाअे उदय-प्रकाश करनार होवाथी ८ दिशिमां उदय गणाय], अथवा दिशाओ ८ होवाथी केवळ दिशाओ तथा अष्टमी तिथि, तथा [दोश्चतुष्कं=] चार भुजाओ कृष्णनी छे ते, तथा नगभृत्पणुं अेटले [कृष्णे पर्वतने धारण कर्यो छे माटे कृष्णनुं गिरिधर पणुं, अने नंद नव थया छे माटे नंदपणुं ॥ २२ ॥

विंदुषट्कं पंचहृषी – केशत्वं च त्रिविक्रमे ।
एकादशीव्रतेष्टत्वं, ध्येयं विंशतियंत्रतः ॥ २३ ॥

अर्थः—विंदु छ छे, तेथी विंदु पणुं, तथा इन्द्रियो पांच छे, तेथी इन्द्रियपणुं, [अथवा कृष्ण हृषीक=पांच इन्द्रियोनो इश=पति होवाथी कृष्ण पोतेज हृषीकेश कहेवाय छे माटे हृषीकेशपणुं अेटले पांच इन्द्रियोनुं स्वामीपणुं], अने त्रिविक्रम [३ पराक्रमवाळा] पण कृष्णनूंज नाम छे, तेथी त्रिविक्रमपणुं, अने अेकादशी व्रतनुं ईष्टपणुं अे सर्व विंशतियंत्रथी ध्येय-भावना योग्य छे ॥ २३ ॥

पार्श्वेदशभवाअष्ट – गणागणभृतस्तथा ।
युग्मंजयस्यविजय – स्तुर्याबोधे४नगा७फलः ॥ २४ ॥

१ विंशति यंत्रमां कृष्णनी भावना आ प्रमाणे—

१० ना अंकथी दश अवतार	९ ना अंकथी नवनंदपणुं
२ ना अंकथी चंद्र सूर्य	६ ना अंकथी बिंदुपणुं
८ ना अंकथी आठ दिशि अथवा अष्टमी तिथि	५ ना अंकथी पांच इन्द्रिय स्वामीपणुं
४ ना अंकथी चार भुजा	३ ना अंकथी त्रिविक्रमपणुं
७ ना अंकथी गिरिधारणता	११ ना अंकथी अेकादशी व्रतेष्टपणुं

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः-(हवे श्री पार्श्वनाथ प्रभुनी भावना विंशति यंत्रथी थाय छे ते आ प्रमाणे-). श्री पार्श्वनाथना दशभव थया छे माटे १० नो अंक भाववो, अर्थात् विंशतियंत्रमां स्थापेला १० ना अंकथी श्रीपार्श्वप्रभुना १० भव विचारवा. ८ ना अंकथी श्रीपार्श्वनाथना आठ गणअने आठ गणधर थया छे ते विचारवा, जय अने विजय [कर्मोपर जय विजय प्राप्त करवा] थी २ नो अंक विचारवो. ४ ना अंकथी चार प्रकारना महाव्रत वा बोध उपदेश विचारवो, ७ ना अंकथी सात फणा विचारवी ॥ २४ ॥

नवहस्ततनूरत्न – त्रयमेकादशीव्रते ।
शतानिपंच५सांगा६नि, वैक्रियर्धिभृतः प्रभोः ॥ २५ ॥

अर्थः-९ ना अंकथी नव हाथनुं शरीर, ३ ना अंकथी रत्नत्रयीपणुं [दर्शन ज्ञान चारित्र], ११ ना अंकथी अेकादशी व्रतपणुं, तथा ५ ना अंकथी पांच भूत अने ते सहित अेक शरीर मळीने ६ नो अंक विचारवो. अे प्रमाणे वैक्रियऋद्धि वाळा प्रभुना ९ प्रकारना स्थानथी ९ प्रकारना अंक विंशतियंत्रथी विचारवा ॥ २५ ॥

आयुर्विंशाब्धयः पूर्वं, भाव्यन्ते भव्यजन्तुभिः ।
द्वेधारिविजयात् सर्व–सिध्यै विंशति यंत्रके ॥ २६ ॥

अर्थः-विंशति यंत्रमां-यंत्रथी भव्य जिवोअे श्रीपार्श्वनाथ विगैरे प्रभुनुं पूर्व भवनुं २० सागरोपमनुं आयुष्य विचारवुं, तथा बे प्रकारना शत्रुना [राग द्वेष रुप शत्रुना] विजयथी सिद्धि पण विंशतियंत्रथी विचारवी२६॥

॥ इति श्रीविजययंत्र प्रभावः ॥

हवे चार गति-रीतिवडे २० नो यंत्र बने छे, तेनी रचना कहेवाय छे ते आ प्रमाणे—

Aho ! Shrutgyanam

आद्यालिंगाः पक्षे २ हया ७ ब्धयों ४ काः ।
द्वितीयपंक्तौ रस ६ दृक् २ समुद्रा ॥
अधोंग ६ रामा ३ वसवः ८ प्रसिद्धं ।
सिद्धं बुधा विंशति यत्रमाहु ॥ १ ॥

अर्थः–विंशति यंत्रमां पहेली पंक्तिने विषे पक्ष=२ हय=७ अने अब्धि=४ [=अंकगति प्रतिलोम होवाथी अनुलोम–क्रमशः स्थापतां ४–७–२] ओ त्रण अंक छे, त्यारबाद बीजी पंक्तिमां रस ६ दृक=२ अने समुद्र=४, जेथी क्रमशः स्थापतां ४–२–६ ओ त्रण अंक छे, तथा त्रीजी पंक्तिमां अंग=६राम =३ अने वसु=८प्रसिद्ध छे, जेथी क्रमशः स्थापतां ८–३–६ ओ त्रण अंक छे. ओ प्रमाणे बुध–पंडित जनोओ सिध्ध थयेलो आ २० नो यंत्र कह्यो छे. ॥ १ ॥

ईशान पूर्व अग्नि.

उ. २० द.

४	७	२
४	मध्य२	६
८	३	६

वायु पश्चिम नैऋ.

निधानमानैरिहशिष्टकोष्टैः ।
स्वेष्टमये यंत्र सुसूत्रणेयं ॥
मध्यस्थितांकैः ७-६-३-४ द्विगुणैः १४-१२-६-८ स्वपार्श्वो–
भयांक ४-२-२-६-६-८-८-४ युक्तैर्गतय चतस्त्रः ॥ २ ॥

सातदू १४ तत्र ४-२ मेलने २० इत्येकागतिः ६ छदू १२ तत्र २-६ मेलने २० द्वितीया तीन दू ६ तत्र ६–८ मेलने २० तृतीया चार दू ८ तत्र ४-८ मेलने २० चतुर्थी.

अर्थः–ओमां निधान=नव संख्यावाला कहेला उत्तम कोठाओ–खानां वडे पोतानी ईष्टा–ईच्छाप्रमाणें आ यंत्रनी उत्तम सूत्रणा–गुंथणी–रचना कहेली–करेली छे. ते आ प्रमाणे–मध्यवती अंकोने ७-६-३-४ ने द्विगुण करतां १४-१२-६-८ थाय, ते दरेकने पोतानी पडखे रहेला बे बे अंकोनी साथे [४–२ । २–६– । ६–८ । ८–४ नी साथे] युक्त करतां चार गतिये (चारे रीतिये) २० नो अंक आवे छे ॥ २ ॥ ते आ प्रमाणे–सात दू १४

Aho ! Shrutgyanam

मां ४–२ मेळवतां २० थया ॥ इत्येका गतिः ॥ छ दू १२ मां २–६ मेळवतां २० थया ॥ इति द्वितीया गतिः ॥ त्रण दू ६ मां ६–८ मेळवतां २० थया ॥ इति तृतीया गतिः ॥ चार दू आठमां ४–८ मेळवतां २० थया ॥ इति चतुर्थी गतिः अे प्रमाणे चार रीते २० नो अंक प्राप्त थाय छे.

हये ७ गुणे ३ चद्विगुणे १४-६ पिविंशा ।
कृते ४ रसे ६ पि द्विगुण ८ १२ तथा सा २० ॥
कोणेप्यथांगे ६ जलधौ ४ द्विनिघ्ने १२-८ ।
गजे ८ भुजे २ चद्विगुणे १६-४ तथान्या ॥ ३ ॥

अर्थः–हय=७ ने गुण=३ अे बेने द्विगुण करतां १४–६ थाय ते बेने मेळवतां पण २० थाय छे, ॥ इति पंचमी गतिः ॥ पुनः कृत=४ तथा रस=६ ने द्विगुण करतां ८–१२ थाय, ते बेने मेळवतां २० थाय ॥इति षष्ठी गति॥ (अे बे गति मध्योर्ध्वपंक्ति[2] तथा मध्यतिर्यक्पंक्तिनी अेटले दिशिअंकनी थई, अे प्रमाणे विदिशिपंक्तिनी पण बे गति आ प्रमाणे–] विदिशिमां पण अंग=६ तथा जलधि=४ अे बेने द्विगुण करतां १२–८ थाय, ते बेने मेळवतां २० थाय ॥ इति सप्तमि गतिः ॥ पुनः गज=८ तथा भुज=२ ने द्विगुण करतां १६–४ थाय, ते बेने मेळवतां बीजा २० थाय, ॥ अष्टमी गति ॥ ३ ॥

---

१ उपर स्थापेला यंत्रमां मध्यवर्ती अेटले पूर्व दिशानो ७ नो अंक छे तेने बमणा करवाथी १४ थया तेमां पडखे रहेला बे अंक अेटले ईशाननो ४ अने अग्निनो २ मेळवतां २० थया. अे अेक रीति थई. पुनः दक्षिणनो ६ अंक मध्यवर्ती छे, तेने द्विगुण करवाथी १२ थया तेमां अेज छनी बे पडखेना बे अंक अेटले अग्निनो २ अने नैऋत्यनो ६ अे बे अंक मेळवतां २० थया—अे बिजी रीति. पुनः पश्चिमनो ३ अंक मध्यवर्ती छे तेने द्विगुण करतां ६ थया, तेमां अे त्रणनी पडखेना ८ तथा ६ ने मेळवतां २० थया—अे त्रीजी रीति. पुनः उत्तरनो अंक ४ मध्यवर्ती छे, तेने द्विगुण करतां ८ थया, तेमां अे चारनी पडखेना बे अंक ८–४ मेळवतां २० थया—अे चोथी रीति.

२ ७–२–३ अे त्रण अंकवाळी मध्योर्ध्वपंक्ति अेटले पूर्व पश्चिम पंक्ति. अने ४-२-६ अे त्रण अंकवाळी मध्यतिर्यकपंक्ति अेटले उत्तरदक्षिण पंक्ति.

Aho ! Shrutgyanam

दिगंक ७-६-३-४ योगे नवमीगतिःस्या-
द्विदिग्गतांके ४-२-६-८ दशमी स्फुटैव ॥
आद्यालिकोष्टद्वितये ४-७ पिचाद्ये ।
युक्तेतृतीयालिमकोष्टयुग्मे ३-६ ॥ ४ ॥

अर्थः-तथा यंत्रमां दिशिने विषे स्थापेला ७-६-३-४ अंकोने मेळवतां पण २० थाय ते नवमी गति-रीति छे ॥ इति नवमी गति ॥ तेमज विदिशिमां रहेला अंको ४-२-६-८ ने मेळवतां पण २० थाय, ए दशमी गति तो स्पष्टज छे ॥ इति दशमी गति ॥ तेमज पहेली पंक्तिना पहेला बे कोठामां-खानामां रहेला ४-७ ए बे एकमां त्रीजी पंक्तिना छेहेला बे कोठामां रहेला ३-६ ए बे अंक मेळवीए तो पण २० थाय. ॥ इति एकादशी गति ॥ ४ ॥

एकादशीयं गतिरित्थमुक्ता ।
तथाद्य पंक्तावचले ७ भुजे २ च ॥
युक्ते तृतीयालिमुखाष्ट ८ रामैः ३ ।
स्याद्वादशीयंगतिरर्क १२ तुल्या ॥ ५ ॥

अर्थः-ए प्रमाणे ए अगिआरमी गति कही, तथा पहेली पंक्तिमां छेल्ला बे अंक अचल=७ तथा भुज=२ छे, ते बेने त्रीजी पंक्तिना पहेला अष्ट=८ अने राम=३ ए बे अंकमां युक्त करीये तो ते २० ना अंकनी [अर्क-तुल्य सूर्य जेटली एटले] बारमी गति थई इति द्वादशी गतिः ॥ ५ ॥

द्विकेन २ तर्केण ६ कृतेन ४ सिध्या ८ ।
त्रयोदशी सांग ६ रसैः ६ समुद्रः ४ ॥
प्रमाण ४ युक्तैश्च चतुर्दशीसा ।
जातागति विंशातिसंख्ययैव ॥ ६ ॥

अर्थः-तथा द्वि+=२ तर्क=६ कृत=४ सिद्धि=८ ए [अर्थात् अग्नि दक्षिणना २-६ मां उत्तर वायव्यना ४-८] मेळवतां जे २० थाय ते तेरमी गति

Aho ! Shrutgyanam

गति जाणवी ॥ इति त्रयोदशी गतिः ॥ तथा अंग=६ रस=६ समुद्र=४ अने प्रमाण=४ [अर्थात् दाक्षिण नैऋत्यना ६-६ मां उत्तर ईशानना ४-४] मेळवतां पण २० थाय ते विंशति संख्या संबंधि ज चौदमी गति थई इति चतुर्दशी गति ॥ ६ ॥

अधःस्थिताष्ट ८ द्विगुणस्क मध्य-
स्थितद्वयेनेत्यपि षोडशामीः ।
मुख्यैश्चतुर्भिः सहिताहिविंश-
संख्याततः पंचदशीयमत्र ॥ ७ ॥

अर्थः-पुनः यंत्रमां नीचे रहेला ८ ने द्विगुण करी १६ थाय तेमां मध्य कोठामां रहेला २ ने पण द्विगुण करतां थयेला मुख्य अंक ४ ने मेळवीओ तो ओ रीते पण [८×२=१६ २×२=४ १६+४=२०] वीसनो अंक प्राप्त थाय, तेथी विंशतियंत्रमां ओ पंदरमी गति थई ॥इति पंचमदशागतिः॥७॥

कोणस्थषड्मध्यगतद्वयेन, द्विघ्नाततोद्वादशतेऽष्टयुक्ता ।
स्यात्षोडशीयंगणनातथैव, साविंशते स्तोरणसंज्ञयेह ॥८॥

अर्थः-तथा खूणामां रहेला ६ ने मध्यमां रहेला २ वडे द्विगुण करीओ, तो १२ थाय, तेमां खूणामां रहेला ८ ने युक्त करीओ तो २० थाय, ओ सोलमी गणत्री (गति) छे, ओ प्रमाणे करेली वीसनी गणत्री ते आ यंत्रमां तोरण गति नामनी छे. ॥ इति षोडशी तोरणगतिः ॥ ८ ॥

सिध्या ८ऽथमध्याऽब्धि ४ भुजां २ ग ६ भाजा·
त्षष्टि १२ प्रमाण गणानापताका ॥
धृति १८ प्रमाष्ट ८ त्रि ३ भुजा २ चलां ७ कैः ।
पिपीलिका शंकुगति प्रवृत्त्या ॥ ९ ॥

अर्थः-सिध्धि= ८ तथा मध्यवर्ती अब्धि= ४ भुजा= २ अंग= ६ ओ (८-४-२-६) वडे सत्तर प्रमाणवाळी (ओटले सत्तरमी) गणत्रीथी पण

Aho ! Shrutgyanam

२० थाय छे, ते सत्तरमी पताकागति जाणवी ॥ इति सप्तदशी पताका गतिः ॥ तथा अष्ट=८ त्रि=३ भुजा=२ अने अचल [पर्वत]=७ ए (८-३-२-७) अंकवडे शंकुगतिनी प्रवृत्ति गणत्रीथी २० ना अंकनी पिपीलिका गति जाणवी ए धृतिप्रमा [=धृति=१८ प्रमाणनी एटले] १८ मी गति छे ॥ इति अष्टादशी पिपीलिका शंकुगतिः ॥ ९ ॥

मध्यस्थ षड् ६ द्वि १२ कृत ४ सागरां ४ कैः ।
एकोनविंश प्रमितापि संख्या–
द्विघ्ने १४ नगां ७ के पिचकोणषड् ६ भिः ।
युक्तेच सा विंशतिरेवगण्या ॥ १० ॥

अर्थः–तथा मध्यवर्ती ६ ने द्वि=गुण करतां १२ थया तेमां कृत=४ सागर =४ मेळवतां [६×२=१२+४+४=] २० थाय छे. ए ओगणीसमी प्रमाणवाली संख्यागति (एटले ओगनीसमी गति थई)॥ इति एकोनविंशती गतिः ॥ तथा नग=७ ना अंकमां पण तेवी रीते एटले द्विगुण करीने तेमां विदिशिमां रहेलो ६ नो अंक मेळवतां (७×२=१४+६=)२० थाय छे, ए वीसवी गति गणवी ॥ १० ॥

अस्मिन् दशत्रिंशदथाभ्रवेदा ४० ।
पंचाशता ५० षष्टिरपिप्रबोध्या ॥
सप्त ७ त्रि ३ योगेंग ६ चतुष्क ४ संगे–
ऽष्ट ८ द्वि २ प्रयोगे प्रकटादशापि ॥ ११ ॥

अर्थः–वळी ए विंशतियंत्रमां दश=१० त्रिस=३० अभ्रवेद [अभ्र=०, वेद=४=] ४०, तेमज ५० अने ६० नी अंकगणत्री पण थाय छे एम जाणवुं. ते आ प्रमाणे—सात अने त्रणना योगे १०, अंग=६अने ४ ना

१ अहिं ८–४ -२-६ ए अंक वायव्य–उत्तर–मध्य–अने दक्षिण स्थानीय होवाथी

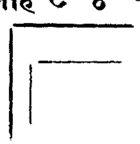

ए रीते पताका आकार थयो, अने शंकुगतिनो

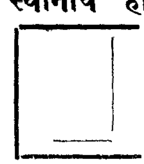

ए आकार थयो. इत्यादि रीते वीस गतिओना वीस आकार दर्शावाशे.

Aho ! Shrutgyanam

योगे पण १०, तेनज आठ अने बेना योगे पण प्रकट रीते १० थाय छे [अे प्रमाणे ७+३=१०, ६+४=१०, ८+२=१० अे त्रण रीते १० थाय छे ॥ ११ ॥

तथाऽधयः ४ सप्तगुणा २८ द्वयाढ्या २ ।
त्रिंश ३० त्तथाऽष्टौ त्रिगुण २४ स षट्का ६ ॥
३० चतुर्गुणा अष्ट ३२ मुखेऽब्धयो ४ द्विः ८ ।
खवार्ब्धि संख्येति ४० बुधै र्विबोध्या ॥ १२ ॥

अर्थः-तथा अब्धि=४ ने ७ गुणा करतां २८ थाय तेमां २ उमेरता ३० थाय छे. तथा आठने त्रण गुणाकरी छ उमेरतां पण ३० थाय छे अे प्रमाणे बे रीते (४-७=२८+२=३० । ८×३=२४+६=३०) त्रीसनो अंक प्राप्त थाय छे. तथा आठने चार गुणाकरी प्रथमना [ईशान गत] चार ने द्विगुण मध्यगत बे वडे तेमां उमेरतां [ख=०, वार्धि=४=] ४० नो अंक [८×४=३२, ४×२=८ ३२+८=४०] प्राप्त थाय छे, अे प्रमाणे बुध्धिमानोओ जाणवुं ॥ १२ ॥

चतुर्गुणा अष्ट ३२ चतुर्गुणत्वे ।
कृते ४ कृते १६ मध्यगतद्वि २ योगे ॥
पंचाशदेवं फलितास्तिषष्टिः ।
षड्वर्ग ३६ मध्ये त्रिगुणाष्ट २४ युक्तेः ॥ १३ ॥

अर्थः-आठने चार गुणाकरी तेमां चारने चारगुणाकरी मेळवी तेमां मध्यगत बेने मेळवतां ५० जवाब (८-४-२ अे त्रण अंकथी) प्राप्त थयो तथा अे प्रमाणे पहेला [दक्षिणगत] छनो नीचेना छ साथे वर्ग=गुणाकार करी तेमां त्रण अने आठनो गुणाकार उमेरवो अेथी ६० नो जवाब (६-६-३-८ अे चार अंकथी) प्राप्त थाय छे. (८×४=३२, ४×४=१६ ३२+१६+२=५० तथा ६×६=३६ ३×८=२४ ३६+२४=६०) ॥ १३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

कोणस्थषण्णां ६ त्रिगुणेंतरस्थ-द्वयेनयुक्विंशतिकाप्युपैति ॥
कोणद्वयेसप्तगुणेचमध्य । षट्संगतौ सा नविवक्षणीया ॥ १४ ॥

अर्थः—खूणामां रहेला छ ने त्रण गुणा करी मध्यगत बे ने उमेरतां [६–२ ना अंकथीज ६×३-१८+२=]२० पण थाय छे. तथा खूणामां रहेला बे वडे सातने गुणतां चौद थाय तेमां मध्यगत ६ [दक्षिणना ६] उमेरतां पण २० थाय परन्तु ए बे गतिनी अहिं विवक्षा करी नथी।१४।

प्राच्यांसुरेन्द्रः सहसोमराजो-पाच्यांयमस्तीव्ररुचातिचारुः ॥
पाशीप्रतीच्यांसहशेषनागो। ब्रह्मान्वितः श्रीदइहास्त्युदीच्याम् ॥१५॥

अर्थः—पूर्व दिशामां सुरेन्द्र सोमराज [सोम लोकपाल] सहित जाणवो. दक्षिण दिशिमां कान्तिवडे अति मनोहर यम लोकपाल छे, पश्चिम दिशामां शेषनाग सहित वरुण नामनो लोकपाल देव छे, अने उत्तर दिशामां ब्रह्मा सहित कुवेर नामे लोकपाल छे ॥ १५ ॥

श्रीयंत्रमेतद्विहरज्जिनानां । नाम्नाधियास्तापरितः परीतम् ॥
सर्वार्थसिध्यादिगुणैः प्रतीतं । चिंतामणीव त्रिदशाग्रणीनाम् ॥१६॥

अर्थः—वीस विहरमान जिननो आ विंशतियंत्र नाम वडे तथा बुध्धिवडे सर्वत्र व्याप्त छे. सर्व अर्थनी सिध्धि आदि गुणोवडे प्रसिद्ध छे, अने देवता ईन्द्रोने पण चिंतामणि रत्न सरखो छे. ॥ १६ ॥

॥ इति विंशति यंत्राम्नायः ॥

Aho ! Shrutgyanam

॥ श्रीअर्जुनपताका ॥

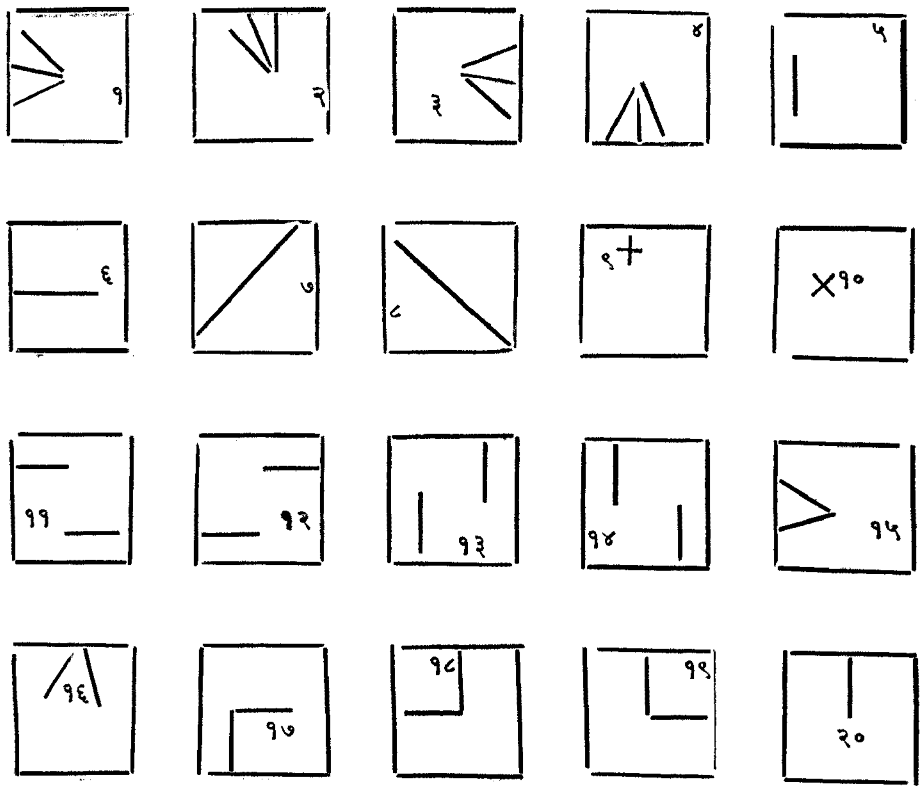

८	१	६
३	५	७
४	९	२

१५ १५

९	१	६
३	५ ६	८
४	१०	२

१६

९	१	७
३	६ ५	८
५	१०	२

१८ १७

९	२	७
४	६	८
५	१०	३

१८

१०	२	७ ८
४	६	९
५	११	३

१८ १९

१०	२	८
४	७	९
६ ५	११	३

२१ २०

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

२१

९	२	८
४	७	८
६	१०	३

१९

Aho ! Shrutgyanam

४	७	२
	२	

१ ली

		२
	२	६
		६

२ जी

	२	
८	३	६

३ जी

४		
४	२	
८		

४ थी

	७	
	३	

५ मी

४		६

६

४		
		६

७

		२
८		

८

	७	
४		६
	३	

९

४		२
८		६

१०

४	७	
	३	६

११

	७	२
८	३	

१२

		२
४		६
८		

१३

४		
४		६
		६

१४

	२	
८		

१५

	२	
८		६

१६

४	२	६
८		

१७ पताका

	७	
	२	
८	३	

१८ शंकु

४		
४	२	६

१९

	७	
	२	६

२० मी

Aho ! Shrutgyanam

पक्षा२हि९सिंधु ४ नग ७ वाण५गुण३र्त्तु६चंद्र १ ।
नागैः ८ क्रमांक धरणौ विंजयार्जुनस्य ॥
अस्यांगतौ क्रमिक पंचक लंघनेन ।
षट्स्थापने भवति विंशति यंत्र मंत्र ॥ १ ॥

अर्थः-पक्ष=२, अहि=९, सिंधु=४, नग=७, बाण=५, गुण=३, ऋतु=६, चंद्र=१ [परन्तु अहिं बिंदु सहित १०], नाग ८ ए (२-९-४-७-५-३-६-१०-८) अंकोने अनुक्रम प्रमाणें स्थापतां [एटले २-३-४-५-६-७ ८-९-१० ने अनुक्रमे त्रिजा श्लोकमां दर्शाव्या प्रमाणे स्थापतां] अर्जुननो विजय यंत्र नामनो बने छे। वाळि ए विंशति यंत्रनी गतिमां (अंक-स्थापन पद्धतिमां) ५ नो अंक उल्लंघीनें ६ थी स्थापन करतां अहिं विंशतियंत्र बने छे [जेथी १० ने स्थाने ११[1] नो अंक प्राप्त थाय छे]. ॥१॥

तत्रैक कोण गणने खलु विंशति स्यात् ।
सैकाथ तत्रतु षडंक पदेपि पंच ॥
भाव्याततो भवति कोपिन दोषलेशः ।
क्लेशोन्यथा न किलयंत्र गते र्निवेशः ॥ २ ॥

अर्थः-त्यां ए विंशति विजय यंत्रमां [दिशिश्रेणि तो वीस वीसनी थाय छे, परन्तु] विदिशिश्रेणि गणतां एक विदिशिश्रेणिमां निश्चय २० गणाय छे, परन्तु बिजी विदिशिश्रेणि गणतां २१ थाय छे, माटे ते एक श्रेणिमां ते कोठाने विषे [६ ना कोठामां] ६ ना अंकने स्थाने ५ नो अंक पण स्थापवो, अने ते रीते ते बिजी विदिशिश्रेणि विचारवी, गणवी, तेथी कोई लेशमात्र पण दोष नथी, अने जो तेमन गणीये तो (६ स्थाने ५ न गणीये तो) क्लेशरूप गणाय, तेमज यंत्र गतिनो [यंत्रनी रीतिनो] निवेश पण थाय नहिं (यंत्र रचना पण सम्यक् गणाय नहिं). ॥२॥

[1] ५ ना अंकनु उल्लंघ करीने (पांचने बदले) ६ नो अंक स्थापतां अन्ते ११ नो अंक आवे छे, जेथी यंत्रमां स्थपातां अंक अनुक्रमे २-३-४- (५) ६-७-८-९-१०-११ ए प्रमाणे पू०-नै०-उ०-वा०-म० -अ०-द०-इ०-प० दिशामां स्थपाय छे.

Aho ! Shrutgyanam

स्याद्भावनातिशयतः शकुनेऽशुभेपि ।
सम्यक् फलं तदितर स्तुशुभे विहंगे ॥
स्वप्नेप्युपश्रुतिषु धर्म विघौ तथात्र ।
मंत्रेपि चिंत्य फलदा किलभाव नैव ॥ ३ ॥

अर्थः-भावनाना अतिशयथी अशुभ शकुनमां पण सम्यक् शुभ फलनी प्राप्ति थाय छे, अने शुभ [विहंगमां =] शकुनमां अशुभ फलनी प्राप्ति थाय छे, अे प्रमाणे स्वप्नमां उपश्रुतिओमां अने धर्मविधिओमां पण जेम शुभाशुभ फळनी प्राप्ति भावना विशेषथी छे, तेवी रीते अहिं मंत्रमां (यंत्रमां) पण निश्चय भावनाज अचिंत्य फळ आपनारी छे. ॥ ३ ॥

ते तैवसा यवन विंशाति यंत्र मध्यें-
ऽर्कांके १२ द्वयस्यश्वत षड् गणने कलांके १६ ॥
प्राज्ञैःफलाय कथिता हृदि भावनैव ।
नैवान्यथी भवति विंशाति यंत्रासिद्धि ॥ ४ ॥

अर्थः-ते कारणथीज यवनना विंशाति यंत्रमां अर्क=१२ ना अंकमां २ नी गणत्री अने कला=१६ ना अंकमां ६ नी गणत्री थाय छे. बुद्धिमानोअे हृदयनी भावनाज फळ आपनारी कही छे, नहितर विंशाति यंत्रनी सिद्धी थती नथी. ॥ ४ ॥ [यवननो विंशातियंत्र आगळ दर्शावशे].

तत्रायं केषां चिदभिनिवेशः क्लेशः कृमपाप्तार्कं लोपे पुनस्तत्कार्यं नधार्यं प्रसक्ता दर्शनं लोपः तस्मिन् जाते यदि तेन कार्यस्या त्तर्हि कानि संतीत्यादौ यकारः स्यात् धातोरकार लोपेपि तत्कार्य प्रसंगात् मृतो ज्जीवन प्रायत्वादशुद्धमिदं यत्रं लोपस्य ध्वंस रूपस्य नित्यत्वात् नचभावनैव सवत्र फलदा ' गुडोय ' मिति मुग्ध भावनया स्वाद्यमानेन विषेन मरणात् अशुद्धे नाणकादौ शुद्ध धिया गृह्यमाणेपि न तत्फलं तस्मान्नैकोंकः कार्यद्वये गम्य इति अत्रोच्यते नायमेकान्तःकान्तः अचकथ दित्यादौ लुप्ताकारस्य वृध्यभाव प्रयोजकत्वात् अंकविद्यायामपि केवलस्य विंदोरनंकत्वेपि अंक सांनिधानेंकत्वाच्च नचेदंकगणना नषांतै

Aho ! Shrutgyanam

वदशमांकः कतमः अंक शब्देन नव संख्यानात् अतएव अंक संकलने बिंदुः प्रसक्तोपि तल्लघने संकलना अंक गणने एकः दश इत्यादौ तद पेक्षा च दृश्यते अंकप्रधान ज्योतिशास्त्रेपि उभयीगतिः उदया पेक्षया तिथिलोपेपि प्राच्यतिथौ घटिकापेक्षया तिथिच्छेदादि दोष प्रयोजकत्वात् अतएव प्रत्यय लोपे प्रत्यय लक्षणं न याति १ स्थानिवदादेशो ऽनलविधा विति परिभाषाद्वयं युक्तं अलंकारशास्त्रेपि एकस्मात् शब्दात् यथायोगं नानार्थलाभः यथा अनुदराकन्या अलोमाएडका इत्यादौ विशिष्टार्थे शक्तेश्च वैद्याअपि लंघनस्यायोग लघु भोजने तदेव व्यवहरंति उत्सर्गोप वादयोरेकार्थविषयात् नचैवं षडंकस्थाने पंचकभावेनेइति प्रसंगः साव-र्णस्य नियोजकत्वात् तथाहि प्रथमेकद्विकयो सावर्ण्यं संख्यादिरा धर्म्यात् द्विकस्यसंख्यादित्वं लहूसंखिज्जंदुच्चियइति सिद्धान्तात् तत्रापि एकस्य वस्त रूपत्वाभिप्रायात् आद्यद्वितीययोरघोषत्वमपि एव मेव नवक-दशकयोः सावर्ण्यं संख्यांत साधर्म्यादेव विषम समभावेपि एकद्विकयोः संबधः यथा पूर्वं दिनं तदनुगारात्रिरित्यनयोः संबधः अतएव द्वाभ्यां केवलाणुभ्यां द्व्यणुकं न तथा तार्किक मते अणुकं तस्य षडणूमानात् यद्यपि सिद्धांतमध्ये त्रिभिरणुकैस्त्र्यणुकं तथापिनद्विकत्रिकयोः सार्धका नर्द्धक विरोधात् यद्यपि एकोऽनर्धकोऽणुस्तथापि न त्रिकेण सावर्ण्यभाक् द्विकेनव्यवधानात् एकस्मिन्ननर्धकत्वेपि अव्यवधानात्सावर्ण्यं एकं हि वस्त सदपिनसत् द्वयोभावेतु आस्तिक्यं संयोगादेव सिद्धेः संयोगादिद्वयं। ततएव सम्यग्ज्ञान क्रियाभ्यांमोक्षः इतिसूत्रं शाद्विक मते सर्वादिपाठोपि एकद्वि शब्दयोर्न त्रिशब्दस्य अतएव एक संमुखोद्विकः शाब्दिका अपि प्रथमा द्वितीयपो : सावर्ण्य माहुः मुने रित्यादौ षष्ठी पंचम्योश्च एकत्व रूपस्य एकस्य वाचकत्वं एककेयथा द्विकेपि तथा द्विरूप एकार्थ वाचकत्वं न पुनः त्रिके वहुत्वस्य त्रित्वसंख्या पर्यवसानात्। एवंत्रिक चतुष्कयोरपि सावर्ण्यं स्थान विशेषे ऽभिधानात् यद्यपि क्वचित् द्विमार्गादौ द्विकाभिधान मपि तथापि तियचउक्कचच्चर चउम्मुहे त्यादि सूत्रेत्रिक चतुष्कयोः एव-साहचर्यं न द्विकस्य शब्दशास्त्रेपि त्रिचतुरोरेव सूत्रणात् ज्योतिर्मतेपि चतुर्थ्यां भद्रा कृष्णपक्षेतृतीमायां पर्यवसन्ना वेदेष्वपि त्रित्वं चतुष्टमपि 'त्रयीवनीतांगगुणेन विस्तरं, इतिश्रीहर्षः 'चउण्हं वेयाणं सारए, इतिसूत्रं वर्णेषु त्रित्वं चतुष्टमपि त्रिब्रह्मवर्णा स्त्रियः इतित्रिपुरास्तवे चातुर्वर्ण्यं

Aho ! Shrutgyanam

प्रसिद्धं ' त्रिवर्गो धर्मकामार्थैश्चतुवर्गः समोक्षकः: इति कोषवचनात् एवं पंचक षडंकयोः सावर्ण्यमुदाहरणीयं रसानां क्वचित् पंचत्वे लवण रसस्यभेद विवक्षया षोढा भणनात् एवमिंद्रियाणां तद्विषयाणांच पंचधाषोढा इति उभयी संख्या 'पंचेंद्रियाणि त्रिविधंबलंच,इति षडिंद्रियाणि षड्विषया, इति केशवः ततएव हिंदुकमते पंचकः यवन मते षडंकः उभयोस्तुल्याकृतिः वक्राः पंचम षष्टेके इत्यपि सप्ताष्टकयोः सावर्ण्यं सत्तट्ठ-पयाइ अणुगच्छइ तथा सत्तट्ठभवज्जहणाइ तथा सत्तपुढवीओ पणणत्ता-ओक्वापि अट्ठपुढवीओ इत्यादि सूत्राणि गमकानि ज्योतिर्मतेऽष्टमी भद्रा कृष्णपक्षे सप्तम्यां तथा अतिवक्रा नगा ७ ष्टमे ८ ॥ नवकदशकयो सावर्ण्यं ' नवमे दशमे भाना जायते सरलागतिः, ॥ एवं पंचक पडंकयोः सावर्ण्यमस्तु परमुभयार्थत्वं कथमितिचेत् एकोपिलकारः अनिलइतिवायु नाम्निसहजरीत्या उच्चार्यते अनलइति अग्निनाम्नि प्रयत्नांतरेण यथवा य-कारः योगी योधः इत्यादौ स्पष्टोच्चारणेन नियोगी नियम इत्यादौ अस्पष्ट तया ध्येयः एवं वकारेपि मंतव्यं संवृतोप्यकारः प्रक्रियानियोगा द्विवृतः प्रतिज्ञायते उच्चारणार्थोपि प्रत्याहारार्थं सानुनाशिकश्च ततोर्थवशाद्विभक्ति परिणामवत् अंकस्यापि गणना नियोगात् सैक निरेकत्वे यथार्हं परिणामः कार्यः बारादिवत् यथावा विवक्षातः कारकाणि तथात्रापि षडंके पंचक विवक्षा कार्या स्वरसंज्ञाप्यनुस्वारे सिद्धांत कौमुदीमता व्यंजनत्व हैममते कस्यादे व्यंजना श्रयात् यथाहि ' भुवनानि निवघ्नियात् । त्रीणि सप्त चतुर्दश॥ चतस्रः कीर्तयेद्राष्टौ । दशवाककुभः क्वचित् ॥ १ ॥ तथा चतुरा सप्तवांबुधीम् इति स्वरास्त्रयः ३ पंच ५ सप्त ७ चतुर्दश १४ नव ९ क्वचित् एवं यथा संभवयाख्या सर्व पंडितसंमता सार्वत्रिकी तथात्रापि सैक निरेक करणात् सावर्ण्येन सर्वयंत्र निर्वाहः यथा वा छंदःशास्त्रे लघुरपि पादांते गुरुर्भावनीयः अर्हादिगणे संयोग परत्वेन गुरुरपि लघुर्भाव्यः नोऽनिष्टाऽर्थो शास्त्रप्रवृत्तिरिति न्यायात् तथात्रापि अंकानां तत्तत्सवर्णभावनयैव निर्व्यूढव्यं सतो गति श्चिंतनीया इतिन्यायात् नचभावनया नकार्य सिद्धि-रित्येकांतः ' पानीय मप्यमृत मित्यन्युचित्यमानं किनामनो विषविकार मपाकरोति, इति प्राचीन वचनात् विषादनात् विषादना शुद्धना णकादौ तुमौढ्य दोषात्सहकारि वैरूप्यान्त भावनामात्रतः तत्तत्कार्यं किंच यंत्राणां विचित्रागति रित्यनेन संतोष्टव्यं यथाकमलाकृति विंशतियंत्रे चतस्रोगत-

Aho ! Shrutgyanam

यस्त्रिस्थानिका दिग् १ विदिग् २ परिधिसव्य ३ तदितर ४ गतया श्चतुस्थाने काद्वादशकयंत्रे काचिद्गति स्त्रिभिर्गृहैः काचिद्वाभ्या मेवगृहाभ्या मित्यादि विस्तरो गंगाप्रवाह ग्रंथाद्बेद्यः एवं दश समानानामिव दशांकानामपि सावर्ण्यं । ज्ञेयं तत एव चूडामणि शास्त्रे अक्षरेषु अंकन्यासः लिपिभेदे अंकै रेव वर्णभावणात् वस्क तस्क यंत्राणां गति वैचित्र्य मेवमत्त्वा संतोष्टव्यं न शास्त्र विरोध योधैर्भाव्यं अनन्यगतिकत्वात् ॥

इति नवग्रह यंत्रं विंशतेवर्तमाना-
ऽभयद जयद् सेवा सक्तदेवानुषक्तम् ॥
विजयविधिनिधानं तर्जनं दुर्जनानाम् ।
भवतु विभवहेतुः केतु रेवार्जुनस्य ॥ १ ॥

प्राचीनानूचानै--स्त्रिभागदाना दिहैक शेषेपि ॥
कृत ४ गुण ३ यंत्रं रचितं । ख वाणह यंत्रं द्वयेशेषे ॥ २ ॥

तन्मार्गानुगतधियो-पाध्यायपदस्थ मेघविजयेन ॥
विहरज्जिनयंत्रमिह । स्फुटीकृतं विजयकरं ॥ ३ ॥

अर्थः-अहिं [५ नो लोप करी ६ स्थापवामां] केटलाकनो अेवो आग्रहरुप कलेश छे के-अनुक्रमे प्राप्त थयेला अंकनो लोप कर्याथी पुनः कार्यसिद्धि थाय अेम न जाणवुं, केमके-प्रसक्तादर्शनं लोपः=प्राप्त थयेलानुं अदर्शन-अदृश्यपणुं ते लोप, अने ते लोप थये छते पण जो ते लोप थयेला वडे अर्थ थतुं होय [अेटले लोप थयेलो अक्षर पण जो पोतानुं कार्य करी शकतो होय] तो कानि सन्ति इत्यादि वाक्योमां * यू

* सान्ति मां अस् धातु छे परन्तु अस् धातुने अन्ति प्रत्यय लागतां अस्ना अकार नो लोप थवाथी कानि सान्ति वाक्य थयुं, जो अस्ना अ नो लोप न थात तो कानि+असन्ति अे बेनी संधि थात, अने संधि थती वखते नि मां रहेला इ कारनो अग्रे आवेला अ कार थी) य् कार थात, जेथी कानि+असन्ति=कान्यसान्ति अेवुं वाक्य थात, परन्तु अस्ना अ नो लोप थवाथी इ नो य् कार थयो नहि.—इति तात्पर्यः-

Aho ! Shrutgyanam

कारथवो जोईये, कारणके धातुना [अस् धातुना] अकारनो लोप थवा छतां पण तेना कार्यनो प्रसंग प्राप्त थवाथी, माटे मरण पामेलाने पुनः जीवतो करवा सरखो [५ नो लोप कर्या छतां पण पुनः ५ नी गणत्री करवाथी] आ विंशाति यंत्र अशुद्ध गणाय, कारणके विनष्ट स्वरूप वाळो लोप नित्यभावी छे, (जेथी कदाचित् दृश्य थाय अने कदाचित् दृश्य न थाय अेवो नथी, माटे लोप कृत ५ नो अंक कोई वखत गणत्रीमां लेवो ने कोई वखत गणत्रीमां न लेवो अेम न थाय, जो ५ नो लोप कर्यो छे तो ते लोप नित्यभावी होवाथी कदी पण गणत्रीमां लई शकाय नहिं). वळी कहो छो के भावनाज सर्वत्र फळ आपनारी छे, तेम पण नथी कारणके आ गोळ छे. अेवी मुग्ध भावनाथी खवातुं विष मरण माटेज थाय छे, तथा खोटा नाणाने (खोटा रुपियाने) खरानी बुद्धि अे ग्रहण करतां पण तेनुं कंई फळ थतुं नथी, माटे अेक अंक बे कार्यमां (गणत्रीमां अने अगणत्रीमां अेम बे रीते) उपयोगी थई शके नहिं. [अथवा लोपमां अने अलोपमां अे बन्नेमां उपयोगी ५ नो अंक थाय नहिं]. ॥ इति प्रश्नः।

अर्थः–हवे अहिं अेनो उत्तर दर्शावाय छे के–अे वात अेकान्त इष्ट नथी (अर्थात् लुप्त अक्षर कंई पण कार्य न ज करे अेम अेकान्त नथी) कारणके–कान्तः अचकथत् इत्यादि पदोमां लुप्त अकार पण वृद्धिना अभावमां प्रयोजनवाळो थयो छे. तेमज अंकविद्यामां [अंकगणितमां] पण केवळ बिंदुने अंकरहितपणुं छे [अर्थात् बिंदुने अंकमां गण्यो नथी] तो पण अंकनी पासे रहेलुं होय त्यारे अंक तरीकेज गणाय छे, अने जो तेम न होय तो अंकनी गणत्री ९ सुधीज थाय, परंतु १० मो अंक क्यांथी प्राप्त थाय? कारणके अंक अे शब्द वडे नवनीज संख्या गणाय छे. ते कारणथीज अंक संकलनामां बिन्दु प्राप्त होवा छतां पण ते बिन्दुनुं उल्लंघन करीनेज अंक संकलना थाय छे, अने तेथीज अंकगणत्रीनो क्रम (० थी नहिं पण) १ थी प्रारंभीने १० इत्यादि सुधी गणाय छे, अने अेज अपेक्षा अहिं (लुप्त थयेला ५ ना अंकमां) पण जाणवी.

अर्थः–तथा अंकगणितनी मुख्यतावाळा ज्योतिषशास्त्रमां पण उभयगति [लुप्तनो कोई वखते उपयोग अने अनुपयोग] दर्शावेला छे ते आ प्रमाणे—उदयनी अपेक्षाओ तिथिनो लोप थवा छतां पण ते लुप्त तिथि

Aho ! Shrutgyanam

पूर्व तिथिमां घटिकाओनी (घडीओनी) अपेक्षाये तिथिच्छेदादि दोषना प्रयोजनवाळी छे [अर्थात् क्षय तिथि जे तिथिमां आवी छे ते तिथिमां पण क्षयतिथिनो दोष उपजावनारी छे, अने तेथी यात्रादिने अंगे ते उदयतिथि पण क्षयतिथि तरीके मानीने ते ते कार्य थतुं नथी]. ते कारणथीज प्रत्ययनो लोप थवा छतां पण प्रत्ययनुं लक्षण सर्वथा जतुं नथी. तेथी अेकस्थानमांज वदा देशोऽनलविधौ अे प्रमाणे बे परिभाषा युक्त छे. तथा अलंकारशास्त्रमां पण अेकज शब्दथीज अनेक प्रकारना अर्थनो लाभ कह्यो छे, जेमके -[1] अनुदरा कन्या [कन्या उदर रहित छे], [2] अलोमा एडका (घेटां लोम रहित छे), इत्यादि वचनोमां विशिष्ट अर्थवाळी शक्ति होवाथी ते वचनो नो जूदो जूदो अर्थ थाय छे.

तथा वैदकशास्त्रीओ पण लंघन प्रसंगे लघु भोजनमां (अल्प अने हलका आहारमां) लंघन शब्दनोज व्यवहार करे छे, कारणके उत्सर्ग अने अपवाद अे बन्ने अेक[3]ज प्रयोजनवाळा छे. अने अे प्रमाणे होवाथी ६ ना अंकस्थानमां ५ नो अंक स्थापवो ते अतिप्रसंग दोषवाळो नथी, कारण सदृशपणानो नियोगक—प्रयोजक होवाथी. ते आ प्रमाणेः—प्रथम एक अने बे संख्यानुं सरखाणुं छें, ते सदृश पणुं संख्याना आदिपणाथी जाणवुं. [त्यां १ नो अंक तो संख्यानी आदि रूप स्पष्ट छेज, अने] २ नो अंक संख्यानी आदिरूप केवी रीते

---

[1] कन्या उदरवाळी स्पष्ट देखावा छतां पण "उदर रहित" वचन केहवाय छे ते विशिष्ट शक्तिवाळुं उदर अेटले गर्भधारण शक्तिवाळुं उदर नथी अे विशिष्ट शक्तिरूप अर्थथीज.

[2] घेटां सर्वे वाळ युक्त [लोम युक्त होवा छतां विशिष्ट लोम अेटले वस्त्र बनवा योग्य उनवाळा वाळना अभावे " घेटां लोम रहित केहवाय छे. अे रीते अे बे वाक्योना दरकेना बे बे अर्थ थया.

[3] जे साध्यसिध्धिने अर्थे उत्सर्ग छे, तेम अपवाद पण तेज साध्यासिध्धिने अर्थे होय छे, अने जो तेम न होय तो तेवो अपवाद वास्तविक रीते अपवाद न गणाय.

[4] ६ नो अंक जे कार्यसाधक (२० ना गणितनो) छे, तेम ५ नो अंक पण तेज कार्य साधक होवाथी ६ अने ५ अे बन्ने अंक सदृश गण्या छे.

Aho ! Shrutgyanam

छे ? ते दर्शावाय छे—लहुसंखिज्जं दुचिय [अर्थात् २ अेज लघुसंख्यात छे], अे प्रमाणें सिद्धान्तमां कहेलुं छे. अेमां पण अेक [१ नी संख्या] तो वस्तुसूप पणाना अभिप्रायथी संख्या रुप छे, अने अेमां तो आ पहेलुं अने आ बीजुं अे रीते पहेला बीज पणानी गणत्रीथी घोषपनुं [संख्यानुं स्पष्ट बोलवा पणुं] पण छे. आ माटे सदृश पणुं छे अे प्रमाणें नव अने दशमां पण संख्यातपणाना साधर्म्यथी सराखापणुं छे, [अर्थात् ९ जेम संख्यात कहेवाय छे, तेम १० पण संख्यातज छे माटे सरखा छे.] वळी विषम सम भावमां पण १ ने अने २ ने संबंध छे, जेम प्रथम दिवस अने त्यारबाद (बीजी) रात्री, अे प्रमाणें अे बेनो (१–२ नो अथवा पहेला बीजानो) संबंध (विषमभाव संबंध) छे, अने अेथीज केवळ बे परमाणुनो स्कंध ते द्व्यणुक, वळी अे रीते तार्किक मतमां अणु [अेक भावी अणु] मान्यो नथी, कारण के तेना मते [अेक अणु पण छ अणुना मानवाळो होवाथी. वळी जो के सिद्धान्तोमां त्रण अणु बडे त्र्यणुक कह्यो छे, तोपण द्विक त्रिकमां साधेक अनर्धकनो (द्व्यणुकादि स्कंधो अर्धयुक्त होवाथी सार्धक अने केवळ अणु वा प्रदेश ते निर्विभाज्य होवाथी अनर्धक अे रीते भाज्याभाज्यो) विरोध नही गणी गणीनेज कह्यो छे. वळी जोके अेक अने अनर्ध [निर्विभाज्य] होय तेज अणु कहेवाय, तो पण ते त्रिकनी साथे सदृशता वालो नथी, कारणके द्विकना व्यवधानवालो आंतरावालो छे. अने अेकमां अनर्धकता होवा छतां पण अव्यवधान होवाथी सदृश पणुं छे. अेक वस्तु सत् छे तोपण असत् सरखी छे, परन्तु बे वस्तुना सहभावे आस्तिक्य-सत् पणुं सार्थक छे. कारण संयोगादेव सिद्धिः [संयोगथीज सिद्धि] कही छे, अने संयोग बे वस्तुना सद्भावेज होय छे. अने ते कारणथीज सम्यग्ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः [सम्यग्ज्ञान अने क्रिया अे बेथीज मोक्ष कह्यो छे.] अेवुं वचन छे.

वळी शाब्दिकमतमां [वैयाकरणमां] पण सर्वादि पाठ पण अेक द्वि शब्द ने विषे छे, परंतु त्रण शब्दने नथी, अने अेथीज अेक सन्मुख द्विक [१ नी तुल्य २] कहेवाय छे. वळी शाब्दिको (वैयाकरणीओ) प्रथमा अने द्वितीया विभक्ति अे बेने[१] पण सदृश कहे छे, मुनेः इत्यादि

१ फलं फले फलानि [प्रथमा], फलं फले फलानि, द्वितीया, बहुवचने करिणः करिणः इत्यादिवत्.

Aho ! Shrutgyanam

शब्दोमां छट्टी अने पांचमी विभक्तिनुं अेक स्वरूप छे. माटे अे बन्ने विभक्तिओ पण अेकत्व वाचक छे, [अर्थात् बे विभक्तिओ अेक स्वरूप-वाळी होवाथी अेक छे], अे प्रमाणे अेकमां जेम अेक पणानो व्यपदेश छे, तेम द्विकमां--बे मां पण द्वि=बे रूप अेक पणानो व्यपदेश छे (अर्थात् द्विक कहेवाथी अेक जोड समजाय छे), परन्तु तेवी रीते त्रिकमां (त्रणने योगमां) तेवो अेकपणानो व्यपदेश नथी. कारणके बहुपणाने त्रणनी संख्या छे, अने ते बहुपणु पर्यवसानवाळुं [अन्ते रहेतु वा बोलातुं होवाथी पर्यन्तस्थानीय] छे, वळी अे प्रमाणे (जेम अेक बेने सहशता छे तेम) त्रण अने चारने पण सहशता छे अने ते सहशता स्थान विशेषमां कहेली छे [=नगर विगेरेमां मार्गने अंगे सिद्धान्तोमां कहेली छे], जो के कोई स्थाने नगरमां बे मार्गादिक होय छे, अने तेथी द्विमार्गादिकनो पाठ कहेवो जोईये छतां पण तियचउक्कचच्चरचउम्मुह इत्यादि सूत्रपाठमां त्रिक अने चतुष्टनुंज सहचारी पणुं देखाय छे, परन्तु बेनुं सहचारीपणुं देखातुं नथी. शब्दशास्त्रमां पण त्रिचतुरोः अेज सूत्र कहेलुं होवाथी, तेमज ज्योतिष शास्त्रमां पण चतुर्थनी [चोथ तिथिथी] भद्रा कृष्णपक्षनी त्रीजमां अन्त पामती कही छे, वेदोमां पण त्रणपणुं तथा चारपणुं (सहचारी) कह्युं छे, त्यां 'त्रयीव नतांग गुणेन विस्तरं इति श्री हर्षः, चउण्हवेयाणं सारऐ-इतिसूत्र. तथा वर्णोमां पण त्रणपणुं

१ विभक्ति विगेरेमां त्रण वस्तु माटे बहु वचनना प्रत्ययो लागे छे.

२ त्रण मार्ग ते त्रिक, चार मार्गवालुं स्थान चतुष्क, चत्वर आंगणुं विगेरे अने चतुर्मुख पण चार मार्गनुं स्थान विशेष छे.

३ अंगना गुणवडे पामेला गुणविस्तारने जाणे त्रिरुपतानेज पामी होय अेवी, अर्थात् गुणत्रण छे सत्वगुण-रजोगुण-तमोगुण. जेथी शरीर पण अे त्रणे गुणने पामेलुं छे. अेवी कोई स्त्री अंगे अे वाक्य संभवे छे. अथवा चालु विषयने अनुसारे " वेदत्रयीने पामेला शरीरवाळी " अे अर्थ पण संभवे.

४ चार वेदोनो स्मारक-संभारीने रक्षण करनार.

५ अे प्राकृतसूत्र जैन सिध्धान्तोमां उत्तम विप्रना वर्णन प्रसंगे आवे छे.

Aho ! Shrutgyanam

अने चारपणुं सहचारी छे, त्रिब्रह्मवर्णस्त्रयः–इति त्रिपुरास्तवमां (त्रिपुरा देवीना स्तोत्रमां) कह्युं छे. अने चार वर्ण [क्षत्रियादि] तो प्रसिद्धज छे. तथा [पुरुषार्थमां पण त्रण तथा चारनुं सहचारीपणुं छे तेमां] धर्म अर्थ काम ए त्रिवर्ग रूप त्रण पुरुषार्थ, अने मोक्षसहित चार पुरुषार्थ इति कोश वचनात्.

ए प्रमाणे ५ तथा ६ ना अंकनुं एकपणुं पण द्रष्टान्त सहित जाणवुं, ते आ प्रमाणे—कंईकस्थाने रस पांच कहेवाय छे, तेमां लवणरस भेदनी विवक्षाये छ रस पण कहेला छे, ए प्रमाणे इन्द्रियो पांच छे, पण ते साथे तेना विषयोनो १ भेद गणतां छ इन्द्रियो पण गणाय छे, ए प्रमाणे बे संख्या छे. कह्युं छे के—पंचेन्द्रियाणि त्रिविधं बलंच [पांच इन्द्रियो अने मन वचन काय बल ए त्रण बल], षडिन्द्रियाणि षड्विषया–[छ इन्द्रियो ते छ प्रकारना विषय, अर्थात् पांच इन्द्रिय अने छट्ठो विषय], इति केशवः अने ए कारणथीज हिन्दुमतमां [हिन्दी लिपीमां] पांचना अंकनी अने छ ना अंकनी बन्नेनी आकृति लगभग एक सरखी छे. वळी वक्रा पंचम षष्ठेंके [=पांचमां अने छट्ठा अंकमां वक्र आकृति छे] एम कह्युं पण छे. माटे ५ अने ६ ए बे अंकने सदृशपणुं छे– इति तात्पर्यः]

हवे ७ अने ८ ए बे अंकनुं एकत्व–सादृश्य दर्शावाय छे–सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छेई तथा सत्तट्ठ भवग्गहणाइं तथा सत्तपुढवीओ पन्नात्ताओ

---

१ ए पाठमां त्रिविधं बलंच एटलो पाठ गाथाना संबंध मात्रथी कह्यो छे, जेथी अहिं ए त्रण बलनी गणत्री करवी नहीं.

२ हिंदी लीपिमां ६ छगडानी आकृति ६ एवी छे, अने यवनलीपिमां ५ अथवा ६ एवी छे.

३ [गुरुजता होय ते वखते शिष्य] ७–८ पगलां गुरुनी पाछळ जाय.

४ (पंचेन्द्रिय संज्ञि तिर्यंच तथा संज्ञि मनुष्य वारंवार पोताना भवमां उत्पन्न थाय तो उत्कृष्टथी) सात अथवा आठ भव सुधी उत्पन्न थाय, त्यारबाद अवश्य अन्य भवमांज उत्पन्न थाय.

५ रत्नप्रभा विगेरे सात पृथ्वीओ (अनुक्रमे नीचे नीचे) कहेली छे.

Aho ! Shrutgyanam

अने कोईस्थाने अट्ठ पुढवीओ इत्यादि गमक सूत्रो [सूत्रना आलापक] कह्या छे तथा ज्योतिषमते अष्टमीनी भद्रा कृष्णपक्षनी सप्तमीमां अन्त पामे छे. तथा अतिवक्रा नगाष्टमे अे प्रमाणे ७–८ अंकनुं अेकत्व छे, अेम जाणवुं.

हवे ९ तथा १० अंकनुं अेकत्व दर्शावाय छे ते आ प्रमाणे—नवमे दशमे भानौ, जायते सरला गतिः [सूर्य नवमे अने दशमे (लग्न-कुंडलीमां) होय तो तेनी (जन्मेला मनुष्यनी) सरलगति थाय छे].

प्रश्नः—अे प्रमाणे ५ अने ६ ना अंकनी सहशता भले होय, परन्तु उभयार्थ पणुं [५ मां पांचनो अने छनो अर्थ तथा ६ मां पांचनो अने छनो अर्थ अेम बन्ने अर्थ] केवी रीते होय?

उत्तरः—जो तमो अेम पूछता हो के उभयार्थ केवी रीते होय ? तो दर्शावाय छे के अेक लकार पण जेम "अनिल" शब्दमां वायुना नामथी सहज रीते उच्चराय छे तेम तेज अेक लकार "अनल" शब्दमां अग्निना नामथी अन्य प्रयत्न वडे पण उच्चाराय छे. अथवा योगी योद्ध इत्यादि शब्दोमां जेम स्पष्ट उच्चार वडे य कार उच्चराय छे तेम नियोगी नियम इत्यादि शब्दोमां अस्पष्टपणे उच्चाराय छे अेम जाणवुं, तथा अे प्रमाणे व कारमां पण जाणवुं. तथा संवृत्त अेवो पण अंकार प्रक्रिया–नियोगथी [प्रक्रिया वशथी] विवृत गणाय छे, अने प्रत्याहारने अर्थे[1] उच्चारण अर्थवाळो होवा छतां पण सानुनासिक गणाय छे, तेथी अर्थना वशथी विभक्ति परिणामनी[2] पेठे अंकनी पण गणत्री नियोगथी [अर्थ–वशथी] अेकत्व वाळी अथवा अेकत्व रहित (=बे अंकनी सहशता अथवा असहशता) विचारवी, जेम वैर[3] आदिकनी पेठे. अथवा कारको [छ कारक] जेम विवक्षाथी [सहश असहश अर्थ दर्शावनारा] होय

१ प्रत्याहारमां ग्रहण करता अक्षेरानो वाचक होवा छता पण.

२ सदशस्वरूपवाळी होवा छतां पण तेज पहेली विभक्ति अने बीजी विभक्ति ना अर्थमां अथवा पंचमी तथा षष्टीना पण अर्थमां जूदी जूदा जणाय छे.

३ अहि विष भक्षणा दि बाह्य अर्थ ग्रहण न करतां वैरुप्यनी अंतर्भावनाथी तो ते विरुप कार्य थाय छेज अेवो भावार्थ संभवे छे.

Aho ! Shrutgyanam

छे, तेम अहिं पण ६ ना अंकमां ५ नी विवक्षा करवी. वळी अनुस्वारमां सिद्धान्तकौमुदिये स्वरसंज्ञा मानी छे, अने हेमव्याकरणना मते "क" आदि व्यंजनना अश्रयथी व्यंजनपणुं मानेलुं छे. जेमके—

भुवणानि निबध्नीयात्, त्रीणि सप्त चतुर्दश ।
चतस्रः कीर्त्तयेद्वाष्टौ, दशवा ककुभः क्वचित् ॥ १ ॥

अर्थः—भुवनो कोई स्थाने त्रण (=त्रण भुवन) कह्यां छे, कोई स्थाने सात भुवन कह्यां छे. अने कोई स्थाने (कोई शास्त्रमां) चौद भुवन पण कह्यां छे. तेमज दिशाओना संबंधमां पण कोई ग्रंथमां चार दिशाओ गणी छे, कोई ग्रंथमां ६ दिशाओ गणी छे, अने कोई ग्रंथमां दशदिशाओ पण गणी छे ॥ १ ॥

तथा समुद्र संज्ञाथी समुद्रोने कोई ग्रथमां चार गण्या छे, अने कोई ग्रंथमां सात समुद्र पण गण्या छे. तेमज स्वरोना संबंधमां पण कोई स्थाने त्रण अथवा पांच अथवा सात अथवा चौद अथवा नव पण स्वरो पण गण्या छे, ओ प्रमाणे सर्वस्थाने सर्व ग्रंथोमां जे स्थाने जेवी व्याख्या घटे ते स्थाने तेवी व्याख्या सर्व पंडितोने सम्मत होय छे, तेम अहिं पण सद्दश असद्दशना करणथी (५ तथा ६ ना अंकमां ओकत्व अनेकत्वनी भावनाथी) सद्दश पणा वडे [पांचनो अंक पण ६ सद्दश छे, अथवा ६ नो अंक पण ५ सद्दश छे अथवा लुप्त थयेलो ५ नो अंक पण कोई वखते स्वकार्य कर्ता छे ओम विचारीने] आ विंशति आदि सर्वे यंत्रो विसंवाद रहित जाणवा.

अथवा जेम छंदः शास्त्रमां लघु अक्षर पण पादने—चरणने (श्लोकना पहेला चरणने) पर्यन्ते होय तो गुरु गणाय छे, अने अहीदि गणमां संयोगपर वडे [अग्रे आवेला संयुक्ताक्षर—जोडाक्षर वडे गुरु अक्षर पण लघु गणाय छे, कारण के शास्त्र प्रवृत्ति अनिष्ट अर्थवाळी होती नथी ओ न्याय छे, माटे तेवी रीते अहिं यंत्रमां पण ते ते अंकोनी सद्दशता विचारीनेज निर्वाह करवो [=अविसंवाद पणुं जाणवुं, कारण के सतोगतिश्चिंतनीया [जे सत् छे तेनीज गति विचारवी]. ओ न्याय छे.

Aho ! Shrutgyanam

वळी भावना वडे कार्यसिद्धि नथी अेम अेकान्त नथी. कारणके—
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति?।
अे प्रमाणे प्राचीन मुनीओनुं वचन छे. तथा विष भक्षण तथा अशुद्ध नाणा विगेरेमां तो मूढपणानो दोष छे. (अने अहिं तो) सहकारी वैरूप्यंनी अन्तर्भावना मात्रथी ते ते कार्य थाय छे, अेम जाणवुं. वळी बिजी वात अे छे के—यंत्रोनी विचित्रगति छे माटे अेटलुं जाणीने पण संतोष मानवो, जेम कमलाआकृतिवाळा विंशति यंत्रमां चार गति छे [अेटले चार रीतिअे २० नो अंक प्राप्त थाय छे, अे आ प्रमाणे—] त्रिस्थानिका[1] दिग्गति–विदिग्गति परिधिसव्य–परिधिसव्येतर. तथा चार स्थानवाळा बारना यंत्रमां कोई गति त्रण गृहवडे अने कोई गति बे ज गृहवडे थाय छे, इत्यादि विस्तार गंगाप्रवाह ग्रंथथी जाणवो.

अे प्रमाणे दशनी सावर्ण्यतावाळा दशे अंकनुं[2] पण सावर्ण्य [सदृशपणुं] जाणवुं, अने ते कारणथीज चूडामणि शास्त्रमां अक्षरोमां पण अंकन्यास कहेलो छे, कारण के लिपिभेदवाळा अंकोवडेज वर्ण [3]अक्षरोनी भावना करेली होवाथी. अने वस्तुतः तो यंत्रोनी गतिज विचित्र

---

१ दिशिपंक्तिगत ३ खानां गणवाथी त्रिस्थानिकागति उर्ध्वाधः रीते बे प्रकारनी छे, ते पहेली दिग्गति, बे विदिशिपंक्ति गणवाथी बे प्रकारनी विदिग्गति. घेरावामां पूर्वथी चार अंकोनो सवाळो करवो ते सव्यपरिधिगति, अने ईशानांकथी चार अंक सुधीनो सवाळो करवो ते सव्येतर परिधिगति (अर्थात् जमणो घेरावो अने डावो घेरावो गणवाथी बे परिधिगति थई).

२	४	१
३	१०	७
९	६	८

आ कमलाकृतिमां ३–१०–७ तथा ६–१०–४ अे दिग्गतिथी २० थाय छे.

९–१०–१ तथा २–१०–८ अे बे विदिग्गतिथी २० थाय छे.

४–१–७–८ अे जमणा परिधिमां २० थाय छे.

अने २–३–९–६ अे डावा परिधिमां २० थाय छे.

२ जे १–२ तथा ३–४ अे बे बे अंकोनी सदृशता कही ते रीते १ थी १० सुधीना दशे अंकनो पण परस्पर सदृशता दशपणानी समानता वडे जाणवी.

३ जेम अर्हन्‌मां अ कारथी ८ र् कारथी २ ह् कारथी १० (इति २०). इत्यादि रीते.

Aho ! Shrutgyanam

छे अेम मानीनेज संतोष करवो, परंतु शास्त्र विरोधना विवादो वडे अंकोनी भावना न करवी. कारणके यंत्रोमां अंकन्यासनी बीजी कोई गतीज नथी.

अे प्रमाणे विंशतिनो [२० अंकनो] नव गृह (नव खानां] वाळो यन्त्र वर्तमानकाळमां पण जेनी सेवा अभयने आपनारी अने जयने आपनारी छे, तेनी सेवामां आसक्त रक्त थयेला अेवा देव वडे अनुषक्त (देवाधिष्ठित) छे, तथा विजय विधिनुं निधान छे, दुर्जनोने तर्जना रुप छे, अेवो आ अर्जुन पताका नामनो विंशति यंत्र वैभवनो हेतु थाओ ॥ १ ॥

प्राचीन पंडितोअे आ यंत्रोमां (नव खानावाळा यंत्रोमां) त्रीजो भाग करवाथी शेष अेक रह्ये छते पण [कृत=४ गुण=३ अेटले] चोत्रीसनो यंत्र करेलो छे, अने बे शेष रहेतां पण (ख=० बाण=५ अेटले) पचासनो यंत्र करेलो छे, माटे ते पंडितोना मार्गने अनुसरनारी बुद्धिवाळा अने उपाध्याय पद प्रतिष्ठित अेवा श्री मेघविजयजी उपाध्याये आ विहरमान जिननो विजयकारी अथवा विजय नाम नो विंशति यंत्र स्पष्ट कर्यो छे–प्रगट कर्यो छे. ॥

॥ इति श्री विजययन्त्रे विंशति यन्त्रन्यासः ॥

११	३	८
५	७	१०
६	१२	४

२१ ॥२२॥

११	३	९
५	८	१०
७	१२	४

२४ ॥२३॥

११	४	९
६	८	१०
७	१२	५

॥२४॥

१२	४	९
६	८	११
७	१३	५

२४ ॥२५॥

१२	४	१०
६	९	११
८	१३	५

२७ ॥२६॥

१२	५	१०
७	९	११
८	१३	६

॥२७ ॥

१३	५	१०
७	९	१२
८	१४	६

२७ ॥२८॥

१३	५	११
७	१०	१२
९	१४	६

३० ॥२९॥

Aho ! Shrutgyanam

१३	६	११
८	१०	१२
९	१४	७

॥३०॥

३०

१४	६	११
८	१०	१३
९	१५	७

॥३१॥

३३

१४	६	१२
८	११	१३
१०	१५	७

॥३२॥

१४	७	१२
९	११	१३
१०	१५	८

॥३३॥

१

१५	७	१२
९	११	१४
१०	१६	८

३३ ॥३४॥

१५	७	१३
९	१२	१४
११	१६	८

३६ ॥३५॥

२

२०	१२	१८
१४	१७	१९
१६	२१	१३

५१ ॥५०॥

७	ॐ	५
२	४	६
३	८	१

॥१२॥

कमलाकृति

२	४	१
३	१०	७
९	६	८

॥२०॥

दशगतिका

३॥।	१०	१।
२॥	५	७॥
८॥।	नाम	६।

॥१५॥

३	८	१
२	४	६
७	नाम	५

॥१२॥

३॥	१०	१॥
३	५	७
८॥	नाम	६॥

॥१५॥

४॥	१२	१॥
३	६	९
१०॥	नाम	७॥

॥१८॥

४	१२	२
४	६	८
१०	नाम	८

॥१८॥

४॥	१४	२॥
५	७	९
११॥	नाम	९॥

॥२१॥

५।	१४	१॥।
३॥	७	१०॥
१२।	नाम	८॥।

॥२१॥

१-२ अहिं अे ३४ तथा ५० नो यंत्र प्रधान छे. चोत्रीसना यंत्रमां त्रिभागे ११ प्राप्त थया तेमांथी चार न्यून करतां ७ बीजा गृहमां स्थाप्या छे. तथा पचाशनो यंत्रमां त्रीजे भागे १६ प्राप्त थया तेमांथी चार न्यून करतां १२ बीजी गृहमां थाप्या छे.

Aho ! Shrutgyanam

१ पुष्पाकृति

१	१२	७
९	६	५
१०	२	८

२०

२	१६	६
१२	८	४
१०	नाम	१४

॥२४॥

५	१६	३
६	८	१०
१३	नाम	११

॥२४॥

८	त्रु	५
२	४	७
३	९	१

१२ ॥१३॥

८	ॐ	६
२	५	७
४	९	१

१५ ॥१४॥

पक्षाहिगत्या

ि७	ि०	ि५
ि२	ि४	ि६
ि३	ॐ ि८	ि१

१२

पक्षाहिगत्या

७ी	०ी	५ी
२ी	४ी	६ी
३ी	८ी	१ी

१२

प्रथम करणे

३॥।	१०	१।
२॥।	५	७॥
८॥।	नाम	६।

१५

द्वितीय करणे

३॥	१०	१॥
३	५	७
८॥	नाम	६॥

१५ यंत्रमिदं

शुद्रे उत्तम

१	६	१३
२	१०	८
१७	४	९

२०

ब्राह्मणे उत्तमः

१७	२	१
४	१०	६
९	८	१३

२०

१ पुष्पाकृतिमां ५ ना द्विगुण १० मां १० मेळव्ये [५–२–१० थी] २० थया. पुनः ६×२=बार मां ८ मेळव्ये २० थया. अे बे गति, अने उर्ध्व ३ गति तथा आयत दीर्घ त्रण गति (१०–९–१ । २–६–१२ । ८–५–७ । ९–६–५ । १०–२–८) अे ६ गति प्रसिद्ध छे. पुनः ६×२ बारमां ७–१ मेळवतां २० । अथवा १२–८ मेळवतां २० । अथवा ८–५–६–१ मेळवतां २० । अथवा १०–२–७–१ मेळवतां २० । अे प्रमाणे १२ गति थाय छे.

Aho ! Shrutgyanam

अथ इष्ट यन्त्रे अंकन्यास रीति ॥ ८ गृहात्मिका ॥

इष्टस्यराशेः क्रियते त्रिभाग--
स्त तृत्र्यंशकस्यापि तुरीयभागः ।
गुणा ३ ब्धि ४ भू १ मध्य ५ नवां ९ ग ६ सप्त ७ ।
भुजे २ षुधार्यः कृत ४ भागवध्या ॥ १ ॥

अर्थः–इष्ट राशिनो (जेटला अंकनो यंत्र बनाववो होय ते अंकनो) त्रीजो भाग करवो. [अने मध्यमां स्थापवो]. ते त्रीजा अंशनो पुनः चोथो भाग गुण=३, आब्धि=४, भू=१, मध्य ५, नव=९, अंग=६, सप्त=७, अने भुज=२ अे नंबरवाळा आठ गृहोमां क्रमशः (बारना) चोथा भागनी वृध्दि सहित [मध्यांकना चोथा भागनी वृध्दि सहित] अंकस्थापना करवी. (अे आठ गृहवाळा यंत्रमां अंकस्थापना दर्शावी छे.) ॥१॥इति प्रथमा रीतिः॥

इष्टस्यराशेः क्रियते त्रिभागः ।
समध्यगस्त द्विगुणे द्वितीये ।
त्र्यंशाद्द्विहान्या जलधौ ४ द्विवध्या ।
षष्ठे तदर्धं पुनराद्य कोष्टे ॥ २ ॥

---

१ धारो के इष्ट राशि ३६ नो यंत्र आठ कोठामां बनाववांनो होय त्यारे स्थापना आ प्रमाणे अहिं ३६ नो त्रीजो भाग १२ मध्यमां अेटले पांचमां गृहमां ते बारनो चोथो भाग ३ त्रीजा गृहमां, तेमां पुनः बारनो चोथो भाग त्रण अधिक करवाथी ६ चोथा गृहमां, तेमां पुनः बारनो चोथो भाग त्रण उमेरतां ९ पहेला गृहमां, तेमां पुनः बारना चोथा भाग त्रण उमेरतां १२ मध्यमां स्थापेलाज छे. पुनः तेमां बारनो चोथो भाग त्रण उमेरतां १५ नवमां गृहमां, पुनः तेमां बारनो चोथो भाग त्रण उमेरतां १८ छठ्ठा गृहमां, पुनः तेमां बारनो चोथो भाग त्रण उमेरतां २१ सातमा गृहमां, पुनः तेमां बारनो चोथो भाग त्रण उमेरतां २४ बीजा गृहमां अे प्रमाणे ३६ नो यंत्र स्थापवो.

	१	२	३	
	९	२४	३	
४	६	१२	१८	६
	२१	नाम	१५	
	७	८	९	

Aho ! Shrutgyanam

तुरीय कोष्टार्ध मधो तृतीये । शेषेच शेषं प्रविचार्य धार्यम् ॥
समेंक साम्यं विषमेर्धपाद पादोनरीत्याऽष्ट सुकोष्टकेषु ॥ ३ ॥

अर्थः–इष्ट राशिनो त्रीजो भाग करवो, ते मध्यगृहमां स्थापवो, अने तेथी [मध्यगृहना अंकथी] द्विगुण अंक बीजा गृहमां स्थापवो. ते त्रीजा भागथी द्विहानि (द्विगुणहीन एटले अर्ध) अंक [जलधि=४ एटले] चोथा गृहमां स्थापवो अने द्विवृद्धि (चोथा गृहना अंकथी द्विगुण अधिक अर्थात् चतुर्थ गृहांकने द्विगुण करी तेज गृहांकमां अधिक उमेरो तेटलो अंक छठ्ठा गृहमां स्थापवो, अने एज छठ्ठा गृहना अंकथी अर्ध अंक पहेला गृहमां स्थापवो, तथा चोथा गृहना अंकथी अर्ध अंक त्रीजा गृहमां स्थापवो, अने शेष गृहोमां [शेष बे गृहमां] बाकीना अंक गणत्री विचारीने [इष्ट राशि प्राप्त थाय तेवी रीते तेटला अंक] स्थापवा. तेमां जो सम अंक आवे तो गृहोमां सम अंक स्थापवो, अने जो विषम अंक होय तो तेमां अर्ध चोथो भाग अथवा पोणो भाग स्थापवो, ए रीते आठे गृहोमां अंक स्थापवा. ॥ २ ॥ ३ ॥ इति द्वितीया रीतिः ॥

इष्टस्यराशे क्रियते त्रिभागः ।
समध्यगस्त द्विगुणो द्वितीये ॥
त्र्यंशार्ध मध्वौस रसे ६ च सार्धो ।
रसा ६ र्ध माद्ये च १ गुणे ३ कृता ४ र्धः ॥ ४ ॥

यथा त्र्यंशे इष्टस्य षट् त्रिंशद्राशे ३६ द्वादश १२ तदर्ध षट् चतुर्थ कोष्टे स एवत्र्यंशः १२ सार्ध गुण १८ षष्ठ कोष्टेदेयः, षष्ठकोष्टार्धं प्रथमेदेयं, तुर्यकोष्टार्धं तृतीयकोष्टे धार्यमित्यादि गंगाप्रवाहे ॥

अर्थः–इष्ट राशिनो त्रीजो भाग करवो, अने ते मध्यगृहमां स्थापवो, बीजा गृहमां तेथी [मध्य गृहथी] द्विगुण अंक स्थापवो, [अब्धि=४

१ ओ बिजी रीति पण आ स्थापेला ३६ ना यंत्र उपरथी विचारवी सुगम छे.

२ प्रथम स्थपाई गयेला बे प्रकारना पंदरीया अने एक अढारना यंत्रमां जे रीते पा अर्धा ने पोणा भाग यथायोग्य स्थाप्या छे. तद्वत्.

Aho ! Shrutgyanam

अेटले] चोथा गृहमां ते त्रीजा भागनो अर्ध अंक स्थापवो, वळी तेज त्रीजा भागनो दोढ गुणो अंक [रसे=६=] छट्ठा गृहमां स्थापवो. (रसार्ध=) छट्ठा गृहथी अर्ध अंक आद्य=पहेला गृहमां स्थापवो, अने [गुणे=३ अेटले] त्रीजा खानामां कृत=चोथा गृहथी अर्ध अंक स्थापवो ॥ ४ ॥

इति तृतीया रीतिः ॥

अर्थः जेम इष्ट राशि छत्रीस होय तो तेनो त्रीजो भाग १२ अने तेनुं अर्ध ६ ते चोथा गृहमां, अने तेज त्रीजो भाग जे बार तेनो दोढ गुणो अंक अेटले १८, तेने छट्ठा गृहमां स्थापवो, अने छट्ठा ग्रहनो (१८ नो) अर्ध भाग ९, तेने पहेला गृहमां स्थापवो, अने चोथा गृहनुं [छनुं] अर्ध ३, तेने त्रीजा गृहमां स्थापवो, इत्यादि रीति गंगाप्रवाह ग्रंथमां कही छे. ॥

श्रीमत्प्रश्नेश्वर ग्रंथा-द्कारेष्ट ध्रुवःस्मृतः ।
रेफेद्वौ समरसारात् । हे दिशो नष्टचक्रतः ॥ ५ ॥

अर्थः-श्री प्रश्नेश्वर ग्रंथथी अकारने ८ ने ध्रूवांक गण्यो छे, समरसार ग्रंथथी अहिं रेफने २ नो ध्रूवांक गणवो, अने नष्ट चक्र ग्रंथथी ह कारने दिशः=१० नो ध्रूवांक गणवो [जेथी अर्हं पदथी ८-२-१०=२० विहरमान थाय छे. ॥ ५ ॥

तच्चक्रं ज्ञानमंजर्यां । ते ना भूर्द्विशयंत्रकम् ।
स्याद् ज्ञापकं चास्यसानु-स्वाराकारानुयोजनम् ॥ ६ ॥

अर्थः-ते चक्र ज्ञानमंजरी ग्रंथमां कह्युं छे, तेथी ते चक्रवडे पण २० नो यन्त्र थयो. अने ते [२० नो अंक] अनुस्वार सहित अकारनो संबंध जणावनारो छे. ॥६ ॥ ते आ रीते—

दोतिन्नीत्यादि गाथायां । अकारे पिद्धिकांकतः ।
बिंदोः स्पष्ट तयैवोक्ते । विंशसंख्या प्रबोधनम् ॥ ७ ॥

अर्थः-दो तिन्नि [बे त्रण] इत्यादि पदवाळी गाथामां अकारमां पण २ नो धृवांक कह्यो छे, अने बिन्दु तो स्पष्टज कहेलुं छे, जेथी अम् शब्द पण २० नी संख्याने जणावनारो छे. [२-०=२० ॥ ७ ॥

Aho ! Shrutgyanam

पुनरप्यष्टतेऽकारे । मात्रांकैकस्य मेलने ।
जातः सनवकोसाग्रे । रेफेऽष्टौनष्ट चक्रतः ॥ ८ ॥

व्यंजनेत्वात्तदेकोन– भावेमध्यग सप्तकः ।
हकारेऽग्रे कृत४ मितां–प्रश्नेश्वर धृतध्रूवात ॥ ९ ॥

शेषंप्रागवदिहापिस्यात् । तृतीयालिस्थितौपुनः ।
समात्रांका वकारे द्वौ । जज्ञेतेन त्रिकोग्रिमः ॥ १० ॥

अर्थः–वळी बीजी रीते पण विचारीअे तो अ कारमां ८ नो ध्रूवांक छे, तेमां "अ" कार मात्रावाळो छे माटे मात्रानो अेक अंक मेळवतां ९ थया ते नीचे स्थापवा, ते "अ" नी आगळ पुनः [१] रेफ छे. ते रेफनो ध्रूवांक नष्टचक्रमां ८ नो कह्यो छे, परन्तु रेफ पोते व्यंजन होवाथी अेक बाद करतां ७ नो अंक प्राप्त थयो तेने [विंशति यंत्रना] मध्यगृहमां स्थापवो. ते रेफनी पछी ह कार आव्यो तेनो ४ ध्रूवांक प्रश्नेश्वर ग्रंथमां कह्यो छे माटे ते चारने ७ नी पछी [पश्चात्] स्थापवा. शेष गृहो बाकी रह्यां तेने वीसनो मेळ मळे अेवा अंकोथी पूरवा अेम पूर्वे कह्युं छे तेम अहिं पण जाणवुं, वळी त्रीजी पंक्तिमां रहेलां मात्रा सहित अंकवाळा बे अकार छे माटे तेने पछीनो–नीचेनो अंक [१ अधि+करवाथी] ३ नो प्राप्त थाय छे. ॥ ८–९–१० ॥

---

१ अहिं अर्हम् पदथी विंशति यंत्र करवानो छे, त्या अर्हम् पदमां अ [२] ह् अं अे अहिं

पंक्ति १	२	३
१०	२	अ ८
ह ४	८ ७	अ ९
८ ह ५	अ ११	अ ३

अंकस्थापन गतिनो क्रम प्रथम ___ां अे आकारे थई ने पुनः– अे आकार थयो. अे बन्ने क्रम जमणी बाजुथी प्रारंभाईने डावी बाजू पूर्ण थाय छे. अेमां त्रीजी पंक्तिनों त्रण गृह जूदा जूदा अ कारवाळां छे, अने शेष गृहमां र कार विगेरे दर्शाव्या छे, ते प्रमाणे श्लोकार्थने अनुसारे २० नो मेळ विचारवो.

२ अर्थात् पहेलो उपरनो अ मात्रा सहित होवा छतां मात्रानो अंक गण्यो नथी अने नीचेना अ पण मात्रा सहित छे तेनो मात्रानो अंक गणायेलो छे, जेथी १ मात्रा अने २ अ मळीने ३ नो अंक सर्वथी नीचे आव्यो.

Aho ! Shrutgyanam

अंइत्यस्यर होऽत्यागा देकादशततो ग्रिमा ।
रेफेद्वौहे कृत ४ मिता-स्तद्योगे षट् निवेशिताः ॥ ११ ॥

रेफस्य व्यंजनत्वे नै-कोनत्वे पंचवा स्थिताः ।
अर्हं पदाद्विंशयंत्रं । मेघादि विजयोदितं ॥ १२ ॥

तथा अं [अर्हं मांनो अं] र=७ तथा ह्=४ ने नहिं छोडीनो रह्यां छे माटे ते [७+४=] ११ नो अंक अग्रे [अेटले ३ नी] पश्चात् स्थापवो. तथा रेफनो २ अने ह् नो ४ धुवांक छे, ते बे मळीने ६ थाय माटे ६ नो अंक अगिआरनी पश्चात् स्थापवो. वळी रेफ अे व्यंजन छे, माटे अेक न्यून करवाथी ५ नो अंक आवे छे, माटे ते पण ६ नी साथे स्थापवो अे प्रमाणे श्रीमेघविजयजी उपाध्याये कहेलो २० नो यंत्र अर्हं पदथी सिद्ध कर्यो. ॥ इति अर्हं पदेन विंशाति यंत्रम् ॥ ११ ॥ १२ ॥

॥ इत्यर्हं पदेन विशयंत्र व्यवस्था ॥

९	२४	३
६	१२	१८
२१	धारक नाम	१५

३६

एकादयःस्यु नव यावदंकाः ।
यंत्रे यतः पंच दश प्रसिद्धे ॥
द्वाद्या दशांता धृति यंत्रकेऽकाः ।
व्यक्तोऽधिके स्माद्गणितेर्थ भेदः ॥१३॥

॥ अथ विंशातियंत्रे ३ तः ११ अंकहेतुः ॥

अर्थः-जे कारणथी १५ ना अंकथी प्रसिद्ध अेवा यंत्रमां (पंदरीया यंत्रमां) १ थी प्रारंभीनें ९ सुधीना अंक होय छे, अने धृति=१८ ना यंत्रमां बेथी दश सुधीना नव अंक होय छे ते पंदरियाथी अधिक अंक होवाथी अे गणितनो अर्थ भेद युक्त छे ॥ १३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

क्रमागतांके न विलोपनंचे- ।
त्कथं तदेका दश चांकतःस्युः ॥
द्वयाद्यिक त्वा न्नवसुस्थलेषु ।
अंकेतदेकत्र कृतोर्थ भेदः ॥ १४ ॥

अे १५– तथा १८ यंत्रमां (आवेला ९–९ अंको) अनुक्रमे आवेला होवाथी क्रम प्राप्त थयेला कोई पण अंकनो लोप थयो नथी, परन्तु २० ना यंत्रमां क्रमे आवता अंकोमांथी अेक अंकना लोप करवो पडे छे, अने जो ते क्रमे आवता अंकोमांथी अेक अंकोनो लोप न करीअे तो आदि अंक २ नो होवाथी अथवा बे अंक होवाथी (अेटले पंदरीयानो पर्यन्त अंक ९ त्यारे विंशतिनो पर्यन्तक ११ (अेटले २ थी ११ सुधीना १० अंक) होवाथी ते १० अंको नव गृहोमां केवी रीते स्थपाय ? ते कारणथी अेक अंकमां अर्थ भेद करवो पडे छे, [अर्थात् नव खानांमां दश अंको न गोठवाई शकवाना कारणथी अेक अंकनो अेक लोप करवो पडे छे.]॥१४॥

यंत्रेतदेकाधिक विंशबिद्धे ।
एकादशांता स्त्रिमुखाहितेंकाः ।
एकोनतायामपि विंशयंत्रे ।
विनार्थभेदं गतिरस्तिनान्या ॥ १५ ॥

अर्थः–अने ते कारणथीज अेक अधिक वीस [२१] ना यंत्रमां त्रणथी प्रारंभीने अगिआर सुधीना नव अंक छे, जेथी तेमां अंक लोप करवो पड्यो नथी, अने वीसनो यंत्र अेकवीसनी अपेक्षाअे अेक न्यून होवा छतां पण अंकलोप थाप छे, माटे विंशति यंत्रमां अर्थ भेद विना [अंक लोप विना] बीजी कोई गति नथी ॥ १५ ॥

जघन्यभावेनजिनादशस्युः । जिनद्वयं२वर्णभिदाऽष्टतेपि ॥
नित्याजलेशा४पुनरत्रसिद्धा२४ गत्वात उच्चैर्नग७रज्जुदेशम् ॥१६॥

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः- (हवे विंशति यंत्रमां दश आदि अंको तथा तेनो क्रम स्थापवामां २४ तीर्थंकरनी गणत्री दर्शावाय छे ते आ प्रमाणे—) जघन्यथी १० तीर्थंकरोनो समकाळे जन्म थाय छे, माटे प्रथम दशनी स्थापना, त्यार बाद बे आठ तीर्थ करो[=सोल तीर्थ करो] वर्ण भेदथी छे [सुवर्ण वर्णना छे] माटे २ तथा ८ नो अंक स्थापवो. त्यार बाद जलेशाः = ४ तीर्थंकर गणतां सिद्ध=ते चोवीसे तीर्थ करो उर्ध्वलोकमां नग ७= रज्जु उंचे जईने सिद्ध थया माटे ७ नो अंक स्थापवो. ॥ १६ ॥

ध्येया इतोऽमी नवभेद मुक्त्या ।
मूर्ध्नित्रिलोक्याः शिव ११ शर्मभाजः ॥
षट् ६ पंचवा ५ केवल बोध दृष्ट्या ।
द्रव्याणि नित्यं परिभाषयंतः ॥ १७ ॥

अर्थः-त्यारबाद अे चोवीसे सिद्धनुं स्वरुप मोक्षना नव भेद वडे (सत्पदादि नव अनुयोगद्वारवडे) ध्येय-भाववा योग्य छे, माटे ९ नो अंक स्थापवो. तथा त्रण लोकने मस्तके शिवशर्म=शिवसुखने भजनारा थया, माटे (शिव=) ११ नो अंक स्थापवो, (परन्तु मोक्षे जवा पहेलां) ते तीर्थंकरो केवल ज्ञान अने केवल दर्शन वडे नित्य छ अथवा पांच द्रव्यनी परिभावनावाळा (ध्यान वा उपदेशवाळा) हता तेथी [अगिआरना अंक पहेलो] ६ अने ५ नो अंक स्थापवो. (जेथी प्रथम ६ नो मुख्य अंक स्थापीने गौणपणे लुप्त करेलो ५ नो अंक पण स्थापवो. त्यार बाद ११ नो अंक स्थापवो. ॥ १७ ॥

अप्रदेशतयाऽस्कंध-भावाद्द्रव्याविवक्षया ॥
कालः स्याद्द्रव्यपर्यायो । द्रव्यपंचकमेवतत् ॥ १८ ॥

अर्थः-[छ तथा पांच द्रव्यनुं कारण आ प्रमाणे—]— काळ द्रव्य प्रदेश रहित होवाथी स्कंध रहित पण छे (अर्थात् काळ द्रव्यनो स्कंध नथी तेम प्रदेश पण नथी) माटे तेमां द्रव्यनी विवक्षा न करवाथी काळ द्रव्य पर्याय रहित [द्रव्य अेवा नामथी रहित] छे. जेथी द्रव्य पांचज

Aho ! Shrutgyanam

गणाय छे [त्यारबाद ३ ना अंकनी स्थापनानुं कारण स्पष्ट कह्युं नथी ते यथा संभव स्वतः विचारवुं]. ॥ १८ ॥

चत्वारो ४ दश १० च द्वौ २ ता–वष्टे ८ ति स्फुटिकाचले ॥
तीर्थे जिनाःस्थिता बिंबे–स्तदंकै विंशयंत्रकम् ॥ १९ ॥

अर्थः–अथवा बीजी रीते विचारतां (स्फुटिकाचले तीर्थे =) अष्टापद तीर्थ उपर ४–१०–२–८ तीर्थंकरोनी प्रतिमाओ रहेली छे, माटे ते चोवीस प्रतिमाओना अंक सहित आ विंशतियंत्र थाय छे. ॥ १९ ॥

प्राच्यां जैनं द्वयं तत्र । दक्षिणस्यां चतुष्टयम् ॥
उदगासन्न इशान–देशे दश जिनाःस्थिताः ॥ २० ॥

अर्थः–त्यां अष्टापद पर्वत उपर पूर्वदिशामां २ तीर्थंकर, दक्षिणमां ४ * अने उत्तर दिशा पासे ईशान दिशामां १० जिनेश्वरो रह्यां छे. ॥ २० ॥

प्रतिच्यामष्ट चाग्नेय्या–मिहतेपि प्रसंगतः ॥
पूर्व देश जनुर्मुक्त्यो–र्थदिवाऽभ्युदयश्रियाः ॥ २१ ॥

अर्थः–तथा पश्चिममां ८ जिनेश्वरो कह्या छे, ते अहिं प्रसंगने अनुसरे अग्निकोणमां गणवा. कारणके " पूर्वदेशमां जन्म अने मोक्ष थवा वडे " अे अर्थथीज अभ्युदित लक्ष्मीवाळा [अे ८ जिनेश्वरोने पूर्व तरफना अग्निकोणमां गण्या छे.] ॥ २१ ॥

षट् ६ सप्त ७ दिगतो वाष्ट ८ ।
त्रि ३ वार्ध्यां ४ दिगतौततः ॥
अष्टाप्राचीप्रतीच्योस्ते–
प्यंतराले प्रतिष्ठिताः ॥ २२ ॥

* यंत्रमां ४ नो अंक उत्तरमां आवेछे.

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः-तथा छट्टी सातमी आदि गतिमांथी ८ नो अंक छे, तथा त्रीजी चोथी विगेरे गातिमां पण आठनो अंक छे तेथी ए आठनो अंक वा जिनेश्वरो दक्षिण अने पश्चिम दिशिने वच्चे पण रहेला गणवा. ॥ २२ ॥

उत्तमा क्षत्रिय गतिः । षट् सप्ताद्या ततःस्मृता ॥
पद्माकृतौ विंशयंत्रे । तथैवाष्ट निवेशिताः ॥ २३ ॥

अर्थः-क्षत्रिय गति उत्तम छे, तेथी छ अथवा सातथी प्रारंभीने (पूर्वमां ६ अथवा ७ नो अंक स्थापीने) विंशति यंत्र होय छे, अने ते कारणथीज पद्माकृतिवाळा विंशति यंत्रमां पण ८ नो अंक तेवी रीतेज [एटले ६-७ नी वच्चेज] रहेलो छे—स्थापेलो छे. ॥ २३ ॥

यद्यप्यंक परावृत्ति । गतिभेदेन दृश्यते ॥
नास्तिदिग् निश्चयःप्रोक्त । स्तथाप्येषा व्यवस्थितिः ॥ २४ ॥

अर्थः-जो के गतिभेदोथी अंकपरावृत्ति देखाय छे तेथी [एटले भिन्नभिन्न गति वडे स्थपाता विंशति यंत्रोमां अमुक अंक अमुक गृहमांज रही शके एवो] दिशिनो निश्चय कह्यो नथी, तो पण विशेषतः आ आगळ कहेवाथी व्यवस्था निश्चित कहे छे. ॥ २४ ॥

पक्षा २ हि ९ सिंधु ४ शैला ७ दि-रुत्तमा ब्राह्मणेगतिः ॥
अनुरोधादियंतस्या । प्रतिष्टांकेषुनिश्चिता ॥ २५ ॥

अर्थः-पक्ष=२ अहि=९ सिंधु=४ शैल=७ इत्यादि क्रमवाळी ब्राह्मणगतिज उत्तम छे, माटे ते अनुरोधथी [ते ब्राह्मणगतिने अनुसरीने]अंकोने विषे एज प्रतिष्ठा-स्थापनक्रम (पूर्वमां २ दक्षिणमां ९ उत्तरमां ४ मध्यमां ७ इत्यादि घणीवार वर्णवायेलो क्रम] निश्चित थयो छे. ॥ २५ ॥ इति विजययंत्रे विंशति यंत्रांकप्रतिष्ठा ॥ इति अंक हेतुः ॥

१ प्रथम वीस प्रकारनी गतिओ दर्शावी छे तेमांनी गति अथवा (इशानमां ६ वा ७ थी प्रारंभाती क्षत्रियगति. तेवीज रीते वैश्य गति. इत्यादि.

Aho ! Shrutgyanam

इति विजययंत्रे विंशति यंत्रांक प्रतिष्टा

१० र.	२ चं.	८ मं.
४ बु.	७ गु.	९ शु.
५ श.	११ रा.	३ के.

६ ५	४	१०
११	७	२
३	९	८

उ. क्ष. २०

६	११	३
४	७	९
१०	२	८

वै. म. २०

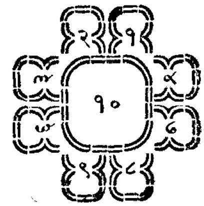

ईशानेंशदिगी १० श्वर स्थितिरपि स्वांगेपिपंचानन-
द्वैगुण्याद्द्वय द्वयमर्ध तोद्रितनया रोधे न हंसद्वयात् ॥
अष्टौसिद्धय एव मूर्तयइवांभोराशिनिर्मंथनं ।
सप्रांबा नवनेत्र षट् भुजधरस्यास्मात् ज्वरस्योद्भवः ॥ १ ॥

अर्थः-ईशान दिशामां १० नो अंक ते ईश्वरनी-महादेवनी शरीरसंबंधि दशास्थितीने सूचव नारो छे, कारण के महादेवनुं पंचानन नाम होवाथी पंच मुख छे, अने अर्धांगमां पार्वती होवाथी बे शरीर महादेवनां थयां तेथी पांचने बमणाकरतां १० स्थिति थई. तथा अर्धांगे पार्वती होवाथी महादेव द्विरूप थवाथी दश पछी २ नो अंक आवे छे. तथा आठ सिद्धि अेज जेनी आठ मूर्ति जेवी छे, तेथी ८ नो अंक आवे छे, तथा अंभोराशि =समुद्रनुं मंथन कर्युं तेथी समुद्र साथनी संख्याअे गणाता होवाथी ७ नो अंक आवे छे, तथा अेनाथी नवनेत्र अने छ भुजा वाळा ज्वर ( ) नी उत्पात्ति होवाथी (त्रिमूर्ति होवाथी) नव नेत्र अने छ भुजानी अपेक्षाअे ९ तथा ६ नो अंक आवे छे, ॥ १ ॥

संख्यैकादशद्दक्त्रयी विजयकृद्दानंजयस्यार्जुनेऽ-
प्यैश्वर्यार्थिषु विंशयंत्र करणे ध्येयानि वस्तून्यतः ॥
यावद्दूर गता रमापिपरमार्धांगीभवंती स्थिरा ।
गेहेतद्द्दुघा भवेच्चवसुधाधीशोपिवश्यः स्वयं ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः–महादेव अगिआर होवाथी ११ नो अंक, विजयकारी अेवां त्रण नेत्रवाळा होवाथी ३ नो अंक आवे छे. ओ प्रमाणे अर्जुनने पण अेश्वर्यादिकमां जय आपनार आ यंत्र छे, माटे विंशतियंत्र करणमां अे अे वस्तुओ ध्येय–ध्यान करवा योग्य छे, तथा गर्भे तेटली दूर गयेली उत्कृष्ट लक्ष्मी स्त्री तुल्य अर्धांगना थाय छे, अने घरमां स्थिर थई रहे छे. वळी अे यंत्रथी बहुधा (विशेषे करीनें) वसुधाधीश–राजा पण पोताने वश थाय छे ॥ २ ॥ इति विंशति यंत्रे महादेवावतरणम् ॥

वीरेवतारो दशमद्युलोकात् । व्रतं दशम्यां वरकेवलाप्तिः ।
द्वैमातुरे धर्मयुग तथाष्ट--वर्षे महावीर पद प्रातिष्ठा ॥ ३ ॥

अर्थः–श्री वीरप्रभुनुं अवतरण [च्यवन] दशमा देवलोकथी थयुं छे, वळी दशमीने दिवसे व्रतप्राप्ति तथा केवळ ज्ञाननी प्राप्ति थई छे, ते ध्येयथी १० नो अंक विचारवो. श्री वीरप्रभुनी [देवानंदा अने त्रिशला अे] बे माता छे, अने [साधु धर्म तथा श्रावकधर्म अे] बे धर्म उपदेश्य छे ते ध्येयथी २ नो अंक विचारवो. आठ वर्षनी वय थये [बालक्रीडा प्रसंगे बळणी परीक्षा करनारा देवे] "महावीर" अेवुं नाम स्थाप्युं ते ध्येयथी ८ नो अंक विचारवो ॥ ३ ॥

चतुर्मुखांगत्वमृषि७प्रमाण-करांगता साधुगणाः नवापि ॥
षाण्मासिकी पंचदिनोनतप्ति-र्व्रते शराषट् त्रितयं चरित्रे ॥ ४ ॥

अर्थः–देशना समये समवसरणमां चार मुख थाय छे, [ऋषिप्रमाण =] ७ हाथनुं शरीर प्रमाण छे, साधुना नवगण छे, पांच दिवस न्यून छ मासनो तप कर्यो छे, पांच अथवा छ महाव्रतवाळा छे. अने दर्शनज्ञान चरित्ररूप त्रण रत्नवाळा छे, अे कारणथी यंत्रमां ४–७–९–६ वा ५–३ अे अंको ते ते स्वरूपे ध्येय छे. ॥ ४ ॥

षष्ठे भवे पोट्टिलता पि पंचमे । जाता स्तथैकादशतद्गणेश्वराः ।
विशांबुराश्यायुपिपुर्वजन्मनि । श्रीविंशयंत्रो दितिभावनाश्रियम् ॥५॥

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः–पांचमे अथवा छट्ठे भवे पोट्टिलता अेटले पोट्टिलमुनि हता, जेथी अे रीते पण ५–६ नो अंक विचारवो. तथा श्रीवीरप्रभुना अगियार गणधर हता, अने पूर्वभवमां वीस सागरोपमनुं आयुष्यहतुं तेथी अे रीते ११ ना अंक सहित आ २० नो यंत्र विचारवो, अे रीते उपर कहेला भावोनो निश्चय आ विंशति यंत्रथी विचारवो ॥ ५ ॥ इति विंशतियंत्रे श्रीमहावीरावतरणम् ॥

दशासुराद्या द्युसदोद्विधाखेऽ–
ष्टौव्यंतराः ज्योतिषिकाश्चतुर्धा ॥
ते नारकाःसप्त नरात्र तिर्यग्–
जात्याश्च पंचेंद्रिय देहभाजः ॥ ६ ॥

अर्थः–१० ना अंकथी असुरकुमारादि दश भवनपतिदेवो, २ ना अंकथी ते भवनपति [उत्तर निकाय अने दक्षिण निकायना अेम] बे प्रकारना ८ ना अंकथी आठ प्रकारना व्यंन्तरदेवो ४ ना अंकथी चार प्रकारना ज्योतिषी, ७ ना अंकथी सात प्रकारना नारक, ९ ना अंकथी नव प्रकारना तिर्यंच [त्रण वेद वाळा जलचरादि त्रण गणतां नव तिर्यंच], ५ ना अंकथी ते तिर्यंचो विगेरे पंचेन्द्रियजाति, ना जीवो छे अेम विचारवुं ॥६॥

स्युःस्थावराः पंचवकाःपृथक्त्वात् । प्रत्येक वृक्षेविकलत्रयंच ॥
नरास्तथैका दशधेतिविंश–यंत्रे प्रसिद्धिः समयेपिसिद्धा ॥ ७ ॥

अर्थः–अथवा प्रत्येक वनस्पतीने जूदी गणवाथी स्थावरो पांच [साधारण वनस्पति सहित] छे, तथा ३ ना अंकथी त्रण प्रकारना विकलेन्द्रिय, ११ ना अंकथी अगिआर प्रकारना मनुष्य [अहिं आगळ कहेवाशे ते प्रमाणे] विचारवा. अे प्रमाणे आ विंशति यंत्रमां जे अंक प्रसिद्ध छे, ते अंकनो भाव समयमां–सिद्धान्तमां सिद्ध–प्रसिद्ध छे ॥ ७ ॥

जलचर १ स्थलचर २ खेचरा ३ त्रिवेदाः ९ नरा सप्ते क्षेत्रजाः
अंतरद्वीपजाः ४ एवं ११ ज्योतिष्काः४नक्षत्रताराणामभेदात् ॥८॥

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः–उपरना श्लोकमां (६ ठ्ठामां) तिर्यंचना नवभेद कह्या ते जलचर स्थलचर अने खेचर ओ त्रणे त्रण त्रण वेदवाळा होवाथी जाणवा. अने मनुष्यना अगिआर भेद ते भरतादि ७ क्षेत्रना अने ४ अंतर्द्वीपना जाणवा, तथा ज्योतिषीओ चार कह्या ते नक्षत्र अने ताराना ओ भेदथी [ओ बेने ओक गणीने कह्या छे.] ॥ ८ ॥

इतिकतिपययुक्ति व्यक्तिभिः विंशयंत्रं ।
दृढतरमपिभावात् सूत्रितं सद्गुणौघैः ॥
हठमतिशठचित्ते नैतितत्त्वा–कथंचित्
सहृदयसुहृदांतु—स्तादतः शाश्वतश्रीः ॥ ९ ॥

अर्थः-ओ प्रमाणे आ विंशति यंत्रने सद्गुणना समुहवाळी केटलीक युक्तिओवडे भावथी अतिद्रढपणे सूत्रित कर्यो [वर्णव्यो], हठ–कदाग्रहनी बुद्धिवाळा ओवा षठ पुरुषना चित्तमां तत्त्वथी कंईपण प्राप्त थतुं नथी [अर्थात् शठना चित्तमां कंई तत्त्व प्राप्त थतुं नथी], परन्तु सहृदय=विचारशील ओवा बुद्धिमानोना हृदयमां तो तत्त्व प्राप्त थाय छे, जेथी शाश्वतलक्ष्मी सिद्धी थाय छे ॥ ९ ॥

॥ पद्मावती स्तोत्रान्तर्गत विंशातियंत्र पद्धतिः ॥

श्रीपार्श्वदेववीराद्यं । नत्वानागामरार्चितम् ॥
नव स्थान्यां विंशतेःस्यात् । यंत्रमत्र तदुच्यते ॥ १ ॥

अर्थः–श्रीपार्श्वनाथ अने श्रीवीरभगवान विगेरेने नमस्कार करीने नागदेवो वडे पण पूजित ओवो नव कोठानो जे विंशाति यंत्र ते अहिं कहेवाय छे (अथवा नाग ओटले नागकुमारादि भवनपतिदेवो वडे तथा अमर ओटले वैमानिक देवो वडे पूजित ओवा श्री पार्श्वनाथ तथा श्रीवीरप्रभुने नमस्कार करीने नवकोठानो विंशाति यंत्र कहेवाय छे) ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

भू१विश्व३क्षण६चंद्र१चंद्र१पृथिवी१युग्मैक१२संख्याक्रमात् ।
चंद्रां१भोनिधि४वाण५षण्६नव९वसून्८दिक्१०खेऽचराश्यादिषु॥
ऐश्वर्यात्१रिपुमारी विश्वभयहृत् क्षोभांतरायात् विषात् ।
लक्ष्मी १ रक्षण २ भारती ३ गुरुमुखात् मंत्रान् इमान् देवते ॥ १ ॥

इति पद्मावती स्तोत्रे

अर्थः-भू=१, विश्व=३, क्षण=६, चन्द्र=१, चंद्र=१, पृथ्वी १, युग्मैक=१२, अे संख्याना अनुक्रमथी चंद्र=१, अम्भोनिधि=४, बाण=५, षट्=६, नव=९ वसु=८, अने दिग्=१० अने तेथी खे उर्ध्व आकाशमां [अेटले १० नी उपर राशि=१२ विगेरे अंको स्थापवामां जे यंत्र बने छे] ते ऐश्वर्यवाळा यंत्र लक्ष्मी प्राप्त थाय छे, तथा शत्रु अने मरकी विगेरे तथा सर्व भयोथी रक्षण थाय छे, तथा हृदयक्षोभथी अन्तरायथी अने विषथी पण रक्षण थाय छे. तथा गुरुमुखथी [बृहस्पतिना मुखथी] वाणी थाय छे, अे प्रमाणे लक्ष्मी रक्षण भारती प्राप्त थाय छे, तेथी हे पद्मावती देवि ! माता ! अे अे मंत्रोने-रहस्योने गुरुमुखथी निश्चय करीने ध्यान करे ॥ १ ॥

तत्रैंद्री १ राक्षसो २ दीची ३--वायु४मध्या५ग्नि६दक्षिणा७॥
ऐशानी ८ पश्चिमे तासु ९ । क्रमादंक निवेशनम् ॥ २ ॥

अर्थः-त्यां अनुक्रमे पूर्व दिशिमां-राक्षसी (नैऋत्य) दिशिमां, उत्तर दिशिमां वायव्य-मध्य-अग्निकोण-दक्षिण-ईशान-अने पश्चिम अे नव स्थानोमां [कोठाओमां] अनुक्रमे अंकस्थापना करवी ॥ २ ॥

राशेरिष्टस्यांशकोयस्तृतीयो-
दिग्भि ४ र्हीनः सद्वितीये निवेश्यः ॥
रूपा १ धिक्यान्नंद ९ वेदा ४ द्रि १ वाण ५
रामां ३ ग ६ क्ष्मा १ सिद्धि ८ कोष्टेषुदध्यात् ॥३॥

१ आ श्लोकमां लखेला अंकोनी विशेष स्पष्टता आ श्लोकनी अहिं चालु टीकाना भा थीज समजी शकाशे. के अे अंकोथी २० केवी रीते बने छे.

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः–इष्ट राशिनो जे त्रीजो भाग, तेमांथी चार बाद करतां जे अंक प्राप्त थाय तेने बीजा कोठामां स्थापवो, अने तेनाथी अेकेक अधिक अंक ने अनुक्रमे ९ मा चोथा सातमा पांचमा त्रीजा छट्ठा पहेला अने आठमा [=९-४-७-५-३-६-१-८ अे नंबरवाळा आठ] कोठाओमां स्थापवो. ॥ ३ ॥

विंशतेर्न त्रयोभागा–स्तेनाष्टादशयंत्रवत् ॥
द्वितयिगेहे द्वितियं । दत्वामार्गं समाश्रयेत् ॥ ४ ॥

अर्थः–परन्तु अहिं वीशना यंत्रमां त्रण भाग पूर्ण थता नथी, ते कारणथी अढारना यंत्रनी पेठे बीजा गृहमां २ ना अंक स्थापीने त्यारबाद आगळनो मार्ग लेवो [अेटले ३-४-५-६-७-८-इत्यादि अंकोनी स्थापना ९-४ ७-५-३ इत्यादि गृहोमां करवी.] ॥ ४ ॥

सर्वस्थानेषु चैकांकः । परमेश्वरवाचकः ॥
मंत्रपाठे प्रणववत् । धार्य कार्यस्य सिद्धिदः ॥ ५ ॥

अर्थः–पुनः मंत्र पाठमां जेम प्रणव (ॐ) नी स्थापना अवश्य थाय छे, तेम आ विंशतियंत्रना अंकोमां पण परमेश्वरनो वाचक अने सर्व कार्यनी सिद्धि करनारो अेवो १ नो अंक सर्व गृहोमां स्थापवो ॥ ५ ॥

---

१ अेप्रमाणे स्थापवाथी आ अंक स्थापना थई

१०	२	८
४	७	११
६	११	३

२ सर्व गृहोमां १ नो अंक स्थापवाथी

१०	१२	१८
१४	१७	११
१६	११	१३

आ स्थापना थाय, परंतु

४--३--८ इत्यादि गतिअे यवनपद्धति प्रमाणें स्थापतां

१	१६	३
१२	१०	८
७	४	९

अे प्रमाणे अंक स्थापना थई. जेमां २ तथा ६ नी साथेज आव्यो छे, परन्तु सर्व गृहोमां १ नो अंक आवे तेवा यंत्रो हजी आगळ अन्य पध्धतिअे दर्शावाशे.

Aho ! Shrutgyanam

यथायवनयंत्रस्याऽ-ब्धि४त्रि३सिध्या८दिकागतिः ॥
श्रीमद्विजययंत्रोकाऽ-ष्टमीशुद्रेषु सोत्तमा ॥ ६ ॥

अर्थः—जेम यवनोना विंशातियंत्रमां ४-३-८ इत्यादि गतिअे गृहोनो अनुक्रम कह्यो छे, तेम विजय यंत्रमां कहेली आठमी गति शुद्रोमां [शुद्रो माटे] उत्तम छे. ॥ ६ ॥

स्थाने द्वयेऽत्र यवनै—रेक दानं विनिर्मितम् ।
तेनाद्विके द्वादशाप्तिः । षट्के षोडश संभवः ॥ ७ ॥

अर्थः—यवन विंशाति यंत्रमां यवनोअे बे स्थानोमां [बे कोठांमां] १ नो अंक [अधित] स्थापन कर्यो छे, ते कारण २ ना कोठामां १२ अने ६ ना कोठामां १६ नो अंक स्थपाय छे ॥ ७ ॥

मध्ये तत्र दश स्थानं । यथा त्रांतस्तथा दश ।
कमलाकृति यंत्रेपि । ततक्रमादग्निगाः शिवाः ११ ॥ ८ ॥

अर्थः—त्यां मध्य कोठामां १० नुं अंकस्थान जे आ विंशाति यंत्रमां छे, तेम कमलाकृति यंत्रमां पण मध्य कोठामां १० नो अंक छे, त्यारबाद अनुक्रमे आगळ चालतां [शिव=] ११ नो अंक स्थपाय छे. ॥ ८ ॥

क्रमात्त पंचकात्पंचा—धिक त्वेदश १० मध्यगा ।
तदेका दशतः पंचा—धिकत्वेऽधस्त्क षोडशः ॥ ९ ॥

---

३ आठमी गतिअे बनेलो यंत्र आ प्रमाणे

१	६	१३
२	१०	८
१७	४	९

आ यंत्रोमां २० नी गणत्री केवी रीते करवी ते चालु टीकाना भावार्थमांज कहेवाशे.

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः–त्यारबाद जेम पांचमां कोठामां प्राप्त थयेला कोठा संबंधि ५ ना अंकमां ५ मेळवतां १० नो अंक मध्यगत पांचमां कोठामां आव्यो छे, तेम ११ मां ५ मेळवतां १६ नो अंक ११ ना अंकनी नीचे छट्ठा कोठामां आवे छे. ॥ ९ ॥

अथ काव्यार्थः–भूः १ विश्वानि ३ क्षणाः ६ क्षणैः षड्भिस्त्क्रगामिका इति वचनात् चंद्र १ पृथिवी २ पुनः पुनश्चंद्र कथनादेककः सर्वत्र देयः इत्याभि प्रायः एवं १३-१६-१२ इति स्थान त्रय सिद्धिः अनुलोम विलोमे नांक सूत्रणमुभयांकेभ्योपि योजना ज्ञापकात् चंद्रांभोनिधि इति पद्मावत्या व्याख्येयं समुद्र शद्बे न चत्वारः सप्तवा इति गणनात् ततः १७–१४ इति स्थान द्वय सिद्धिः वाणेति चतुर्दशाऽधः वाणाः ५ यद्वा षट् पंचशा इति सावण्यात् एतद्विस्तर प्रागुक्त एव पांडव शद्बेन पंच प्रसिद्धाः वक्ततः षट् कर्णस्य पांडवत्वात् तथा पंचभिः काम्यते कुंता तद्वधूः पंच-काम्यतीत्यत्र धर्म १ वायु २ इंद्राः ३ अश्विनीकुमार २ द्वयं एवं ५ षष्ठः पांडुरिति पंच कथने षडपि ग्राह्याः एवं बाणाः ५ कामस्य प्रसिद्धाः षष्ठोवसरः 'रहोनास्तिक्षणोनास्ति' इति वचनात् एव मिंद्रिय रसादि संख्यायामपि पंच षत्वं भाव्यं तेन ॥

अर्थः—उपर कहेला भु विश्व क्षण इत्यादि पदवाला काव्यनो [पद्मावती काव्यनो] भावार्थ आप्रमाणे भू एटले १ विश्वअेटले ३, क्षण अेशब्द छना अंकने दर्शावनारो होवाथी क्षण अेटले ३, अे त्रणे अंक साथे चंद्र शब्द वारंवार कहेवाथी चंद्र एटले १ नो अंक सर्वत्र जोडतां तथां पृथ्वी अेटले १ नो अंक पण जोडत्तां, (अर्थात् १, ३, ६ नी पश्चात् १, १, १ जोडतां ११-२३-१६ थाय) अे प्रमाणे १ नो अंक सर्वत्र (सर्वस्थानें) स्थापवो, जेथी १३-१६-११ अे त्रण स्थान [अंकस्थान] सिध्ध थाय छे, अहिं क्रमपूर्वक अथवा क्रम रहित पण अंक स्थापना थाय छे, तेथी बन्ने प्रकारना अंकोवडे पण योजना जणावेली छे.

तथा चंद्रांभोनिधि इत्यादि पदोनी व्याख्या आ प्रमाणें–अंभोनिधि अेटले समुद्र शब्दथी ४ अथवा ७ नो अंक गणाय छे. तेथी ७ अने ४, अने उपर कह्याप्रमाणें १ नो अंक अहिंपण जोडतां १७ अने १४ अेप्रमाणें बे अंकस्थान सिध्ध थाय छे. तथा बाण अेटले ५ नो खंड ते चौदनी

Aho ! Shrutgyanam

नीचे स्थापवो, अथवा छ अने पांच अेबे अंकने सद्दशपणुं छे, ते सविस्तर प्रथमज कहेवाई गयुं छे, जेमके "पांडव" अेशब्द वडे पांचनो अंक प्रसिद्ध छे, अने वस्तुतः कर्णने पण पांडव पणुं होवाथी "पांडव" शब्द थी छनो अंक पण गणाय. तथा पांच वडे जे काम्यते इच्छायते पंचकामी अेटले कुंता माता तेमनी वधू [पुत्रवधू द्रौपदी], अेमां धर्म-वायु-इन्द्र-आश्विनीकुमार बे, अेप्रमाणें पांच अने छट्ठा पांडू अेप्रमाणें पांच कहेवाथी छनुं पण ग्रहण थाय छे. अेरीते बाण शब्दथी पण कामदेवनां ५ बाण प्रसिद्ध छे, अने छट्ठो अकसर (अे पण काममनुं छट्ठुं बाण तुल्य छे], कह्यूं छे के रहो नास्ति=अेकान्त नथी, क्षणो नास्ति=अवसर नथी. इतिवचनात्. अेप्रमाणें इन्द्रिय अने रस पांच पांच संख्यावाळा छे तो पण ६ नी गणत्री कराय छे, अेम जाणवुं. जेथी बाण अे शब्दथी ५ अथवा ६ नो पण अंक जाणवो, ते कारणथी.

प्राच्यांद्दगिंदू १२ नैऋत्यां--गुणेन्दू १३ उत्तराश्रितौ ॥
कृतेंदू १४ तदधोवाणेंदू १५ कला १६ वैकवृद्धितः ॥ १० ॥

अर्थः–पूर्वदिशामां द्दगिंदू=१२, नैऋत्यकोणमां गुणेन्दू=१३, उत्तरादिशामां कृतेन्दू=१४, तेनी नीचे बाणेन्दू=१५ अथवा अेमां अेक अधिक करवाथी चंद्रनी कळा=१६पण गणाय [ते वायव्य कोणमां स्थापाय छे]॥१०॥

पंचाधिकत्वादत्रैव । स्थापनीयां नवेंदवः १९ ॥
ततो दशांतो ग्नौरुद्रा ११–अधः पंचाधिकानृपा १६.॥ ११ ॥

अर्थः–अथवा उत्तरदिशिमां जे १४ स्थाप्या छे, तेमां पांच अधिक करवाथी १९ थाय ते पण त्यांज १५ ना स्थाने स्थपाय छे. त्यारबाद अंतः=मध्यमां १० अने तेनी अग्रे [अेटले अग्निकोणमां] ११ नो अंक स्थपाय छे अने तेनी [११ नी] नीचे पांच अधिक अेटले १६ नो अंक स्थापवो. ॥ ११ ॥

इ. पूर्व अ.

१७	१२	११
१४	१०	१६
१५ १९	१८	१३

(डाबी बाजु: उत्तर; जमणी बाजु: दक्षिण)

वा. पश्चिम नै.

Aho ! Shrutgyanam

ऐशान्यात्यष्टि १९ रष्टेंदू १८ । वारुण्या मघवादिशि ॥
क्रमप्रासोष्टादशांक–स्तत्रभाव्या नवापिते ॥ १२ ॥

१-१०-९ इतियोजनायां नवक गणनात् यद्वा वाणेति सूत्रे चतुर्दशेभ्यो वाणाधिकत्वे १९ गौ ९ र्भवेत्वन्यथा रुचिरित्युपदेशात् यद्वा वाणोनत्वे ९ यद्वा क्रम प्राप्त १५ मध्ये षडूनत्वे ९ अग्रे विभूत्यनवकथनात् दशशार कला इति सौंदर्यलहरी तेन १० वाणा एकोना ९ इत्यपि यद्वा वाणाः ३ रामस्य १ अर्जुनस्य २ कामस्य ३ तत्र ६ मेलने ९ वाण तद्वतो रभेदोप चारात् अत्र १–७–१ वाण षट् इति ११ एवं २० आयतत्वेपि १–८–११ इति २० तथा १७–१–१–१ एवं २० कोणगणने दशस्थाने शून्यवात् एकोनत्वे ९–११ एवं स्थानद्वयादपि २० योजना भावात् वाण ५ षट् ६ वचनेन एकादशांक इति केचित् तन्नपूर्वं एकादशांक

١	١٥	٣
١٢	١٠	٨
٧	٣	٩

भावेन पुनरुक्तदोषात् तेन वाण कथनात् पंच ५ त्रयोवा चतुर्दश स्थाने अंक पार्थक्ये १–४–१५ एवं २० तथा १–७–१–४–१–६ एवं २० तथा १७ पुनर्वाण ३ एवं २० तथा १४–१–५ एवं २० ततो यथा योगं वाणेत्यादि सूत्रं विवरणीयं एव मन्यत्रापि १–७–१२ अथवा १७–१–२ तथा १–३–१६ अथवा १३–१–६ तथा १७ एकोन ४ तदा ३ एवं २० कोणे एकोन ९–१–११ द्वितीय कोणे एकोन ७ तदा ६–१–१३ एवं २० तथा ११ एकोन ६ तथा ५ अधः १–३ एवं २० अनयारीत्या कोष्टांक भेदे अभेदे वा ऊन करणे अधिक करणेवा ज्ञापकं वाणषाडिति सूत्रं मंतव्यं ततः एकोन ८ तदा ७ अग्रे १३ एवं २० तथा एकोन २ तदा १-१० एकोन एकाधिक ८ तदा ९ इत्यादिना सर्वत्र समाधिः एवं बहुधा यंत्र भावना सर्व कार्य सिद्धि करत्वात् षोडश कोष्ठ चतुस्त्रिंशत् यंत्रवत् एवं १५–१८ इतिस्थानद्वयं सिद्धिः तत एव वाण रूप वसु दिक् दिक् खेच राश्यादिषु इतिकाचित्पाठः तेन नववस्त्क नित्यमपि व्याख्यातं ततोमध्ये दिक् दश देयाः ततोप्युच्चैः खे आकाशे दशांकस्थानादुपरि राश्यादिषु द्वादश प्रभृतिषु अंकेषु धृतेषु यंत्रात् अस्मात् ऐश्वर्यात् लक्ष्मी भवति रिपु प्रमुखा निष्टेभ्यो रक्षणं भवति रिपवो वैरिणः मारि युगपल्लोकमृत्युः विश्वानि सर्वाणि भयानि

Aho ! Shrutgyanam

हृत्क्षोभः चित्तभ्रमः उपलक्षणात् सर्वे रोगा ततो द्वंद्वः तस्मात् विषात् सर्पादेः अत्राप्युप लक्षणात् सिंह गजादेरिति तथा गुरुमुखात् बृहस्पति मुखात् भारति बाणी भवति द्वंद्वाल्लक्ष्मी रक्षण भारती (बाण १५ एश्वर्य रक्षायां १६ बिधार्थे १९ सप्तम स्थाने लेख्याः) प्राप्नोति हे देवते मातः पद्मावति इमान् मंत्रान रहस्यानि गुरुमुखादित्यावृत्या व्याख्यानान्निश्चित्य ध्यायामिति अध्याहारः इति काव्यार्थः यद्वाखेचरा गृहाः यथानवसुस्थानेषु स्थापिताः व्याशादिषु पूर्वादि दिशासु एतानंकान् तथासंस्थाप्य ध्यायामि

अर्थः-इशान कोणमां त्वष्टि=१७, वारुणी दिशामां [पश्चिममां] अष्टेंदू=१८, अे प्रमाणे मघवा दिशीथी (पूर्व दिशाथी) दिशाओना क्रम प्रमाणे अढारनो अंक आव्यो, ते विंशति यंत्रमां नवे गृहोमां अथ नवे अंकस्थानो विचारवां ते आ प्रमाणे—

अर्थः-१-१०-९ अे * योजनामां ९ नी गणत्री करवाथी, (२० थाय छे) अथवा काव्यमां बाण शब्द कह्यो छे ते बाण अेटले ५ ना अंकोनो चौदमां अधिक करवाथी १९ थाय छे तेमां [अे १९ मां] गौ अेटले ९ नो अंक ध्रुव होवाथी यथा रुचि प्रमाणे गणितमां जोडवो, अेम कहेलुं होवाथी (१-१०-९ मां ९ नो अंक गणाय छे,) अथवा बीजी रीते विचारतां बाण अेटले ५ नो अंक न्यून करवाथी [अेटले चौदा मांथी ५ बाद करवाथी] पण ९ आवे, अथवा पांच अने छ सदृश होवाथी १५ मांथी ६ न्यून करीअे तो पण ९ आवे, अने ते नवनो अंक पूर्वे विवरीने कहेवाई गयो छे, अथवा दश सर कला (अेटले १०-१-३-१६ अेमां सर=बाण अेटले १ ने १० मां थी बाद करतां पण ९ आवे, अथवा बाण अेटले ३ नो अंक

* विंशतियंत्रमां पूर्वे दर्शाव्या प्रमाणे त्रीजा पांचमा अने सातमा कोठामाना ११–१०–१९ मांथी यथारुचि अंको लईने २० गणवानी पद्धति अहिं दर्शावाय छे त्यां ११ मांनो १, १० मांना १० अने १९ मांथी ९ नो अंक लई १–१०–९ अे त्रणे मेळवीने २० गण्या. वळी अहिं सातमा कोठामा १५ ना स्थाने अेटले वास्तविक रीते ५ ना स्थानमां १९ अेटले ९ नो अंक केवी रीते गणवो ? तेनी जूदी जूदी रीत दर्शावी. अे कोणपंक्तिथी २० गण्या छे.

Aho ! Shrutgyanam

पण गणाय, कारण के रामनुं अर्जुननुं अने कामदेवनुं ए त्रण बाण प्रसिद्ध छे, माटे ए ३ मां (१६ मांना) ६ ने मेळवतां पण ९ थाय. अथवा बाण अने बाणधारी ए बेमां अभेदोपचारथी ६ गणतां ५ मां मेळवी ११ करी १--७--१--११=[1]२० थाय.

अर्थः—हवे १७-१२-११ ए त्रण अंकनी पंक्तिमां १, [७+१ =] ८, ११ ए त्रण मळीने २० थाय छे, अथवा १७-१-१-१ मळीने २० थाय छे, अथवा खूणाथी खूणे गणतां १० मां शून्य होवाथी १ न्यून करवाथी ९ थाय, जेथी ११--९ एटले २० थाय ए रीते बे स्थानथी [त्रीजा पांचमा कोठाना ११–१० थी पण २० नी गणत्री थई. वळी योजना भावथी संयुक्त भावथी सातमा कोठाना ५–६ नी सादृशतावाळा बे अंकोने मेळवी ११ करी मध्य कोठामां रहेला १० ने एक न्यून पणाथी ९ गणीने ११--९ एटले २० केटलाक आचार्यो गणे छे, ते योग्य नथी, कारणके प्रथम ११ ना अंक साथे ९ मेळवी एकवार २० गणाई गया छे, तेथी अहिं पुनरुक्त दोष [पुनर्गणना दोष] प्राप्त थाय छे, ते माटे अहिं बाण कहेवाथी ५ अथवा ३ गणीने १४ ना अंकने छूटो पाडतां १–४–१५ एटले २० थाय छे, तथा [१७–१४–१५ ने बदले १६ नी पंक्तिमांथी अंक छूटा पाडी] १-७-१-४-१-६ एटले २० गणाय छे. तथा सत्तर अने सातमा कोष्टकमां बाणने ५ गण्या छे, तेने बदले ३ गणतां १७–३ एटले २०थाय छे. तथा [१४–१५ मां] १४--१–५ एटले २० थाय छे, माटे आ काव्यमां बाण शब्दनो अर्थ ५–६–३ इत्यादिरीते यथा योग्य विचारवो, अने ते प्रमाणे अन्यस्थाने पण बाण शब्दना ए अर्थोथीज यथायोग्य २० नो अंक प्राप्त करवो. तथा १–७--१२ एटले पण २० थाय छे. अथवा १७-१--२ थी पण २० थाय छे.

तथा [११–१६–१३ नी पंक्तिमां अंकोने यथा रुचि छुटा पाडतां] १-३-१६ थी २० थाय छे, अथवा १३–१--६ थी २० थाय छे. तथा [१७–१४--$\frac{15}{19}$ नी पांक्तिमां] १७ मां १४ ना अंकने (१ न्यून ४ एटले) ३ गणीने उमेरतां २० थाय छे, ए रीते खूणामां रहेला १९ एटले १ न्यून ९ अर्थात् ८ गणीने ८–१–११ थी पण २० थाय छे [ए १९–१०–११ नी

---

१ ए गणित १७–१४--१५ नी पंक्तिथी जाणवुं.

Aho ! Shrutgyanam

पंक्तिमांथी २० गण्या.] तथा बीजे खूणे १७–१०–१३ नी पंक्तिमांथी १७ अेटले १ न्यून ७ अर्थात् ६ गणीने ६–१–१३ मेळवतां २० थाय छे. अे प्रमाणे [११–१६–१३ नी पंक्तिमां] ११– [१ न्यून ६ अर्थात्] ५–१–३ थी पण २० थाय छे.

अर्थः–अे रीते कोठामां रहेला अंकोने छूटा पाड्या विना अथवा छूटा पाडीने तथा अेकादि अंक न्यून करीने अथवा अधिक करीने पण अे यंत्र २० संख्या नो जणावनार छे, तथा बाण अेटले ६ नो अंक अेवुं पण सूत्र जाणवुं. अथवा त्यारबाद [१९–१३ नी पंक्तिमां अेक न्यून आठ करवाथी अढार अेटले सात गणीने ते ७ नी आगळनो १३ अंक उमेरतां ७–१३ थी २० थाय छे. तथा [१२–१०–१८ नी पंक्तिमां] १ न्यून २ अेटले १ गणी तेमज अढारमां १ अधिक ८ अेटले ९ गणीने १–१०–९ स्थापवाथी पण २० थाय. इत्यादिरीते सर्व स्थाने २० नी गणत्री सम्यक्रीते विचारवी. अने अे रीते घणी घणी रीते करेली यंत्रना गणितनी भावना सर्व कार्यनी सिद्धि करनारी होवाथी सोल कोठामां करेला चोत्रीसना यंत्रनी पेठे विंशतियंत्रनी भावना पण जाणवी. अे प्रमाणे आ विंशतियंत्रमां ५ ना स्थाने १५ अने १९ नी भावना अंक स्थाननी सिद्धि सातमा कोठामा गणेली छे.

अर्थः–ते कारणथीज बाण रूप वसु दिक् दिक् खे च राश्यादिषु अे वो पण पाठ कोई कोई ग्रंथमां छे. तेथी नव वस्तुओ अेम पण [नव गृहोमां नव अंकस्थानरूप ९ अेम पण] कह्युं छे, माटे ते नव कोठाओमां मध्य कोठाना विषे दिक् अेटले १० नो अंक स्थापवो, ते अंकथी पण उंचे खे=आकाशमां अर्थात् १० नी अंकनी उपर राश्यादिषु अेटले १२ विगेरे अंको स्थाप्ये छते ये यंत्ररूप ऐश्वर्यथी लक्ष्मी प्राप्त थाय छे, अने शत्रु विगेरे अनिष्ट पदार्थोथी रक्षण थाय छे, अहिं रिपु अेटले शत्रुओ, मारि अेटले समकाळे घणा लोकनुं मृत्यू, तथा विश्व=सर्वे जातना भय अेटले भय अने हृत्क्षोभ अेटले चित्तनो भ्रम, तथा उपलक्षणथी सर्वे प्रकारना रोग, अे सर्वनो द्वन्द्वसमास करतां रिपुमारिविश्वत्रयहृत्क्षोभ, त्यारबाद सेवा प्रकारना विषथी अेटले सर्प विगेरेना विषथी. अहिं पण उपलक्षण वडे सिंह हस्ति विगेरेथी (रक्षण थाय छे–इति अध्याहार्य)

Aho ! Shrutgyanam

तथा गुरुमुखात् अेटले बृहस्पतिना मुखथी भारती अेटले वाणी थाय छे. अे त्रणेनो द्वन्द्वसमास करतां लक्ष्मीरक्षणभारती अेवुं वाक्य थाय छे. [अहिं सातमा गृहमां बाण अेटले अैश्वर्यार्थे १५, रक्षार्थे १६, अने विद्यार्थे १९ नो अंक स्थापवो,] ते लक्ष्मीरक्षण अने वाणी प्राप्त थाय छे. तथा हे देवते अेटले हे पद्मावती माता ! आ मंत्रोने रहस्योने गुरुमुखथी जाणीने यावत् व्याख्यार्थी निश्चय करीने ध्यायामि अेटले हुं ध्यान करूं छुं. अे ध्यायामि ५६ श्लोकमां कह्युं नथी तो पण अध्याहारथी ग्रहण करवुं ॥ इति काव्यार्थः ॥

॥ विंशतियंत्रे नवग्रहादि स्थापना ॥

अथवा खेचराः अेटले नव गृहोने जेम यंत्रना नव कोठामां पूर्वादि दिशाओमां स्थापेला होय छे, तेवी रीते अे अंकस्थानोने पण स्थापीने हे पद्मावती देवी ! हुं ध्यान करूं छुं. ते ग्रहोनी स्थापना आ प्रमाणेः—

मध्ये रविःशशी प्राच्यां । प्रतीच्यां मंगलःस्थितः ॥
गुरुरीशे कविर्याम्ये । कौवेर्यां निश्रितो बुधः ॥ १ ॥

अर्थ–मध्यमां सूर्य, पूर्वमां चंद्र, पश्चिममां मंगल, ईशानमां गुरु, दक्षिणमां शुक्र, अने उत्तर दिशामां [विंशति यंत्रने विषे] बुध रहेलो छे. ॥ १ ॥

मंदोवायौतमोवन्हौ । नैरुत्यांकेतुराश्रितः ॥
ग्रहाणामितिदिग् भागा । न्यस्यंतेमुद्रिकादिषु ॥ २ ॥

अर्थः–वायुकोणमां शनि, अग्निकोणमां राहु, अने नैऋत्यमां केतु रह्यो छे. अे प्रमाणे मुद्रिका विगेरेमां ग्रहोने ते ते दिशीभागमां स्थपाय छे ॥२॥

अधः स्थलात् उपर्युपरि अंकधरणं कुंडलिन्यागत्यानागाधिष्ठितत्वात्

नीचेना स्थानथी उपर उपर कुंडलिनी गति प्रमाणे [प्रदक्षिणा वर्तक्रमथी] अंकस्थापन करवानुं कारणके अे यंत्र नागाधिष्ठित

Aho ! Shrutgyanam

(पद्मावती ते धरणोन्द्रनी इंद्राणी छे, अने धरणेन्द्र ते नागकुमार देवोनो इन्द्र छे, माटे नागाधिष्ठित) छे. [ते नागराजनी साथकता आ प्रमाणे–]

इतःपंचफणो[1]नाग–राजपद्मा[2]फणत्रयात् ॥
मध्येदशावतारोर्हन् । भानुतेजाः कविज्ञ[3]युक् ॥ ३ ॥

अर्थ–हवे अहिं नागराज पांच फणावाळो छ, तेथा दक्षिण दिशामां खूणे ५ नो अंक स्थपाय छे, अने पद्मा [पद्मावती] त्रण फणावाळी होवाथी ३ नो अंक पण दक्षिणमां बीजे खूणे [जमणे खूणे] स्थपाय छे. अने ते बने फणाओनी उपर मध्यें दश अवतारवाळा श्री पार्श्वनाथ प्रभु रह्या छे, तेथी ते बे अंकोनी उपर मध्यमां १० नो अंक स्थपाय छे. सूर्यना तेज वाळो [उपर १२ वाळो] अने तेनी जमणी बाजुअे तथा डाबी बाजुअे कवि=शुक्र १६[3] जिव्हावाळो होवाथी १६ नो अने ज्ञ=बुध १+४=५[4] जिव्हावाळो होवाथी १४ नो अंक स्थपाय छे, अर्थात् जमणो बुध अने डाबो शुक्रनो अंक स्थपाय छे. ॥ ३ ॥

नागकुलानां नवसंख्या सिद्धैव यद्वा हे देवते तव गोप्यानि यंत्रस्थापना अत्रयोजना यथा १७-२-१ प्रथमा ७-१२-१ द्वितीया ७-२-११ तृतीया एवं ३ उपरि पंक्तौ १४-०-६ चतुर्थी ४-१० ६ पंचमी ४-०-१६ षष्ठी एवं ३ मध्यपंक्तौ १५-१-१-३ सप्तमी १-१८-१ अष्टमी १–५–१–१३ नवमी एवं३ अधःपंक्तौ अत्र ६–८–३–१–१–१ एका ५-९-३-१-१-१ द्वितीया १९-१ इति स्थान द्वयादपि जायमाना विंशतिका ज्ञेया यथा षड्नाः (षड्नवपंचभ्या ऊना इति षड्न वचनादेक कदानं सिद्धं तेन १५ मध्ये षड्नता) १५ तदा ९ तत्र एकांक धरणे १९

१७	१२	११
१४	१०	१६
१९ १५	१८	१३

१ षट्सुएकोनत्वे पंचयाभ्यां २ चतुर्षुएकोनत्वेत्रयः उदीच्या ३ कविषोडशार्विः १–४–इति बुधः पंचार्विः.

१ छमांथी १ न्यून करतां ५ नो अंक दक्षिणमां. २ चारमांथी १ न्यूनकरतां ३ नो अंक उत्तरमां ३ कवि १६ आर्चि-जिव्हावाळो छे, ४ ज्ञ अेटले बुध ५ अेटले १-४ जिव्हावाळो छे माटे १४.

Aho ! Shrutgyanam

ततः त्रयोदशस्थान गतः १ मेलने २० एतान् गण्यंते विंशति वार विंशते रुपरि प्रयोजनाभावात् एवं आयतत्वे ८ योजना अथ उर्द्धरीत्या प्रथम पंक्तौ योजना ७-४ षड्न १५ शेष ९ एवं २० प्रथमा १-१४-५ द्वितीया १-४-१५ तृतीया एवं ३ ततः १२-०-८- चतुर्थी २-१०-८ पंचमी १-१-१८ षष्ठी एवं ३ मध्यपंक्तौ ११-६-३ सप्तमी १-१६-३ अष्टमी १-६-१३ नवमी एता ८ नवउर्द्धरीत्या सर्वा १८ कोणे ३-१०-७ द्वितीय कोणे १-१० षड्न पंचदशशेष ९ एवं विंशतिवार विंशतिकाः॥ अत्र १२-८ तथा ४-१६ तथा १७-३ तथा ९-११ यद्वा १९-१ तथा ७-१३ दशस्थानेपि शून्यत्वात् एकोनत्वे ९-११ तथा पंचसु एकोनत्वे ४ षट्सुएकोनत्वे५एवं ९-१०-१ यद्वा५-६ दशस्थाने ९ एवं स्थानद्वयजा अन्यापि विंशतिका ज्ञेया गंभीरार्थविषयात् यंत्रेस्य एवमेव गंगाप्रवाह ग्रंथ कथिते

नागकुलनी संख्या नव प्रसिद्ध छे. अथवा हे पद्मावती देवि ! ते नव गृहमां [विंशति यंत्रमां] नव अंक स्थानो गोप्यानि=रक्षण करवा योग्य अर्थात् स्थापवा योग्य छे. ते यंत्रनी स्थापना आ प्रमाणे—

१७	१२	११
१४	१०	१६
१९ १५	१८	१३

अहिं २० नी गणत्रीनी योजना आ प्रमाणे—

अर्थः—अहिं २० नी गणत्री वीस रीतिए थाय छे ते आ प्रमाणे—[१७–१२–११ नी पंक्तिमांथी] १७–२–१ एटले २०, ७–१२–१ एटले २०, अने ७–२–११ एटले २० ए प्रमाणे पहेली बीजी अने त्रीजी ए त्रण रीति थई. तथा [१४–१०–१६ नी पंक्तिमां] १४–०–६ ए चोथी रीतिए २०, ४–१०–६ एटले २० ए पांचमी रीति, ४–०–१६ एटले २० ए छट्ठी रीति, ए प्रमाणे त्रण रीति मध्य पंक्तिनी थई. तथा [१५–१८–१३ नी पंक्तिमां] १५–१–१–३ एटले २० ए सातमी रीति, १–१८–१ एटले २० ए आठमी रीति. १-५–१–१३ एटले २० ए नवमी रीति, ए प्रमाणे त्रण रीति नीचेनी पंक्तिमां जाणवी. [अथवा सातमा गृहमां १५/१९ ना स्थाने १६ पण विचारी ए कारण के ५–६ नी सदृशता होवाथी ६ विचारी ए तो] ६–८–३–१–१–१ एटले २० ए पहेली रीति अने १५–१९ विचारी ए तो ५–९–३–१–१–१ एटले २० ए बीजी रीति. तेमज १९–१ एटले

२० अे त्रीजी रीति. अे प्रमाणे बीजी रीते पण अधः [नीचेनी] पंक्तिमां त्रण रीति जाणवी. अहिं छेल्ली रीतिमां बे स्थानथी पण २० नी गणत्री जाणवी. तथा अहिं छ न्यून अेटले छ नो अंक पांच वडे न्यून गणीअे तो षट् उन कहेवाथी १ नो अंक स्थापवो सिद्ध थाय छे, वळी ते कारणथी १५ मांथी छ न्यून करतां ९ नो अंक आवे ते नव साथे पश्चात् अेकनो अंक स्थापतां १९ थाय छे. त्यारबाद १३ अंकस्थानमांनो १ मेळवतां २० थाय छे ते वीस अहिं न गणवा, कारणके विंशति यंत्रमां वीस वार २० नी गणत्री करवानी होवाथी ते उपरान्त अधिक रीतिनुं प्रयोजन नथी. अे प्रमाणे दीर्घ पंक्तिथी नव रीतिअे २० नी गणत्री थई.

[हवे १७--१४--$\frac{१९}{१५}$ नी पंक्तिमां] उर्ध्व पंक्ति गणतां पहेली उर्ध्व पंक्तिमां छ न्यून १५ अेटले ९ गणीने ७--४--९ अेटले २० थाय ते प्रथम रीति, १--१४--५ अेटले २० अे बीजी रीति, १--४--१५ अेटले अे त्रीजी रीति. अे त्रण रीति जाणवी.

त्यारबाद बीजी मध्य उर्ध्व पंक्तिमां [अेटले १२--१०--१८ मां] १२--०--८ अेटले २० अे चोथी रीति, २--१०--८ अेटले २० अे पांचमी रीति, १--१--१८ अेटले २० अे छट्टी रीति, अे प्रमाणे मध्यनी उर्ध्व पंक्तिमां पण त्रण रीति थई.

[त्यारबाद ११--१६--१३ अे त्रीजी उर्ध्व पंक्तिमां] ११--६--३ अेटले २० अे सातमी रीति, १--१६--३ अेटले २० अे आठमी रीति, अने १--६--१३ अेटले २० अे नवमी रीति, अे नव रीति उर्ध्व पंक्तिने अनुसारे जाणवी. अने अे प्रमाणे नव आयत रीति अने नव उर्ध्व रीति सर्व मळीने १८ रीति थई.

तथा अेक खूणाथी बीजा खूणानी पंक्तिमां [विदिशि पंक्तिमां अेटले १३--१०--१७ नी पंक्तिमां] ३--१०--७ अेटले २० अे ओगणीसमी रीति, तथा [$\frac{१९}{१५}$--१०--११ नी पंक्तिमां] छ न्यून पंदर अेटले ९ गणीने १--१०--९ अेटले २० अे वीसमी रीति. अे प्रमाणे २० वार २० नी गणत्री जाणवी.

Aho ! Shrutgyanam

अपूर्व चमत्कार ? पूर्वगत गुप्त महाविद्याओं का भंडार ??

विद्यारत्न महानिधिः [दशपूर्वधर भगवान श्री भद्रगुप्ताचार्यकृत भाषांतर ओर १० यंत्र सहित.] इस ग्रंथकी तारीफके विषयमें क्या लिखा जाय, जबकि इसकीमहिमा स्वयं इसके नामसेही प्रकट हो रही है ! **न्योछावर २५ रुपये.**

इसमें अनेक प्रकारकी पूर्वगत गुप्त विद्याएँहै जो थोडासा श्रम करनेपरही अपने चमत्कारोंको बताती है कितनीक विद्या एसी है जो पढनेसे सिद्ध होजातीहै. मैं पाठक महानुभावोंको सादर निवेदन करताहुं कि इस ग्रंथकी एक एक प्रति अवश्य खरीदें. और इसके चमत्कारोंको देखें, यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यह इसजगती तलपर अपनी शानी नहीं रखता ! बडेही सौभाग्याकी बात है की शासन देवकी कृपासे तृ. आवृत्ती भी खलास होने आई है.

ज्योतिष शास्त्रका अद्‌भुत नमुना !

जिस ग्रंथके लिये जनता विचार करतीथी वही ज्योतीषशास्त्रका खजाना **अर्हद्‌ चुडामणी सारसटीक** आज तिसरी आवृत्ती छपके तयार है. **मूल कीमत रु. ३ व भेटकी कीमत रु. १॥**

ईस ग्रंथमें आपको क्या मिलेगा ज्योतिषका सार ? पुछे हुये प्रश्नोके उत्तर ??

भुत भविष्य वर्तमान की बाते जाननेकी चाबी ??? यह ग्रंथ संग्रह करनेसे आपको सब कुछ जाननेको मिलेगा. आप स्वयं इस ग्रंथके द्वारा तमाम ज्योतिषका सार जान लेंगें.

उपसर्गहरस्तोत्र यंत्र.

इस यंत्रको आप जरूर अपने पासमे रखो इसी यंत्रको पास रखनेसे सर्व प्रकारकी सिद्धी कोरट, कचेरीमे जीत धनप्राप्ति वगैरे व्यापार मे लाभ, दुश्मनका पराजय इत्यादि वस्तुओंकी प्राप्ति होती है. इस यंत्रकी साधना परमपूज्य श्रीन्यायविशारद न्यायाचार्य श्रीयेशोविजयजीने करीथी वही विधीके साथ भेजा जाता है.

न्योछावर मुल किमत रु. १। भेट किमत ॥-

Aho ! Shrutgyanam

कितना सुंदर काव्य ! कितनी सरल रचना ! ! कितनी मिठी भाषा ! ! !

चंदप्पह चरियं—यह बहुतही सुंदर काव्य है. इस काव्य के लिये मे क्या प्रशंसा करूं आपही देखकर स्वयं इसके प्रशंशक बन जायंगे इस ग्रंथका जरूर संग्रह करे.

इस ग्रंथके कर्ता जिनेश्वर सुरि है तब इस ग्रंथके विषयमे लिखनेकी जादा जरुरत नहीं.

मुल किमत ३ रुपिया व भेट किमत १ रुपया

—: युक्ति प्रकाश :—

अगर आपको बौद्धमतसे वाकब होना हो और उनका खंडन देखनेकी इच्छा होतो सिर्फ एकही युक्तिप्रकाश (मूल और भाषांतर सहित) नामका ग्रंथ मंगवाकर देखे इस ग्रंथमे जैन धर्मकी बहोतही अच्छी प्रकारसे मंडन किया है और बौद्ध मतका खंडन किया है.

कर्ता कवि पद्माविजयजी गणि **तृतीया आ. मुल किमत २ रु. भेट किमत १ रु.**

विचित्र वस्तु ?) **खुष खबर** **(अद्भुत चीज**

खास कामरुप देशोपन्न वह असली **सियालसिंगी** जिसकी तारीफमे लोग यह कहा करते हैं की-- " **सियालसिंगी श्वेतवाजा क्या करेंगा रुठा राजा** " जिसको हमने गहरे परिश्रमके साथ प्राप्त की है. इसको विधिपूर्वक मंत्रसे मंत्रित करके पास रखने वालोंकी सर्वेच्छाओंकी सिद्धी होती है वशी करणमेंभी यह अपने ढंगकी एक है, तथा इसके प्रभावसे राजसभामें सन्मान, मुकदमोमें विजय प्राप्ति, भूत पिशाचादिकोंका उत्पात नष्ट, ३६० मूठ अपने शरीरपर नहीं आती कामरुप देशके लोक मंत्रितकर जांघको चीरकर बीचमे रखते है. शत्रूभी वशमें होकर शरणमें आ जाता हैं. वशी करणमें भी यह सियालसींगीं अपने ढंगकी एक है न्योछावर रुपीया २॥

हाथाजोडी नामका एक वृक्षका फल जो देखनेमें साक्षात हातके अंगुलियोंसे वेष्टित है पारदर्शक है जिसकी किंमत प्रतिहात्त चार आना है. दो हाथसे दश हाथतकका मिलता है कमसेकम दो हाथका आता है ज्याहामें दश हाथतक जो बडेही परिश्रमसें प्राप्त हुवा है प्रकृतिकी जो वृक्षोमें ऐसे २ फल लगते है. यह वृक्ष कामरूप देशमें होता है. एक डब्बीमें मंत्रसे मंत्रित करके जिसके नामसे वह रखलो बस वह वश हो जायगा. दश हातका बहुत जल्दी काम करता है तरकीब साथमें भेजी जाती है.

नोट:--हाथा जोडी ओर सियाल सिंगी इन प्रभावशाली वस्तुओने जनतामे बहुतही धुम मचाई है इन वस्तुओंकी उपरा उपरी मांगणी आनेसे नयास्टॉक मंगवाना पडा सैंकडो प्रमाण पत्र आये है. ओर उनकी मुल कीमत से बहुतही कम किमत रखी है. आपभी इन वस्तुओंका जरूर उपयोग करे.

Aho ! Shrutgyanam

वळी अहिं बीजी रीते पण १२-८ एटले २०, ४-१६ एटले २०, १७-३ एटले २०, ९-११ एटले २०, अथवा १९-१ एटले २०, तथा ७-१३ एटले २०, तथा दशमां शून्य होवाथी एक न्यून करतां ९ थाय ते ९-११ एटले २०, तथा पांचमाथी एक बाद कर्ये ४, अने छ मांथी एक बाद कर्ये ५ आवे, जेथी [५+४=९] गणी ९-१०-१ एटले २०, तथा दशना स्थाने [शून्य होवाथी एक बाद करतां नव गणीने] ५-६-९ एटले २०, ए प्रमाणे बे बे अंकस्थान मेळवीने गणाती बीजा प्रकारनी २० नी गणत्रीओ पण थाय छे ते यथा योग्य जाणवी. गंभीर अर्थना विषयवाळी होवाथी गंगाप्रवाह ग्रंथमां कहेला आ वीसना यंत्रमां ए प्रमाणेज गणत्री गणवी.

राजन्महैभै ८ निधिभि ९ स्त्रिलोक्यां ३।
राज्यंभुजाभ्यां २ लभतेश्व ७ चक्रैः ॥
शिवं ११ दिशा १० मब्धि ४ जयारसढ्यां।
६-५ नरोत्रयंत्राद्विहरज्जिनानां ॥

अर्थः-विराजता एवा महान् हस्ति ओ वडे [अहिं हस्ति एटले यंत्रपक्षे ८ वडे] तथा निधि वडे (९ वडे) त्रण=३ लोकने विषे भुजाओ वडे [२ वडे] अने अश्व [एटले ७ ना] समूहवडे शिव=११ दिशा=१० अने अब्धि=४ ना विजयवाळुं रस=६ सहित अथवा रस=५ सहित एवा राज्यने वीसविहरमान जिनेश्वरोना आ विंशति यंत्रथी अहिं-आ लोकमां मनुष्य प्राप्त करे छे. [अर्थात् ८-९-३ । २-७-११ । अने १०-४-६ अथवा ५ ए त्रण पंक्तिगत अंकस्थानो रूप वीस विहरमानना विंशति यंत्र वडे मनुष्य आ लोकमां राज्य प्राप्त करे छे.]

इति यंत्रे सर्वत्र एकक लेखने योजना ज्ञेया ॥

ए प्रमाणे यंत्रमां सर्वत्र १ नो अंक स्थापवाथी ए विंशति यंत्रनी योजना जाणवी.

Aho ! Shrutgyanam

आग्रेमे जुम्मा मस्जीदके प्रवेश करते जमना हाथके दर्गापर

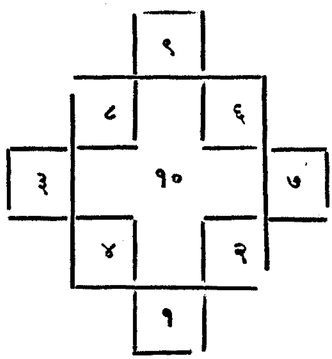

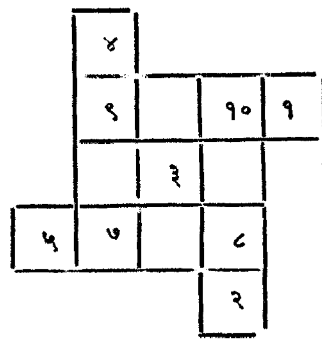

२	३	४
१	१०	९
६	७	८

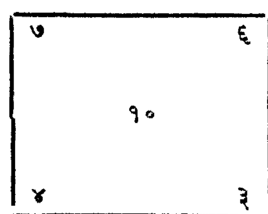

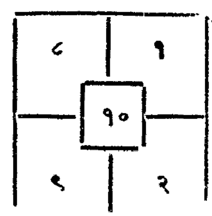

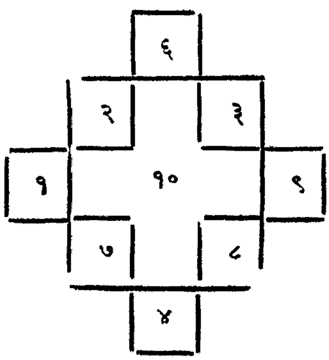

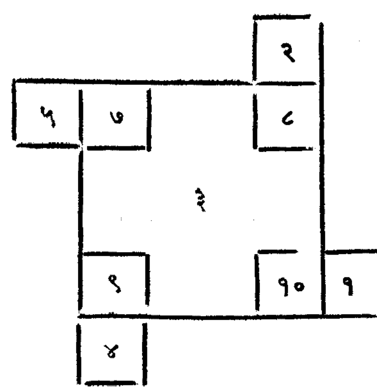

Aho ! Shrutgyanam

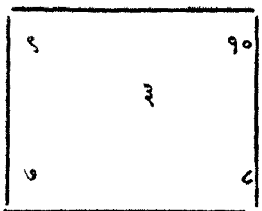

श्रीशीतलनाथजीका मंदिर सुरत

२	९	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

सिध्यचक्र

२	७	६
९	५	१
४	३	८

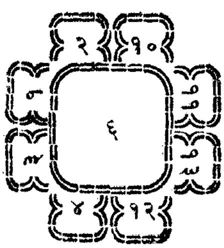

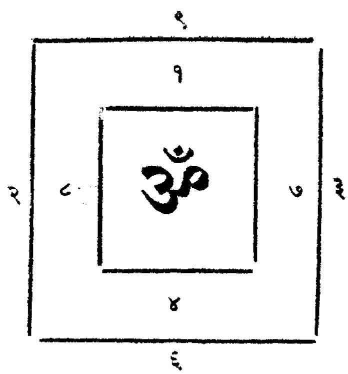

बगदाद शरीफ महबुबमियाके रोजेका है.

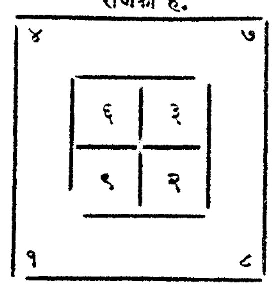

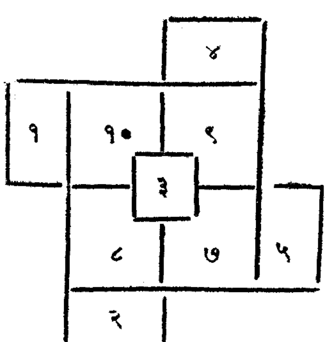

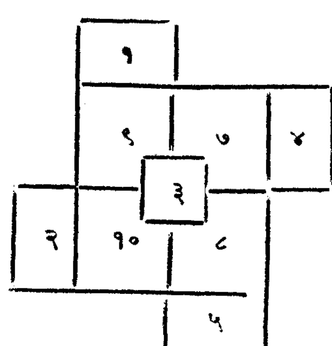

Aho ! Shrutgyanam

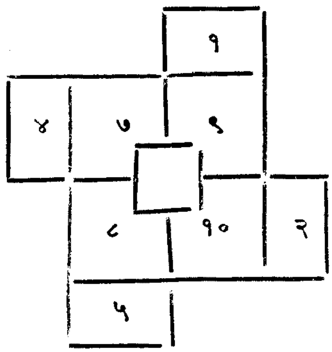

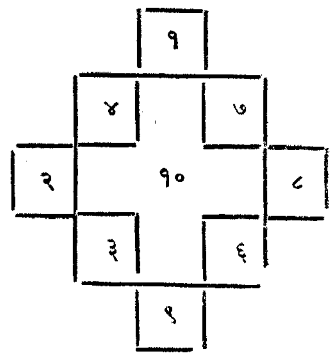

क्वचितस्थानद्वैतात् क्वचिद्पिच कोष्टत्रितयतः ।
समस्ताद्व्यस्ताद्वा क्वचिद्धिकतो वोन करणात् ॥
अभूत संख्या विंशत्यत्पनुगममयी विंशतिमिता ।
ततस्तस्याः पद्मोदितमपिचयंत्रं विजयतात् ॥ १ ॥

अर्थ–अे प्रमाणे कोई वखत बे स्थानथी (बे गृहोमां रहेला बे अंक-स्थानोथी,) कोई वखत त्रण गृहमां रहेला त्रण अंकस्थानोथी, कोई वखत संपूर्ण अंकस्थानोथी, कोई वखत व्यस्त (अपूर्ण) अंकस्थानोथी कोई वखत अे आदि अधिक करीने, अने कोई वखत छ आदि न्यून करी पण मेळवतां विंशति यंत्रने अनुसरनारी २० नी संख्या प्राप्त थाय छे, ते कारणथी ते विंशति संख्यानो पद्मावती देवीअे कहेलो यंत्र पण विजयवंत वर्ते छे ॥ १ ॥

वाचकैर्मेघविजयै- विंशतुयंत्रसुसूत्रितम् ॥
श्री वीरपार्श्वयत्पद्मा-नुभावादस्त्क सिद्धिदम् ॥ २ ॥

अर्थः–अे प्रमाणे श्री वीरप्रभु अने पार्श्वप्रभुना तथा पद्मावती देवीना प्रभावथी श्रीमेघविजयजी उपाध्याये जे आ विंशति यंत्रनी सूत्रणा [रचना] रची ते विंशति यंत्र सर्व सिध्धिने आपनारो थाओ ॥ २ ॥

इतिश्री पद्मावती स्तवन कथित विंशति यंत्र प्रतिष्ठा ॥ श्रीरस्त्क

Aho ! Shrutgyanam

॥ विंशतियंत्र प्रतिष्ठा ॥

अे प्रमाणे पद्मावती देवी ना स्तोत्रमां कहेला विंशति यंत्रनी प्रतिष्ठा [अंक स्थापना अथवा अंक गणत्री] समाप्त थई.

॥ अथ शुद्रोत्तमा अष्टमी गतिः ॥ विंशतियंत्रस्य ॥

अब्धि४त्रि ३ सिद्धि ८ नव ९ वाण५कु१दृग् २नगां ७गे६ ।
प्यंकं क्रमेण विलिखेत्खलु शुद्र लक्ष्म्यै ॥
एषैव यावनिक यंत्रकृताप्रतिष्ठा ।
स्यादष्टमी विजययंत्रवरेविशिष्टा ॥ १ ॥

अर्थः-अब्धि=४, त्रि=३, सिद्धि=८, नव=९, बाण=५, कु=१, दृग्=२, नग=७, अंग=६, अे [४-३-८-९-५-१--२-७-६ नंबरवाळा] कोठाओना क्रमथी २ आदि अंक निश्चय शुद्रनी लक्ष्मीने अर्थे लखवा, अने अेज क्रमवाळी यवनना विंशति यंत्रनी स्थापना पण करीअे तो ते आ आठमी गति आ श्रेष्ठ विजय यंत्रमां अति उत्तम कहेली छे. (शुद्रोने माटे अति उत्तम छे.) ॥ १ ॥

अत्रापि विंशतिमिता ननु योजनाःस्यु-
स्तामुग्धबोधविधये परिशीलनीया ॥
रुद्रा ११ रसा ६ स्त्रय ३ इति प्रथमाकु १ भूपा १६ ।
रामा ३ पराकु १ रस ६ विश्व १३ पदैस्तृतीया ॥ २ ॥

८	९	३
२	७	११
१०	४	५ ६

१ आ शुद्रोत्तम विंशति यंत्रमां पण यथास्थाने १-१ ना अंक स्थापतां यवननो विंशतियंत्र बने छे.

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः—ओ आठमी गतिवाळा यंत्रमां पण वीसनी योजना [गणत्री] जे रीते थाय छे, ते रीति मुग्ध जनना बोधने अर्थे कहेवा योग्य छे, त्यां प्रथम ११-६-३ ओ प्रथम रीति, त्यारबाद कु=१, भूप=१६, अने राम=३ ओ रीते १-१६-३ नी बीजी रीति, त्यारबाद कु=१, रस=६ अने विश्व=१३ ओ रीते १-६-१३ ओ त्रीजी रीति जाणवी. (ओ त्रणे रीते २० थाय छे.) ॥२॥

अर्का १२ भू ० वसुभिः ८ पक्ष २—
दशे १० भै ८ भू १ कु १ धृत्यतैः १८ ॥
भू १ शैल ७ भू १ कृतें ४ द्वं १ गै ६—
रिंदु १ शक्र १४ रसैः ६ पुनः ॥ ३ ॥

अर्थः—तथा १२-०-८ ओटले २० ओ चोथी रीति, २-१०-८ ओटले २० ओ पांचमी रीति, १-१-१८ * ओटले २० ओ छट्ठी रीति, [ओ त्रण रीति, १२-१०-१८ नी बीजी पंक्तिमां थाय छे.] तथा [१७-१४-१/१ ९/५ /६ नी बीजी पंक्तिमां] १—७—१—४—१-१/६/५ ओटले २० ओ सातमी रीति, १४-६ ओटले २० ओ आठमी रीति, ॥ ३ ॥

भू १ सिंधु ४ दिवसैः १५ पंक्त्या—वायतत्वेनवाप्यमू ः ॥
उद्धत्वोशिव११दृक् २ शैले७-रेका१र्के१२मुनि७भिस्तथा ॥४॥

अर्थः—तथा १-४-१५ ओटले २० ओ नवमी रीति, ओ प्रमाणे आयत [आडी—दीर्घ] पंक्तिओमां ओ नव रीतिओ २० थाय छे. हवे उर्ध्व पंक्तिनी रीते (११-१२-१७ नी पहिली पंक्तिमां) ११-२-७ ओटले २० ओ पहेली रीति, अने १-१२-७ ओटले २० ओ बीजी रीति. ॥ ४ ॥

१

૧૧	૧૬	૧૩
૧૪	૧૦	૧૬
૧૯ ૧૫	૧૮	૧૩

ओ चालु गणाती रितीओ आ यंत्रमाथी गणवी.

* कुधृत्युतैः ओ पदमां कु=१ ते धृति=१८ उतैः=सहित ओवो अर्थ छे जेथी भू कु धृत्युतैः ओटले १—१—१८.

२ अहिं ६ अने ५ नी सदृशता गणीने २० नो अंक गणवो.

Aho ! Shrutgyanam

भूमीं १ दु १ धृति १९ भिश्चात्र-सावर्ण्यात्सप्तकेऽष्टतः ॥
यद्वैककत्रयेभेद त्वष्टासौ १७ परिपूर्यते ॥ ५ ॥
व

अर्थः-तथा १-१-१८ अेटले २० अे त्रीजी रीति. अहिं १७ ने बदले १८ गण्या ते ७ अने ८ नी सदृशता विचारीने गण्या छे. अथवा तो अे पंक्तिमां १ अंकना त्रण भेद [अेटले त्रण अेकडा ने सत्तर साथे परिपूर्ण करवा, अेटले १-१-१-१७ अेटले २० अेम पण गणवा. ॥ ५ ॥

कला १६ भू ० वार्धि ४ भिश्चांग ६-
दृश १० सिंधु ४ निमीलनैः ॥
षट् ६ व्योम ० मनुभि १४ र्विश्व १३
भू १ र्म्यंगै ६ र्भू १ धृती १८ दु १ भिः ॥ ६ ॥

अर्थः-तथा (१६-१०-१४ अे बीजी उर्ध्व पंक्तिमां) १६-०-४ अेटले २० अे चोथी रीति, ६-१०-४ अेटले २० अे पांचमी रीति, अने ६-०-१४ अे छठ्ठी रीतिअे २० गणवा. [पुनः १३-१८-$\frac{१ १}{१ ७}$/६ अे त्रीजी उर्ध्व पंक्तिमां] १३-१-६ अेटले २० अे सातमी रीति, तथा १-१८-१ अेटले २० अे आठमी रीति ॥ ६ ॥

भू १ राम ३ भू १ दिनै १५ स्त्रे ३ क १-कला१६भिर्वाथ कोणके॥
त्रि ३ दृशां १० गै ७ रेक १ दृश १०-नवभि ९ श्चेहते नव ॥७॥
षड्न पंचदशतः-शेषे नवयतोमताः ॥
यद्वैकोनाःषट् ६ च पंचै--कोनाः पंच ५ चतुर्मिताः ४ ॥ ८ ॥

अर्थः-तथा १-३-१-१५ अेटले २० अे नवमी रीति. अथवा ३-१-१६ अेटले २० अे पण नवमी रीति छे. हवे विदिशिनी [१३-१०-१७ नी] पंक्तिमां ३-१०-७ अेटले २० अे पहेली रीति अने [११-१०-१९ नी पंक्तिमां] १-१०-९ अेटले २० अे बीजी रीति. अहिं ९ गण्या ते पंदरमांथी छ न्यून

Aho ! Shrutgyanam

करतां ९ आवे ते गणवा. अथवा अेक न्यून छ अेटले ५ अने अेक न्यून पांच अेटले ४ प्रमाणनो अंक आवो, ॥ ७ ॥ ८ ॥

योगे चतुर्णां पंचानां—नववागो ९ ऽज १ धारणात् ॥
एवं विंशतयोविंश—प्रमाणाइह जज्ञिरे ॥ ९ ॥

अर्थः— अे रीते पण ४ अने ५ ना योगे ९ नो अंक जाणवो. ते साथे अेकनो अंक स्थापवाथी १९ थाय, अे रीते वीस प्रकारनी वीसनी गणत्री अहिं थई. ॥ ९ ॥

देव्या पद्मावत्या भगवत्या स्वप्नकथित यंत्रस्य ॥
संवादार्थं विवृतं वाचक मेघादिविजयेन ॥ १० ॥

अर्थः—भगवती पद्मावती देवीअे स्वानमां कहेला आ विंशाति यंत्रना संवादने अर्थे [गणिती रीति प्रगट करवाने अर्थे] श्रीमेघविजयजी उपाध्याये आ यत्रनुं विवरण कर्युं. ॥ १० ॥

भवंति नानायंत्राणां गतय स्तेन विंशतेः ॥
यंत्रे शठकृताक्षेप विक्षेपायोद्यमोप्यसौ ॥ ११ ॥

अर्थः—वळी विंशाति यंत्रथी बीजा पण अनेक प्रकारना यंत्रोनी गतिओ [रीतिओ] प्राप्त थाय छे. ते कारणथी, तेमज आ विंशाति यंत्रमां मूर्खज नोवडे करता आक्षेपोने दूर करवा माटे पण मारो आ उद्यम छे अेम जाणवुं. ॥ ११ ॥

इति विजययंत्राष्टम गत्यायवनमत विंशाति यंत्रप्रतिष्टा ॥

अे प्रमाणे विजययंत्रनी आठमी गतिवडे यवनना मते विंशाति यंत्रनी स्थापना दर्शावी. ॥ इति. ॥

Aho ! Shrutgyanam

॥ अथ ग्रहोपरिशकुनम् ॥

आइच्चेनथ्थिलाहो । सोमे रिद्धीय मंगलेमरणम् ॥
बुध गुरु सुक्के लाहो । सनिराहूरोरवं मरणम् ॥ १ ॥

अर्थः-विंशति यंत्रमां सूर्य होय तो लाभ न थाय, चंद्र होय तो ऋद्धि प्राप्त थाय, मंगल होय तो मरण प्राप्त थाय, बुध गुरु शुक्र ओ त्रण होय तो लाभ थाय, अने शनि तथा राहू होय तो रौरव [भयंकर] मरण थाय ॥ १ ॥

बुधे चंद्रोतरे मार्गे-समीपे गुरुशुक्रयोः ॥
भौमे रवौ तथा दूरे । आपद्राहु शनैश्चरे ॥ २ ॥

अर्थः-बुध अने चंद्र होय तो अनरे समुद्रमां प्रयाण थाय, गुरु अने शुक्र समीप होय तो मार्गमां प्रयाण थाय, मंगळ अने सूर्य होय तो दूर देशमां गमन थाय, अने राहु तथा शनि होय तो आपदा प्राप्त थाय. ॥२॥

आदित्ये दृष्टि दोषःस्यात् । सौमे शरीरसंभवः ॥
भौमेच डाकिनीदोषः । गोत्रदेव्याबुधेपुनः ॥ ३ ॥

अर्थः-पुनः सूर्य होयतो द्रष्टि दोष थाय, चंद्रहोय तो शरीरसंबंधि दोष प्राप्त थाय, मंगल होयतो डाकिनी दोषथाय, अने बुध होयतो गोत्र देवीनो दोष प्राप्त थाय ॥ ३ ॥

गुरौचक्षेत्रपालस्य । शुक्रेचजलमातरः ॥
शनैश्चरे भूतदोषः । पितृदोषश्चराहुजः ॥ ४ ॥

अर्थः-गुरु होयतो क्षेत्रपालनो दोष प्राप्त थाय, शुक्र होय तो जलदेवी नो दोष गणाय, शनिहोयतो भूतदोष, अने राहुथी पितृदोष प्राप्त थाय छे ॥ ४ ॥

॥ इति ग्रहोपरिशकुनम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

२०

१७	१२	११
१४	१०	१६
१५ १९	१८	१३

ब्राह्मणे उत्तम

२०

१५ १९	१४	१७
१८	१०	१२
१३	१६	११

क्षत्रिये उत्तम

२०

१३	१८	१५ १९
१६	१०	१४
११	१२	१७

वैश्ये उत्तम

२०

११	१६	१३
१२	१०	१८
१७	१४	१५ १९

शुद्रे उत्तम

२०

११	१२	१७
१६	१०	१४
१३	१८	१५ १९

ब्राह्मणे मध्यम

२०

१३	१६	११
१८	१०	१२
१५ १९	१४	१७

क्षत्रिये मध्यम

२०

१५ १८	१८	१३
१४	१०	१६
१७	१२	११

वैश्ये मध्यम

२०

१७	१४	१५ १९
१२	१०	१८
११	१६	१३

शुद्रे मध्यम

अथकेचिदिदं यंत्रं । विंशतेर्गतिभेदतः ॥
प्राहुः श्रीवाहुबल्याद्या-मुनयोनयकोविदाः ॥ १ ॥

अर्थः--हवे नय ना ज्ञानीओ एवा बाहुबली आदि केटलाक मुनीओ आ विंशति यंत्रने गतिभेदथी (बीजी कोई जूदीज गणत्रीथी) कहे छे. ॥१॥

युक्तं तदुक्तमास्थाप्य । तदत्रैवप्रपंच्यते ॥
यतः स्यात्सुदृशांलक्ष्मी-जैनानामविनश्वरा ॥ २ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः--ते पण तेमनुं कहेवुं युक्त छे, माटे तेमना कहेवा प्रमाणे ते गतिभेदथी पण विंशति यंत्रने हुं विस्तारपूर्वक कहुं छुं के जेथी साम्यगृदृष्टी अेवा जैनोने अविनश्वर अेवी मोक्ष लक्ष्मी प्राप्त थाय छे. ॥ २ ॥

वांछात्रिभक्त फलपंचम् ५ वन्हि ३ षट्क ६-
आद्या १ ष्ट ८ कोशगतिरत्रसुधांशुवृध्या ॥
रूपोनितंगुण ३ फलं मुनि ७ वेद् ४ नंद् ९-
नेत्रे २ षुतल्लिखिततो नवकोष्टयंत्रम् ॥ ३ ॥

अर्थः--इष्ट राशिने त्रणो भागतां जे जवाब आवे ते अंकने पंचम अेटले पंचमा गृहमां [मध्यगृहमां] स्थापवो, अने त्यारबाद त्रीजा छट्टा पहेला अने आठमा गृहमां अनुक्रमे अेकेक वृद्धिथी अंक स्थापतां जवुं, अने अने सातमा चोथा नवमा अने बीजा अे चार गृहोमां अनुक्रमे [मध्यस्थापित अंकथी] अेकेक न्यून करवाथी जे त्रण जवाब अंकथी आवे ते अनुक्रमे स्थापवा अने चोथो जवाब अंकथी न आवे तो ० शून्य स्थापवी अे प्रमाणे नव कोठानो यंत्र लखवो. ॥ ३ ॥

षोडशादिके विशेषः

परन्तु १६ आदिना यंत्रमां जे विशेषता छे ते दर्शावाय छे.—

इष्टराशेस्तृतीयोंशः । पंचोनः ५ स्याद्वितीयके ॥
रूपा १ धिकोऽश्वे ७ षष्टे ६ च । क्रमाप्तादेकवर्धनम् ॥ ४ ॥

अर्थः—इष्ट राशिना त्रीजा भागमांथी पांच बाद करतां जे आवे ते बीजा कोठामां स्थापवो त्यारबाद सातमा कोठामां [बीजा कोठाना अंकथी] १ अधिक स्थापवो, तेमज छट्टा कोठामां पण अनुक्रमे प्राप्त थयेला अंकथी [सातमा कोठाना अंकथी] १ अधिक अंक स्थापवो. ॥ ४ ॥

त्रिभागेचैकवृद्धौस्या-द्वयेऽधिके त्रयाधिकः ॥
क्रमान्मध्येतथेशाने । कौवेर्यासद्वयाधिकः ॥ ५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः अेक वृद्धिवाळो त्रिभाग होय अथवा तो बे वृद्धिवाळो त्रिभाग होय तो ते अनुक्रमथी मध्यमां तथा इशान कोणमां बे अधिक सहित अंक स्थापवो. ॥ ५ ॥

क्रमेणग्नौचवारुण्या–भंकवृद्धिर्विधीयते ॥
एवंयथेष्टयंत्राणि । जायंतेनवकोशके ॥ ६ ॥

अर्थः–त्यारबाद अनुक्रमे अग्निकोणमां अने पश्चिम दिशामां अंकवृद्धि करवी, अे प्रमाणे नव कोठाओमां इष्टराशिवाळो कोइपण यंत्र बने छे ॥६॥

अत्राप्येकाधिकोमत्वे । स्वत्वात्पंचषडंकयोः ॥
समाधानं नशंकात्र । सारूप्याद्यावनेमते ॥ ७ ॥

अर्थः–अहिं पण अेक अधिक अथवा अेक न्यून अंकथी यंत्र बेसतो होय तो पांच अने छ ना अंकमां सरखापणुं गणीने समाधान करवुं [अेटले गणित बराबर मेळववुं] अने अे बाबतमां शंका न करवी, कारणके यवनोना मतमां [पण] पांच अने छ नुं सरखापणुं स्पष्ट रीते कहेलुंज छे. ॥ ७ ॥

७	०	५
२	४	६
३	८	१

१२

८	०	५
२	४	७
३	९	१

१३

८	०	६
२	५	७
४	९	१

१४

६	०	९
८	५	२
१	१०	४

१५

९	०	७
३	५	८
४	११	१

१६

६	१	९
८	५	३
२	१०	४

१६

Aho ! Shrutgyanam

७	१	९
८	६	३
२	१०	५

१७

७	१	१०
९	६	३
२	११	५

१८

८	१	१०
९	७	३
२	११	५

१९

७	१	११
१०	६	३
२	१२	५

१९

११	१	८
३	७	१०
५	१२	२

२०

८	१	११
१०	७	३
२	१२	५

२०

१०	३	१३
१२	९	५
४	१४	८

२६

१२	५	१५
१४	११	७
६	१६	१०

३२

१२	६	१५
१४	११	८
७	१६	१०

३३

१३	६	१५
१४	१२	८
७	१६	११

३४

१२	६	१६
१५	११	८
७	१७	१०

३४

१३	६	१६
१५	१२	८
७	१७	११

३५

१४	१९	१२
१३	१५	१७
१८	११	१६

४५

१८	११	२१
२०	१७	१३
१२	२२	१६

५०

२३	१६	२१
१८	२०	२२
१९	२४	१७

६०

Aho ! Shrutgyanam

अथाष्टें ८ दु १ षड् ६ वन्हि ३ वाणा ५ द्रि ७ वार्धि ४–
गृह् ९ द्वी २ तिरीतिर्विंशामुत्तमासौ ॥
तयास्थाप्पते विंशतेर्यंत्रमत्र ।
यथादेविपद्मावती संस्तवादौ ॥ १ ॥

अर्थः–हवे आठमुं पहेलुं छट्ठुं त्रीजुं पांचमुं सातमुं चोथुं नवमुं अने बीजुं ओ अनुक्रमथी नव गृहमां [कोठाओमां] अंकस्थापना करवाथी ओ विंशति यंत्र वैश्योने माटे अति उत्तम कह्यो छे, अने ते जेवी रीते पद्मावती देवीना स्तोत्रादिकमां विंशतिनो यंत्र [वैश्योमाटे] दर्शाव्यो छे तेवी रीते अहिं पण ते यंत्र स्थापवो. ॥ १ ॥ ते आ प्रमाणे—

[२]

२	९	४
७	५	३
६	१	८

१५

३	११	५
९	७	४
८	२	१०

२०

वारुणी ८ श १ यमा ६ ग्न्या ३ शा–
मध्य ५ वायु ७ त्तरा ४ दिशि ॥
पलाद् ९ शक्र दिक्कोशैः ।
स्यात्पंचदशयंत्रकं ॥ २ ॥

१ ओ कोठाओमां अनुक्रमे १-२-३-४-५-६-७-८-९ अंको स्थापन करवाथी १५ नो यंत्र बने छे, अने २-३-४-६-७-८-९-१०-११ स्थापवाथी २० नो यंत्र बने छे.

२ ओ पंदरना यंत्रमां विचारीओ तो श्लोकमां जे गृहोनो क्रम ८-१-६-३-५-७-४-९-२ ओज कोठाओना नंबर प्रमाणेनाज अंक पश्चानुपूर्वीओ उलटा क्रमे आवेला छे.

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः—अहिं आठमा पहेला छट्टा त्रीजा पांचमा सातमा चोथा नवमा अने बीजा ए गृहोमां अनुक्रमे [१-२-३-४-५-६-७-८-९] अंको स्थापवाथी १५ ना अंकवाळो यंत्र बने छे. ॥ २ ॥

यंत्रे पंचदशानांत न्मध्ये पंचकलेखनं ॥
अष्टादशानांयंत्रांतः । ततः षट्कः प्रतिष्ठितः ॥ ३ ॥

अर्थः—ते कारणथी १५ ना यंत्रमां मध्यकोठामां ५ नो अंक लखवो, अने तेथी [अथवा त्यारबाद] १८ ना यंत्रमां मध्यकोठामां ६ नो अंक लखाय छे ॥ ३ ॥

एक विंशतियंत्रस्य । मध्यसप्तक एवतत् ॥
अंकास्तत्रैकादशांतः । द्वादशान्तः मृषाततः ॥ ४ ॥

अर्थः—अने ते कारणथी २१ ना यंत्रमां मध्यकोठामां ७ नोज अंक स्थपाय छे, अने त्यारबाद अंकस्थापना [त्रणथी] ११ ना अंक सुधीनीज स्थपाय छे, परन्तु जेओ १२ ना अंक सुधीनी स्थापना कहेछे ते मृषा-मिथ्या छे ॥४॥

विंशतेर्नत्रिभिर्भाग–स्तेनाष्टदशयंत्रवत् ॥
सिद्धिकोशेद्विकंदत्वा–यंत्रमार्गसमाश्रयेत् ॥ ५ ॥

अर्थः—वळी २० ना अंकनो त्रीजो भाग थतो नथी [कारणके शेष वधे छे,] माटे १८ ना यंत्रवत् आठमा कोठामां २ नो अंक स्थापीने त्यारबाद यंत्रना मार्गनो (यंत्र गतिनो) आश्रय करी अंक स्थापतां जवुं ॥ ५ ॥

चंद्रकोशेत्रिकः षष्टे । कोशेपि चतुरोधरेत् ॥
षट्र पंचवाग्निकोशस्था । ऐक्यान्मध्येतुसप्तकः ॥ ६ ॥

अर्थः—[ते यंत्र मार्गनो आश्रय आ प्रमाणे—] पहेला कोठामां ३ स्थापवा, छट्टा कोठामां ४ स्थापवा, अग्निकोणमां रहेला कोठामां ५

Aho ! Shrutgyanam

अथवा ६ ए बन्ने अंक सदृश गणीने स्थापवा, अने मध्य कोठामां ७ स्थापवा || ६ ||

वायावष्टनवोदीच्यं । निधौदशाद्वितीयके ||
कोशेएकादशस्थाप्या । एतद्यंत्रंहि विंशते || ७ ||

अर्थः--वायुकोणमां ८, उत्तरमां ९, नवमा कोठामां १०, अने बीजा कोठामां ११ स्थापवा, ए प्रमाणे विंशति यंत्र [वैश्योमाटे] थयो || ७ ||

यद्येक विंशयंत्रेपि । आदिरेकादशांतकः ||
अंकन्यासो विंशतेस्तत् । यंत्रेके द्वादशांतता || ८ ||

अर्थः--जो २१ यंत्रमां पण त्रणथी अगिआर सुधीनाज नव अंक स्थापना आवेछे, ते तो विंशति यंत्रमां तो बारसुधीना अंक आवेज केवी रीते ? [कारणके २१ थी तो २० नो यंत्र १ न्यून अंकवाळो छे.] || ८ ||

ततः पंचदशादियंत्राणि

४	१०	१
२	५	८
९	ॐ	६

१५

२	९	४
७	५	३
६	१	८

१५

२	१०	४
८	५ ६	३
६	१	९

१६

२	१०	५
८	६ ५	३
७	१	८

१७

३	१०	५
८	६	४
७	२	९

१८

३	११	५
९	६	४
७ ८	२	१०

१९

Aho ! Shrutgyanam

३	११	५
९	७ *	४
८	२	१०

२० वैश्योत्तमा

३	८	९
६	१०	४
११	२	७

ब्राह्मणोत्तम २०

१७	२	१
४	१०	६
९	८	१३

२०

* ३–११–५ इत्यादि विंशति यंत्र वैश्यमां उत्तम छे.

१	६	१३
२	१०	८
१७	४	९

२०

शुद्रोत्तम

४	११	६
९	७	५
८	३	१०

२१

* १३	१८	१९
१६	१०	१४
११	१२	१७

४०

आ पद्मावती यंत्र छे.

सप्तको विंशतेयंत्रे । मध्यभागे प्रतिष्ठितः ॥
तत्षोडशनवस्थाने । दशस्थानेश्वयुग् ७ दश ॥ ९ ॥

एकादशककोशस्था । अष्टादशततोधृताः ॥
सप्तवृध्यैतिकोशानां । त्रयंयंत्रेऽत्र सूत्रितम् ॥ १० ॥

अर्थः–विंशाति यंत्रमां ७ नो अंक मध्यभागमां रहेलो छे, तेथी नवना स्थाने १६ अने दशना स्थाने १७, अने कोठामां आगिआर आवेला होय तो तेने स्थाने १८ स्थापवा, अे प्रमाणे आ यंत्रमां त्रण कोठा सात सातनी वृध्धिअे स्थापवा कह्या छे. ॥ ९ ॥ १० ॥

१ पूर्वे कहेवायला विंशति यंत्रमां जे ७ आदि अंको स्थाप्या छे, ते अंकोने स्थाने अेटले ते अंकोने बदले कहेवाता अंको स्थापवा, परंतु " ते अंक जे कोठामां आव्यो छे ते कोठामां " अेम नहीं.

Aho ! Shrutgyanam

सप्तार्धेनत्रिकेणापि । योजने स्थानकत्रयी ॥
सप्तस्थानेदशन्यासा-देकादशतदष्टके ॥ ११ ॥

अर्थः-तथा सातनुं अर्ध त्रण [साडा त्रण तो पण पूर्ण अंकनी आपेक्षाओ त्रण] छे, ते त्रणनी योजना पण त्रण स्थानोमां---त्रण कोठामां करवी. जेथी सातना स्थाने १० स्थापवा, अने आठना स्थाने ११ स्थापवा.॥११॥

वाणषट्कपदेन्यस्ते । नवकेशेषमप्यतः ॥
द्वित्रिचारुचतुष्कानां । स्थानेप्यंकास्तएवहि ॥ १२ ॥

अर्थः-तथा पांच अथवा छ ना स्थाने ९ स्थापवा, अने बे त्रण तथा मनोहर अंक जे चार अे त्रण अंक ना स्थाने तो अेना अेज अंक रहेवा देवा. ॥ १२ ॥

सर्वत्रप्येककोधार्यः । परमेश्वरवाचकः ॥
इतिपद्मावती यंत्रे । नवकोशाइमेऽभवन् ॥ १३ ॥

अर्थः-वळी अे सर्व कोठाओमां परमेश्वरना अर्थवाळो १ नो अंक स्थापन करवो, अे प्रमाणे पद्मावती यंत्रमां [पद्मावती देवीना वीसवा चालीसना यंत्रमां] नव कोठा थया. ॥ १३ ॥

मध्यात्सप्ताष्टचंद्रांगे-षुकाधिक्यंचतुष्टये ॥
कोणां४क९भुज२रामे ३ षु । पुनरेकाधिकःक्रमः ॥ १४ ॥

---

२ अे पद्मावती यंत्रनी स्थापना आ प्रमाणे

१३	१८	१९
१६	१०	१४
११	१२	१७

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः-[अे उपर कहेली अंकस्थापना आ प्रमाणे-] सातमो आठमो पहेलो अने छट्टो अे क्रमवाळा चार कोठाओमां मध्य अंकथी अनुक्रमे अेकेकनी वृध्धिअे अंक स्थापना करवी (१०-११-१२-१३ अंको स्थापवा,) अने त्यारबाद चोथा नवमा बीजा अने त्रीजा अे चार कोठाओमां पण त्यांथी आगळ [१३ थी आगळ] अेकेक अधिक वृध्धिअे अंको स्थापवा [अर्थात् १४-१५-१६-१७ अे अंको स्थापवा. ॥ १४ ॥

आद्यात्रयेऽधिकेतुर्यः । षष्टात्रयेधिकेनिधिः ॥
मध्यात्रयेधिकेप्याद्यः । इत्थंकोशात्रयाधिकाः ॥ १५ ॥

अर्थः-अे प्रमाणे अंक स्थापना करवाथी पाहिला कोठामां जे अंक आव्यो छे, तेथी त्रण अधिक वृध्धिवाळो अंक चोथा कोठामां आवे छे, अने छट्ठा कोठाना अंकथी त्रण अधिक नवमा कोठानो अंक आवे छे, मध्य कोठाना अंकथी त्रण अधिक पहेला कोठानो अंक आवे छे, अे प्रमाणे त्रण कोठा त्रण त्रण अधिक अंकवाळा छे. ॥ १५ ॥

आद्यात्पंचाधिकाःद्विष्टा-मुने ७ पंचाधिकाःकृते ४ ॥
सिद्धे ८ पंचाधिकानंदे ९ इतिपंचाधिकात्रयी ॥ १६ ॥

अर्थः-तथा पहेला कोठाना अंकथी पांच अधिक अंक बीजा कोठामां रह्यो छे, अने सातमा कोठाना अंकथी पांच अधिक अंक चोथा कोठामां आवे छे, अने आठमांथी पांच अधिक अंक नवमा कोठामां आवे छे, अे प्रमाणे त्रण कोठाअे पांच पांच अधिक अंकवाळा छे. ॥ १६ ॥

भूविश्वांकाआद्यकोशे । तद्धःक्षणचंद्रभाक् ॥
तद्धश्चंद्रपृथिवी-त्यंकैःकोशत्रयीभृता ॥ १७ ॥

अर्थः-त्यां पहेला कोठामां भू=१ अने विश्व=३ अेटले १३ नो अंक स्थपाय

१ पंचदशयंत्रात् २० यंत्रे पंचाधिकत्वात्.

* आद्यात् अेटले पंदरना यंत्रथी-इतिटिप्पनिकायां.

Aho ! Shrutgyanam

छे, अने तेनी नीचे क्षण=६ अने चंद्र=१ अेटले १६ नो स्थपाय छे, तेनी नीचे चंद्र=१ पृथ्वी=१ अेटले ११ नो अंक स्थपाय छे, अे प्रमाणे त्रण जातना अंक स्थानो वडे [१३-१६-१७ वडे] त्रण कोठा (पहेली अधः पंक्तिअे त्रण कोठा) भरायला—स्थपायला छे. ॥ १७ ॥

युग्मैकधरणंसिद्धौ । व्यस्ताःसंख्याक्रमात्परे ॥
एकादशेभ्यःपरतो । यथायुग्मैकमाहितम् ॥ १८ ॥

अर्थः-तथा [सिध्धमां=] आठमा कोठामां युग्मैक अेटले १२ नो अंक स्थापवो, त्यारबाद आगळ आगळना [वांमावर्तना] क्रमथी अेकेक वृद्धिवाळा अंको स्थापवा. जेम ११ पछी अेक अधिक १२ नो अंक स्थाप्यो [संबंध अग्रगाथामां] ॥ १८ ॥

तथा षोडशतोवृद्धौ । निधौसप्तदशस्थिताः ॥
पूर्वेषोडशतोभूमी-विश्वांकस्यात्तदुत्तराः ॥ १९ ॥

अर्थः-तेम १६ थी अेक अधिक १७ नो अंक निधिमां अेटले नवमा कोठामां स्थापवो. तथा १६ थी पूर्वे १३ नो अंक छे, तेथी ते तेरना अंक थी अेक अधिक अंक [संबंध अग्र गाथामां] ॥ १९ ॥

चंद्राभोनिधयः१४षष्ट-स्थानस्थाःर वे निधेः ९ पदात् ॥
पूर्वं पूर्वांकवृद्धत्वा-दधोपिचंद्रवार्धयः ॥ २० ॥

अर्थः-चंद्रांभोनिधि=१४ थाय ते नवमा कोठाथी उपरना छठ्ठा कोठामां स्थापवो. वळी पूर्व पूर्वना [१६ आदि] अंकोथी अेकेक अधिक वृद्धिवाळा [१७ आदि] अंको होवाथी जेम छठ्ठा कोठामां चंद्रवाधि अेटले १४ नो अंक आव्यो छे, तेम छठ्ठाथी नीचेना नवमा कोठामां पण १७ नो अंक छे ते पण चंद्रवार्धिसंज्ञा वाळोज आवेलो छे. ॥ २० ॥ [तेनुं कारण कहेवाय छे]

तत्रांभोनिधिशद्बेन । सप्तसंख्याक्रमान्मताः ॥
निबघ्नंतियतःप्राच्या-श्चतुरः सप्तवांबुधीन् ॥ २१ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः-अंभोनिधि अथवा वार्धि आदि जे समुद्रवाचक शद्बो छे, ते समुद्र वाचक शब्दोनी संज्ञा वडे सातनो अंक पण क्रमथी कहेला छे, जे कारणथी प्राचीन विद्वानो समुद्र शब्दथी ४ अथवा७नो अंक कहे छे. ॥२१॥

सूत्रमेकं यथाकार्य-द्वये प्राहुः प्रसाधनम् ॥
तथांभोनिधिशद्बोयं । कोशद्वितयसाधकः ॥ २२ ॥

अर्थः-जेम अेकज सूत्र बे कार्यमां साधन रूप कह्युं छे, तेम आ समुद्र-वाचक शब्द पण अहिं बे कोठाओना बे अंकनो १४-१७ नो साधक छे. ॥ २२ ॥

षष्टातुखेवाणवृध्या । स्यादंकं एकोनविंशते ॥
चतुर्दशांकेवाणोने । यद्वानवकलेखनम् ॥ २३ ॥

अर्थः-छट्टा कोठाथी उपर [छट्टा कोठाना १४ थी] पांच अधिक अंकवाळो १९ नो अंक आवे छे, अथवा अेज १४ मांथी पांच * न्यून करतां जे ९ नो अंक आवे छे, छट्टा कोठा उपर त्रीजा कोठामां लखवो. ॥ २३ ॥

चतुर्दशांकदग्रेपि । यद्वापंचदशांककः ॥
प्राप्तस्तमात् षड्नत्वे । लेख्याअग्नि पदे३नव ॥ २४ ॥

अर्थः-अथवा चौदनी आगळ पंदरनो अंक आवे छे, ते पंदरमांथी छ बाद करतां [कोठानो छ नो अंक बाद करतां] ९ प्राप्त थाय छे, माटे पण पण त्रीजा कोठामां ९ अंक लखवो. ॥ २४ ॥

षड्नत्वेमनो१४रंके । वसव ८ स्तिथिसंमिते १५ ॥
पंचोनत्वेदिशोमध्ये१० । षड्वसूनदिक्चसूत्रितं ॥ २५ ॥

२ वाणोनत्वे षट्सु एक शेषात् अग्रे नवाकात्

* बाणोनत्वे षट्सु एक शषात् अग्रे नवांकान्=कोठानो ६ नो अंक तेमांथी ५ बाद करतां १ आवे तेनी अग्रे, छट्टा कोठामां रहेला १४ अंकमांथी ५ बाद करतां ९ आवे ते स्थापतां १९ नो अंक बीजी कोठामां स्थपाय.—इति टिप्पनिका भावार्थ.

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः--मनु=१४ ना अंकमांथी [छट्टा कोठाना १४ मांथी] छ न्यून करतां वसु=८ आवे, अने [१४ ने बदले अग्रांक] १५ मांथी पांच बाद करतां दिशा=१० आवे, ते मध्यमां स्थापवो ओ प्रमाणे ६-८-१० ओ त्रण अंकनी सूत्रणा रचना दर्शावी छे. ॥ २५ ॥

यद्वाद्यतुर्यकोशस्थ-त्रिकषण्मेलनान्नव ॥
सिध्यं८क९कोशयोर्द्वि२श्च७-योगादपियथानव ॥ २६ ॥

अर्थः--अथवा पहेला अने चोथा कोठामां रहेला ३ अने ६ ने मेळवतां ९ थाय, अथवा आठमा अने नवमा कोठामांना २ तथा ७ ओ [१२ मांना २ तथा १७ मांना ७ ओ बे ने मेळवतां पण जेम ९ थाय छे. ॥ २६ ॥

तथाषष्टपदस्थायि । चतुःकेणक्रमागतः ॥
पंचकोयोज्यतेजातं । निश्चयान्नवधारणम् ॥ २७ ॥

अर्थः-अथवा छट्टा कोठामां रहेला [१४ मांना] ४ अंकनी पछी अनुक्रमे आवतो [अंकगणितना अनुक्रममां आवतो] ५ नो अंक, ते बे ने मेळवतां पण निश्चयथी ९ नुं अंकस्थापन त्रीजा कोठामां थाय छे. ॥ २७ ॥

नवकेपिचपंचाख्या । तस्यस्थानेतदासनात् ॥
यद्वामध्य[3]स्थपंचाके । पूर्वां[६४]कमेलनान्नव ॥ २८ ॥

अर्थः-[ओ चार अने पांचनो अंक मेळववानुं कारण के] नव कमां पण पांचनुं नाम छे, (अर्थात् ‘ नव ’ कहेवाथी पांच नो अर्थ थाय छे,) कारण के पांचना स्थाने नवनो अंक पण [विंशति यंत्रमां जेम १५ वा १६ वा १९ अेकज कोठामां आवे छे तेम] आवे छे. माटे अथवा नवनी

१ पद्मावती स्तोत्रना आ ग्रंथमांज दर्शवेला पहेला मूळ काव्यमां बीजा चरणामां कहयुं छे.

Aho ! Shrutgyanam

संख्यामां पांचनो अंक सर्वथी मध्यमां आव्यो छे. माटे ते पांचना अंकमां पूर्वनो चारनो अंक मेळवतां पण ९ थाय छे. ॥ २८ ॥

षट्कपंचकयोरंत-र्भावात्सर्वांकसंग्रहः ॥
व्याख्यायांनवतत्साक्षात् । बाणषण्नवसूत्रतः ॥ २९ ॥

अर्थः--अथवा सर्व अंकनो एटले नव अंकनो अंतर्भाव पांच अने छ ए बे अंकमां छे, ते कारणथी व्याख्यामां [आ विंशति यंत्रनी वृत्तिमां] जे नवनो अंक छे ते ने साक्षात् ५-६-९ ए त्रणे अंकनी सूत्रणाथी [त्रणे अंक रचनामां सदृशपणाथी] कह्यो छे. ॥ २९ ॥

वसवोऽष्टौ भुज२स्थाने । तेऽष्टदशसचद्रतः ॥
चंद्रांभोनिधिसूत्रस्य । चंद्र शद्धस्यसंगहात् ॥ ३० ॥

अर्थः--त्यां वसु एटले ८ नो अंक ते [भुजस्थाने=] बीजा कोठामां लखवो अने तेने चंद्र=१ सहित करतां १८ नो अंक थाय, कारणके चंद्रांभोनिधि ए सूत्रथी अहिं चंद्र=१ नुं ग्रहण [अनुवृत्तिथी] ग्रहण करवानुं छे. ॥३०॥

बाणवृद्धा जवेत्यर्थात् । षड्वृद्धा सवोथवा ॥
चतुर्दशपदे षष्टे । तेसप्तदशतोहिखे ॥ ३१ ॥

अर्थः--पांचनी वृद्धिथी [आठमा कोठानो १२ मांनो २ नो अंक जेम] जव=७ थाय छे, अने छ नी वृद्धिथी ८ थाय छे, तेथी छट्टा कोठामां १४ ते सत्तरनी उपर रहेला छे (६+८=१४ तथा ९+८=१७ ए प्रमाणे बने अंक १४ अने १७ ते पोताना कोठाथी आठ आठ अधिक छे.) ॥ ३१ ॥

---

१ संख्यायां पंचको मध्यस्थः तस्मिन सर्वांका मिळंति सर्व मुखस्थानमवर्णमित्यादिवत्= जेम सर्व अक्षरोमां अ वर्ण मुख्य छे, कारणके तेमां सर्व अक्षरोनो समावेश थाय छे, तेम सर्व (नव) अंकोमां ५ नो अंक मध्यस्थ छे, तेमां सर्व अंक मळे छे.
२ पंचकात् पूर्वांकः ४ तेन मेलने नव=स्पष्टार्थः—

Aho ! Shrutgyanam

वाण५षड् योगतेश्चेका-द्शतत्संमुखेनव ॥
मध्य१०नवधिकं चाग्नौ । प्राच्यांवस्वधिकंततः ॥ ३२ ॥

अर्थः--तथा पांच अने छ मळीने ११ नो अंक जेम (१६ मांना ६ वा ५ नी नीचे) सन्मुख रह्यो छे, तेम [१४ ना] ४ अने ५ मळीने बनेलो ९ नो अंक पण १४ नी उपर १९ ना रूपमां सन्मुख रह्यो छे, अने विदिशिमांथी ११ नी पण सन्मुख रह्यो छे ॥ तथा मध्यगत १० थी ९ अधिक एवो १९ नो अंक अग्निकोणमां आव्यो छे, त्यारे अेज १० थी ८ अधिक १८ नो अंक पूर्व दिशामां आव्यो छे ते योग्यज छे ॥ ३२ ॥

पाठांतरे वाणरूप । वसुदिग्दिगीतीरणात् ॥
स्युःपंचद्शतद्वाण-रूपाभ्यामिह राम३गाः ॥ ३३ ॥

अर्थः--पाठान्तरथी (अन्य ग्रंथना पाठमां) बाण रूपा वसु दिग् दिग् अे प्रमाणे कहेवाथी ते बाण=५ रूप=१ मळीने १५ थाय छे ते त्रीजा कोठामां स्थपाय छे. ॥ ३३ ॥ (अहिं १९ वाळा त्रीजा कोठामांज १५--१९ अे बे लखाय छे.)

वसुयुक्तादिशस्तेष्टा-द्शद्वितीय कोशगाः ॥
दिशोमध्यगताएवं । सिद्धं विंशतियंत्रकं ॥ ३४ ॥

अर्थः--अने वसु ८ सहित दिशा=१० अेटले १८ नो अंक बीजा कोठामां स्थपाय छे. अने दिशा=१० नो अंक तो मध्यमां होय छेज, अे रीते पण विंशतियंत्र सिद्ध थाय छे ॥ ३४ ॥

खेचराभास्कराद्याये । ईशादिषुदिशास्वमी ॥
भूविश्वाद्यास्तथैवांका-न्यसनीयायथागमम् ॥ ३५ ॥

अर्थः--तथा इशान कोण विगेरे दिशाओमां अनुक्रमे सूर्य विगेरे ग्रहो स्थापवा, अने अनुक्रमे [भू विश्व=] १३ विगेरे अंको पण आगमने अनुसारे स्थापवा. ॥ ३५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अत्रैवमंका एकाद्या । यावदेकोनविंशतिः ॥
एक वेश्मनि सावर्ण्यात् । चितायां पंचषट्कयोः ॥ ३६ ॥

अर्थः—अे प्रमाणे अे विंशाति यंत्रमां १ थी मांडीने १९ सुधीना अंक यथा योग्य [१०-११-१२ इत्यादि रीते आवे, परन्तु १-२-३ इत्यादि रीते नहिं. अे रीते] आवे. कारणके अेक कोठामां ५ अने ६ नो अंक सदृश होवाथी अेक अेकठो आवे छे (अर्थात् १५--१६ अे बे अंक अेकज कोठामां आवे छे.) ॥ ३६ ॥

पुनःपुनश्चंद्रपदा-दमृतांशोःप्रधानता ॥
पद्मावत्याःसाधनेषु । चक्रेश्वर्यारवेरिव ॥ ३७ ॥

अर्थः—पुनः पुनः चंद्र=१ नो शब्द [पद्मावती काव्यमां] आववाथी पद्मावतीना विंशाति यंत्रमां चंद्रनी प्रधानता छे, जेम चक्रेश्वरी देवीना यंत्रमां सूर्यनी प्रधानता छे तेनी पेठे. ॥ ३७ ॥

ततःपंचदशांकस्यां—तर्भावः क्रियतेबुधैः ॥
कलावाचि षोडशांके । सर्वत्र पंचकाश्रयात् ॥ ३८ ॥

अर्थः—ते कारणथी विद्वानो कळावाचक ('कला' शब्दथी) १६ ना अंकमां सर्वत्र ५ ना अंकनो आश्रय होवाथी १५ ना अंकनो अंतर्भाव करे छे [अर्थात् १६ अने १५ अे बे चंद्रनी कळा अने तिथिवाचक होवाथी सदृश गणीने गणितमां तुल्य गणे छे.] ॥ ३८ ॥

यथैकादशतः पंच—धिकत्वे षोडशोपरि ॥
चतुर्दशोपरितथा । युक्तैवैकोन विंशतिः ॥ ३९ ॥

अर्थः—जेम सातमां कोठाना*११ ना अंकथी चोथा कोठानो १६ नो अंक

❋ एकादशादिषु १-२-३-४-५-६ पंच षट्कयोरेकत्वात् ७-८-९-१० इति. ततः ११-१२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९ इत्येकसर्वांकाः अर्थात् ११ थी १९ सुधीनानव अंक ते १ सहित सर्वे अंक गणवा.

Aho ! Shrutgyanam

पांच अधिक छे, अने उपर आवेलो छे, तेम त्रीजा कोठानो १९ नो अंकपण छट्ठा कोठाना १४ ना अंकथी पांच अधिक होईने उपर आव्यो छे ते युक्तज छे. ॥ ३९ ॥

यंत्रेस्याद्विंशतेः सैके । चत्वारिंशत्सु संग्रहात् ॥
एकोनविंशतौतत्र । केवलं नवकं ग्रहः ॥ ४० ॥

अर्थः-वळी सर्व कोठामां १ सहित होवाथी अे विंशति यंत्रमां ४० नो संग्रह [सर्व बाजुथी ४० नी गणत्री] थवाथी अेज विंशति यंत्र ४० नो यंत्रपण गणाय. परंतु तफावत अेज के अेमा १९ ना स्थाने केवळ ९ नो अंक गणत्रीमां लेवो परंतु १ नो अंक न गणवो ॥ ४० ॥

एकोनविंशतिःपूर्णा । संख्येयाकोण योजने ॥
नान्यथासंगातियंत्रे । वैषम्यात्त्रिविभाजने ॥ ४१ ॥

अर्थः-परन्तु खूणाथी खूणानी [विदिशिनी] पंक्ति गणतां अे १९ नो अंक संपूर्ण गणवो. नहितर त्रण[1] विभागमां विषमता आववाथी यंत्रने विषे यंत्र पद्धति—गणितरीति मळती आवे नहिं. ॥ ४१ ॥

सैक त्रि३वसु८खेटां९कै-श्चत्वारिंशच्च विंशतेः ॥
यंत्रे तदस्य द्विगुण । फलदानस्य सूचनम् ॥ ४२ ॥

अर्थः--१ ना अंक सहित ३, अेटले १३ अेक सहित वसु=८ अेटले १८ अने अेक सहित खेट ९=अेटले १९ मांथी ९ अे त्रण मळीने अे विंशति यंत्रमां ४० थाय छे. तेथी अे यंत्र द्विगुण फळ आपे अेवी सूचना वाळो छे. कारणके ४० ते वीसथी द्विगुण छे, माटे फळ द्विगुणं छे. ॥ ४२ ॥

---

१ त्रणे मळीने ४० नी गणत्री न थवाथी अहिं त्रण विभागनी विषमता जाणवी.

Aho ! Shrutgyanam

अत्रकेचिदूचुर्न भुविश्वेत्यादिकाव्ये यंत्रन्यासः किन्तु भु इत्येकाक्षरोमंत्रः विश्वेति त्रयोदशाक्षरः ईक्षण इति द्व्यक्षर इत्यादि अक्षरगणनया मंत्र भेदान् व्याख्याति तदल्पं यंत्राधिकारात् तथा १-१३-२-।११-१२-१- इति पुनरेकाक्षर मंत्र गणनापत्तेश्च यदि विश्व शब्देन त्रयंतदापि १-३-२ ११-१२-१ तथैव यदि संख्या शब्देन एक संख्या पदेन १९ तदा तावत्संख्याक्षर मंत्रस्य दोषः प्रतीतः एवं षण् नव वसू नित्यत्र नवाक्षरे प्रोक्ते पुनः खेचर पदेन तदुक्तिर्ज्ञेया आशा पदेन दिक् पदे नच पौनरुक्त्यं। तथा भू विश्व १३ ईक्षण चंद्र १२ चंद्र पृथिवी ११ युग्मैक१२इत्यत्रापि तद् भावनीयमीति अत्रापि विंशति २० योजना तत्र प्रथमं निरेकत्वे योजना ३-८-९ ॥ ६-१०-४ ॥ ११-२-७ ॥ ३-६-११ ॥ ८-१०-२ । ९-४-७ । ३-१०-७ । ९-१०-१ । इत्यष्टधा योजना.

अत्र एकादशस्थाने कोणगत्यां एक गणनं 'एक एकु एक' इति लोके एकेन गुणने तदेव इति शास्त्रे संख्यायां अविवक्षातः अविवक्षापि एकस्य वस्तुस्वरूपात् स्वात्मलाभे परानपेक्षणात् 'लहु संखिज्जं दुचिय' इति सिद्धान्त वचनात् चैके

भू विश्वेत्यादि यंत्रे । विंशतिर्गति मेलने ॥
गतीनां विंशति ज्ञेया । गुरुणामुपदेशतः ॥ ४३ ॥

३-८ ९ । १-१८-१ । ३ एकोना अष्ट ७-१-९ यद्वा कोशद्वयेन विंशतिः १३-७ एवं २० ततः १-१९ एकोन करण ज्ञापक बाण् षण् नव सूत्रं बाणोनाः षट् तदा एक एव । एव मेकाधिकत्वेपि सैक निरेक विधे ज्योतिःशास्त्रादौ प्रसिद्धेः नवस्थाने पंचकं भावने १३-१-१-५ । १-१८-१ । १-३-१-१५ अत्रांक व्यस्त करणे ज्ञापकं 'बाणरूप वसुदिक् दिगितिपाटः अथ बाण षण् नव इति पाठात् पंचक स्थाने षट् भावने १३-१-६ । १-३-१ ८-१-६ । ३-१-१६ एव मुपरितनं पंक्तौ विंशति योजना एकादशधा ऐश्वर्ये तृतीये कोशे १५ रक्षायां १६ विद्यार्थे १९ अग्निकोणे लेखनं १६-०-४ । ६-१०-४ । ६-०-१४ । इति मध्यपंक्तौ तिस्रो योजना ११-२-७ ।१-१२-७ । १-२-१७ । इत्यधः पंक्तौ त्रेधायोजना एवमायतरीत्या ९ योजना शेष माधिकं तत्रांक वैरूप्यात् १३-६-१ । ३-१६-१ । ३-६-११ । इति प्रथम पंक्तौ

Aho ! Shrutgyanam

विंशतित्रयं १८-०-२ । ८-१०-२ । ८-०-१२ । इति मध्य पंक्तौ विंशतित्रयं ९-४-७ एकाधिक ४ तदा ५ तदधः एकोन ७ तदा ६ एवं ९-५-६ । ततः एकोन ४ तदा ३ एकाधिकाः सप्त ७ तदा ८ एवं ९-३-८ अथ नव ९ स्थाने पंचभावने १५-४-१ । ५-१४-१ । १-१-१-१७ । अत्रैक कोप्यधिकः १५-१९ इति द्वेधा एकस्मिन् कोशे स्थापनात् पंचकस्थाने षड्भावने १६-३-१ एकोन ६ तदा ५-१४-१ एकाधिकाः ६ तदा ७ पुनः एकाधिकथं ४ तदा ५ पुनः एकाधिकाः सप्त ७ तदा ८ एवं ७-५-८ । इति तृतीय पंक्तौ उद्धत्वे विंशतित्रयं ३-१०-७ । कोणे ९-१०-१ द्वितीय कोणे अत्रापि ११ स्थाने एकगणने समाधिः प्राग्वत् मूलमेकं एव तत्र मध्यस्थ दशानुरोधा-देकादश भावात् एवं ९ योजना आयतत्वे ९ योजना उद्धत्वे गतिद्वयं कोणयोः एवं सर्वा विंशतिवारं विशतयः अत्र १३-७ एवं २० इयं योजना अदोलन सिंहासन यंत्रादिषु मध्य पंक्तौ कोशद्वय मीलनात्तावदंक साधनात् तदनुसारेण तथा १-३-१-१५ इत्यादि योजना कोश चतुरंक मीलनात् जायते सा कमलाकार विंशति यंत्रे कोशचतुष्टय मेलनानुसारा द्वेघा शेषा योजना अपि सूत्रस्य गंभीरार्थत्वात् यंत्रेषु गतीनां वैचित्र्या-चावगम्याः ' भू विश्व १३ क्षण चंद्र १६ चंद्र पृथिवी ११ युग्मै क १२ संख्याक्रमात् चन्द्रांभोनिधि १७-१४ बाणू षणू नव १५-१६-१९ वसू न् ८ १८ दिक् १० खेचरादिषु ॥

अर्थः—अहिं केटलाक अेम कहे छे के—भू विश्व इत्यादि पदोवाळा प्रथम कहेवायला विंशति यंत्र संबंधीं पद्मावती काव्यमां यन्त्रन्यास अेटले अंक सूचना वा अंकस्थापना कही नथी, परंतु भू अे अेकाक्षरी मन्त्र छे, अने विश्व अे पदथी १३ अक्षरवाळो मन्त्र, अने इक्षण* अे पदथी बे अक्षरवाळो मंत्र [ईक्षण अेटले नेत्र अर्थ होवाथी बे अक्षरवाळो मंत्र] छे, इत्यादि रीते अक्षरोनी गणत्री वडे मंत्रना भेदोनी व्याख्या करी छे पण ते अहिं अल्प अेटले गौण छे, कारणके अहिं तो यंत्रनो अधिकार चाले छे.

* काव्यमा क्षण अेटले ६ ना अर्थ वाळो शब्द कह्यो छे. अने अहिं ईक्षण शब्द बे अर्थवाळो कह्यो ते पश्चातनो शब्द विश्व छे तेनो बदले विश्वे होय तो तेम थाय.

Aho ! Shrutgyanam

तथा १[१]-१३-२ । ११-१२-१ अे प्रमाणे पुनः अेकाक्षर मंत्र गणनानी प्राप्ति होवाथी जो विश्व शब्दथी ३ विचारीअे तो पण १-३-२ । ११-१२-१ थाय अने ते प्रमाणे ' संख्या ' अे शब्द वडे अेक शब्द सहित १९[r] थाय, त्यारे तो तेटली संख्यावाळा अक्षरोनो अेटले १९ अक्षरोनो मन्त्र [विंशाति मंत्र] दोष वाळोज समजाय छे, अने अे प्रमाणे तो पण नव वसुनी=६-९-८ अे पदोमां नव अक्षर कह्या छे, अने पुनः खेचराशादिषु अे पदोमां खेचर अे पदवडे पण ९ अक्षर कह्या छे, तेथी द्विरुक्ति कथन दोष जाणवो, अने आशा अेटले १० तेमज दिक् अेटले पण १० अे पण द्विरुकि पुनरुक्ति दोष प्राप्त थाय छे.

तथा भू विश्व=१३ ईक्षण चंद्र=१२ चंद्र पृथिवी=११ अने युग्मैक=१२ अे पदोथी अेमां पण विंशातिनी अेज भावना विचारवी (अेटले सदोष छे विचारवी) इति तर्क विचार समाप्तः

हवे द्विगुण गणत्रीवाळा विंशाति यंत्रना गतिभेद कहेवाय छे.

अत्रापि विंशाति २० योजना——तत्र प्रथमं निरेकत्त्वे योजना

अर्थः-अहिं [४० नी गणत्रीवाळा] विंशाति यंत्रमां २० नी योजना आप्रमाणे—त्यां प्रथम १ ना अंक रहित ३ आदि अंकोथी २० नी गणत्री थाय छे ते आ प्रमाणे—

पहेली तीर्च्छी पंक्तिमां [१३-१८-१९ मां] ३-८-९ अेटले २० ॥
बीजी तीर्च्छी पंक्तिमां [१६-१०-१४ मां] ६-१०-४ अेटले २० ॥
त्रीजी तीर्च्छी पंक्तिमां [११-१२-१७ मां] ११-२-७ अेटले २० ॥

---

१ भू=१ विश्व=१३ इक्षण=२ चंन्द्रचंन्द्र=११ पृथ्वीयुग्म=१२ एक=१ [अथवा एक=१ अने संख्या=९=१९)

r एक=१ संख्या-९ अेटले १९

४०	४०	४०	४०	४०
४०	१३	१८	१९ १५	४०
४०	१६	१०	१४	४०
४०	११	१२	१७	४०
४०	४०	४०	४०	४०

० इति द्विगुणांक विंशतियंत्रे ४०

Aho ! Shrutgyanam

पुनः अे प्रमाणे अधःपंक्तिमां [अेटले १३-१६-११ इत्यादिरीते] ३-६-११ अेटले २०॥ ८-१०-२ अेटले २०॥ ९-४-७ अेटले २०॥ पुनः बेविदिशि पंक्तिओमां ३-१० ७ अेटले २० ॥ ९-१०-१=२० ॥ अे प्रमाणे आठ प्रकारे अेकना अंक रहित * गणत्री करी

अहिं विदिशानी पंक्तिमां ११ ना स्थाने जे बे अेकडा छे तेनो गुणाकार करतां 'अेक अेके एक' अे प्रमाणे लोकमां अेक वडे [कोईपण रकमने] गुणवाथी जवाब तेनो तेज आवे छे, माटे शास्त्रमां १ ना अंकने संख्यानी विवक्षा नथी अेटले १ ने संख्यामां गण्यो नथी, कारणके अेक छे ते पोते वस्तु स्वरूप अेटले स्वाभाविक छे, कारण के स्वात्मलाभमां (अेटले अेकना ज्ञानमां) परनी [बीजी] वस्तुनी अपेक्षा नथी होती. ते कारणथी सिद्धान्तनुं पण वचन छे के 'लहु संखिज्जं दुच्चिय' लघु संख्यात [अेटले ओछामां ओछी संख्या] निश्चय बेज छे.

॥ भू विश्वादि विंशति यंत्रनी २० गति. ॥

अर्थः–हवे भू विश्व इत्यादि पदोवाळा पद्मावती यंत्रनी वीशनी गणत्री २० रीते थाय छे, ते वीस गतिओ श्रीगुरुना उपदेशथी आ प्रमाणे जाणवी. ॥ ४३ ॥

अर्थः– अहिं १३-१८-१९ अे पहेली पंक्तिमां ११ रीति आ प्रमाणे—
३-८-९ अेटले २०—अे त्रण अंकथी
१-१८-१ ,, २०— ,,
३-७-१-९ ,, २०—अे चार अंकथी (अहिं १ न्यून ८ अेटले ७ छे.)
१३-१७ ,, २०—अेमां १ न्यून करवानी रीति बाण पण नव अे
१-१९ ,, २०—सूत्रथी बाण=५ न्यून ६ अेटले १४ अे प्रमाणे
अेकाधिकपणामां पण अेज सूत्र जाणवुं अने अे १ उमेरवानी तथा १ बाद करवानी विधी ज्योतिष शास्त्रादिकमां प्रसिद्ध छे.

* अहिं १० अने ११ ना अंकनो अेकडो प्रक्षिप्त नथी पण स्वाभाविक छे माटे ते गणत्रीमां लीधो छे अने १२-१३ इत्यादिमांना अेकडो प्रक्षिप्त होवाथी ते गणत्रीमां लीधा नथी. कारणके ९ थी ११ सुधीना स्वाभाविक अंक गणवा.

Aho ! Shrutgyanam

हवे नवमा स्थाने [१९ ने बदले] ५ नो [१५ नो] अंक विचारतां १३-१-१-५ अेटले २० ॥ १-१८-१ अेटले २० ॥ १-३-१-१५ अेटले २० थाय छे. अहिं अंकोने छूटा पाडवानी रीतिने जणावनार वाणरूप वसु दिग् दिग् अेज पाठ [पद्मावती काव्यमां कह्यो छे ते] जाणवो. हवे बाण षण् नव अे पाठथी पांचना स्थाने ६ विचारीअे तो १३-१-६ अेटले २० तथा १-३-१-८-१-६ अेटले २० तथा ३-१-१६ अेटले २० अे प्रमाणे उपरनी पहेली २० नी योजना अगिआर प्रकारे थई. अने काव्यमां कहेला अैश्वर्य रक्षण लक्ष्मी अने भारती अे चार मांथी अग्निखूणामां त्रीजा कोठामां १५ नो अंक अैश्वर्य माटे १६ नो अंक रक्षा माटे अने १९ नो अंक विद्यानो माटे स्थापवो.

अर्थः--मध्य पंक्ति १६-१०-१४ मां २० नी गतिओ आ प्रमाणे—१६-०-४ अेटले २० ॥ ६-१०-४ अेटले २० ॥ ६-०-१४ अेटले २० अे त्रण रीति मध्य पंक्तिमां थई.

तथा ११-१२-१७ अे निचेनी पंक्तिमां ११-२-७ अेटले २० ॥ १-१२-७ अेटले २० ॥ १-२-१७ अेटले २० ॥ अे प्रमाणे नीचेनी अे पंक्तिमां पण त्रण योजना दर्शावी. अे प्रमाणे आयत गति [तीच्छी दीर्घ पंक्तिनी पद्धतिअे] नव गति अे २० नी योजना दर्शावी, अने शेष [आठ] रीतिओ अंकना विषमपणाथी अधिक जाणवी.

(हवे उर्ध्व गतिअे २० नी योजना विचारतां) पहेली १३-१६-११ नी पंक्तिमां १३-६-१ अेटले २० ॥ ३-१६-१ अेटले २० ॥ ३-६-११ अेटले २० ॥ अे प्रमाणे पहेली उर्ध्व पंक्तिमां त्रण गतिअे २० थाय छे.

बीजी १८-१०-१२ नी उर्ध्व पंक्तिमां १८-०-२ अेटले २० ॥ ८-१०-२ अेटले २० ॥ ८-०-१२ अेटले २० ॥ अे रीते मध्य पंक्तिमां त्रण रीति थई.

त्रीजी १९-१४-१७ नी उर्ध्व पंक्तिमां ९-४-७ अेटले २० ॥ तथा १४ मांना ४ ने अेक अधिक गणतां ५ गणीअे अने तेनी नीचे १७ ना ७ ने १ न्यून करी ६ गणीअे तो ९-५-६ अेटले २० थाय. त्यारबाद अे चारने अेक न्यून करी ३ गणीअ अने अे सातने अेक अधिक करी ८ गणीअे त्यारे ९-३-८ अेटले २० थाय. वळी ओगणीसना नवने स्थाने

Aho ! Shrutgyanam

५ विचारी ओ तो १५-४-१ ओटले २० थाय ॥ ५-१४-१ ओटले २० ॥ थाय. अने १-१-१-१७ ओटले पण २० थाय, ओमां त्रण ओकडाने बदले चार ओकठा गणवाथी ओक ओकडो अधिक गण्यो तेनुं कारणके ओगणीसना कोठामां १९ अने १५ ओ बन्ने अंक स्थापना थाय छे ते कारणथी ओ ओकज कोठाना बे ओकडा गण्या. वळी ओगणीसना कोठामां १९ अने १५नी अंकस्थापना कराय छे ते पंदरमां ५ ने अंकने ६ सदृश्य गणीओ त्यारे १६ नो पण अंक आवे तेथी १६-३-१ ओटले २० [अहिं चौदमांना चार ने ओक न्यून करी त्रण गणेला छे] पुनः ओ ६ ने ओक न्यून करी ५ गणीओ तो ५-१४-१ ओटले २० थाय. तथा ओ छ ने ओक अधिक करी ७ गणीओ [सत्तरमांना] सातने ओक अधिक करी ८ गणीओ त्यारे ७-५-८ ओटले २० थाय ओ प्रमाणे त्रीजी उर्ध्व पंक्तिमां त्रण रीते [अने न्यूनाधिक पद्धति सहित ९ रीते] वीसनी योजना दर्शावी.

विदिशिपंक्तिमां ३-१०-७ ओटले २०, अने बीजी विदिशिमां ९-१०-१ ओटले २० थाय छे. अहिं पण ११ ना स्थाने १ गणवाना कारणनुं सम्प्रधान पूर्वे कहेली रीते विचारवुं. ओमा मूळ अंक १ ज छे ते १ मां मध्य कोठामां रहेला १० ना अनुरोधथी [अनुसरणथी] ११ थयेला छे.

ओ प्रमाणे ओ विंशति यंत्रमां नव योजना (नवगति) आयतगतिवाळी, नव योजना उर्ध्वगतिवाळी अने बे योजना विदिशिगतिवाळी थवाथी वीस रीते २०-२० थाय छे ॥ इति विंशति गति भेदाः ॥

ओमां १३-७ ओटले २० ओ योजना गति अदोलान[1] सिंहासन यंत्रादि मध्य पंक्तिमां बे कोठाना अंक मेळववाथी तेटलो अंक [२० नो अंक] सिद्ध थाय छे, अने ते अनुसारे तेवी रीते १-३-१-१५ इत्यादि योजनाओ कोठाना [त्रण कोठाना] चार अंक मेळववाथी थाय छे, अने ते कमळाकृतिवाळा विंशति यंत्रमां चार कोठाना चार अंक मेळववाथी अनुस्वारे शेष योजनाओ पण जाणवी. कारणके सूत्र [भू विश्व क्षण इत्यादि पदवाळुं काव्य] गंभीर अर्थवाळुं होवाथी अने यंत्रोनी गतिओ

१ अदोलन अने सिंहासन ओ यंत्रना भेद विशेष संभवे छे.

Aho ! Shrutgyanam

विचित्र होवाथी अे प्रमाणे शेष योजनाओ (२० योजनाओथी उपरान्तनी योजनाओ) जाणवी [परन्तु गणत्रीमां २० योजनाओनुंज ग्रहण कराय छे.]

एतत्काव्यनिबद्ध शुद्धचरणा-द्यंत्रं स्फुटं विंशतेः ।
संसूत्र्यार्जितपुण्यतो विजयतां श्री तीर्थकृच्छाशनं ॥ ४४ ॥

अर्थः–भूविश्व=१३, क्षणचंद्र=१६ चंद्रपृथ्वी=११ युग्मैक=१२ अे संख्याना क्रमथी तथा चंद्रांभोनिधि=१७ अथवा १४ बाण=१५ षण्=१६ नव=१९ वसु=१८ अे चार अंकमां चंद्र पदनी अनुवृत्ति होवाथी १ नो अंकयुक्त कराय छे.] दिक्=१० तथा 'खेचराशादिषु' अे पद अनेक अर्थवाळुं पूर्वे कहेवाई गयुं छे तेथी अहिं अेनो अर्थ कह्यो नथी.] अे पदोवाळा पूर्वे कहेवाई गयेला काव्यमां रचायेला शुद्ध चार चरणोथी २० नो यंत्र जे रीते प्रगट थाय छे ते रीते २० नो यंत्र प्रगट दर्शावीने उपार्जन करेला पुण्यथी श्री तीर्थंकर भगवंतनुं शासन विजयवंत वर्तो. ॥ ४४ ॥

तद्वाणरूप वसुदिक् । दिक् पाठोपिसमार्थितः ॥
वाण षण् मुनि वस्वाशे–त्येवं पाठो विसाध्यतां ॥ ४५ ॥

वळी ते पाठमांथी बाण=५ रूप=१ वसु=८ अने दिक्=१० अे पाठ पण समर्थित कर्यो [प्रगट कर्यो] तथा बाण षण्=६ मुनि=७ वसु=८ अने आशा ४ अे पाठ पण सिद्ध कर्यो ते जाणवो. ॥ ४५ ॥

बाण दृक् श्रुतयो दिग् दिग् । एवं पाठोपि चिंत्यताम् ॥
दृग दर्शनानि षड् धातुः । श्रुतयोष्टेतिभावनात् ॥ ४६ ॥

तथा बाण=५ दृक्=६ श्रुति=८ दिग् दिग्=१०-१० अे पाठ पण विचारवो. अेमां दृक अेटले दर्शन ६ छे, अथवा छ धातु छे, तेमज श्रुतिओ ८ छे अे भावनाथी अहिं दृक् अने श्रुति शब्द जाणवा. ॥ ४६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

गति वैचित्र्यमन्यत्र । यंत्रे पंचदशात्मके ॥
दृश्यते लोक बोधाय । तदिहापि निदर्श्यंत ॥ ४७ ॥

अर्थः—वळी बीजा प्रकारना पंदरीया यंत्रमां गतिने जे विचित्रता देखाय छे ते विचित्रगति अहिं पण लोकमां ज्ञान थवाने अर्थे दर्शावाय छे ॥४७॥

' अत्रषड् द्विसप्तयंत्रे कोणगतिः ७-३-५ द्वितीय कोणगतौ ६-३ मेलने नव व्यावृत्त्य पुनः षड् गणने १५ भवंति द्वितीये ४-१०-१ अस्मिन् यंत्रे सिंहासनादि यंत्रवत् मध्य पंक्तिकोश द्वयादपि पंचदश पूरणात् यंत्राणां गति वैचित्र्यदर्शनादेव विंशतियंत्रं श्रद्धेय मिति भावः एकत्र कोण गतौ न्युनाधिकत्वे प्यदोषात्

अर्थः—अहिं ६—२—७ अे अंक स्थापनावाळा पंदरीया यंत्रमां विदिशागति ७-३-५ अेटले १५ अने बीजी विदिशागतिमां ६-३ अेटले ९, अने पुनः पाछावाळीने ६ गणतां [६-३-६ अेटले] १५ थाय छे. वळी बीजा प्रकारना पंदरीया यंत्रमां ४-१०-१ अेटले १५ अे पंदरीया यंत्रमां सिंहासनादि यंत्रनी पेठे मध्य-पंक्तिमां [अेटले बीजी उर्ध्व पंक्तिमां] बे कोठाना अंकथी [१०-५ थी] पण १५ नो अंक पूर्ण थाय छे, तेथी अेप्रमाणे यंत्रोनी गति विचित्र देखीने २० नो यंत्र पण विचित्र गतिवाळो होय अेवी श्रद्धा करवी. अे तात्पर्य

६	२	७
४	३	८
५	१०	

१५

४	१०	१
२	५	८
९	ह्रीं	६

१५

८	१	६
३	५	७
४	९	२

१५

४	३	८
९	५	१
२	७	६

१५

४	९	२
३	५	७
८	१	६

१५

८	१	६
३	५	७
४	९	२

१५

८	३	४
१	५	९
६	७	२

१५

Aho ! Shrutgyanam

छे. [अर्थात् जेम १५ ना यंत्रो विचित्रगति वाळा दर्शाव्या तेम २० ना यंत्रो पण विचित्र गतिवाळा होय अेम जाणवुं] जेथी अेक विदिशिगतिमां अंक न्यून होय (१९ वा १६ ना बदले जेम १५ होय) अथवा अधिक होय [१५ ना बदला १६ होय अथवा १९ होय] तो पण तेमां कोई प्रकारे दोष नथी अेम जाणवुं.

चंद्रांभोनिधिवाणाः षण्–मुनयो वसवो दिशः ॥
एवं पाठेपिसूत्रार्थः । साधनीयोनया दिशा ॥ ४८ ॥

अर्थः–तथा चंद्र=१ अंभोनिधि=४ [वा ७] बाण ५ षण्=६ मुनि=७ वसु=८ दिक्=९ अेवा पाठथी पण सूत्रनो अर्थ [पद्मा काव्यनो अर्थ] आ रीतिअे सिद्ध करवो [ते कहेवाय छे] ॥ ४८ ॥

भू विश्व १३ क्षण चंद्र १६ चंद्र पृथिवी ११ युग्मैक १२ इति इश १ उदग् २ वायु ३ वरुण ४ स्थान चतुष्टये अंकैः पुरिते संख्या क्रमादिति ११-१२-१३-१६ इत्यंकक्रमात् शेषाः १४-१७-१८-१९ एतेंका यथायोगं स्थानेषु धार्याः तत्रापि वाणषण् इति संज्ञया ११ तत्संमुखे १९ पुनः १२ संमुख कोशे १८ पुनः १३ संमुखकोशे १७ पुनः १६ संमुखा १४ इत्युत्क्रमादंक न्यासः अत्रपंचदशांकः पंचकषर्कयोः सावर्ण्यात्षोडशांकेंतर्भाव्यः एवं अष्टसुस्थानेषु पूरितेषु मध्य दिशोदशइत्यतोयंसूत्रार्थः संपन्नः चंद्रेनयुक्ताः अंभः जलंकूप १ नदी २ तटाक ३ आकाश ४ स्थानभेदाच्चतुर्धा यद्वा अंभः शद्वेन जलं तस्यस्थानं समुद्राश्चत्वारः निधयो नव बाण ५ षट्मुनय सप्त वसवोष्ट तान्मध्ये दशखेचरा गृहास्तेषां इशानादिदिक्षु इमान्मंत्रान् रहस्यानि ध्यायामीति ‘ मंत्ररहस्य वार्तायामित्यमरः ’ नतु मंत्रान् पाठरूपाक्षर मंत्रान् इतिअत्रध्यानाधिकारेण यंत्र लक्षणरूपध्यानाव लंबनात् पदस्थध्यानात् रूपध्यानस्याधिकयात् एतेन ‘ चंद्राभोनिधि बाणषणमुनि वसून् ’ इतिपाठसिद्धिः एवंअन्यत्रापि भावनीयं

अर्थः–भू विश्व=१३, क्षणचंद्र=१६, चंद्रपृथ्वी ११, युग्मैक=१२ अे चार अंकस्थानोने अनुक्रमे ईशानकोण–उत्तरदिशा–वायव्यकोण=अने पश्चिम दिशा अे चार दिशाना कोठामां स्थापवा. संख्याना क्रमथी अे अंक-

Aho ! Shrutgyanam

स्थानो ११-१२-१३-१६ थाय छे. जेथी ओ क्रमथी रोष रहेलां अंकस्थानो १४-१७-१८-१९ ओ अंकस्थानोने यथायोग्य कोठाओमां स्थापवा. " बाणषण् " ओ संज्ञावडे [५+६=] ११ स्थापवा, अने तेनी सन्मुख १९ नो अंक स्थापवो, [अर्थात् विदिशिपंक्तिमां सन्मुख स्थापवो]. पुनः ज्यां १२ स्थाप्या छे तेनी सन्मुख १८ स्थापवा, ज्यां १३ स्थाप्या छे, तेनी सन्मुख कोठामां १७ स्थापवा. पुनः ज्यां १६ स्थाप्या छे, तेनी सन्मुख कोठामां १४ स्थापवा, ओ प्रमाणे

१३	१८	१६ १५
१६	१०	१४
११	१२	१७

२०

अनुक्रमे अंक स्थापना जाणवी. ओमां १५ नो अंक ते पांच अने छनी सदृशता गणवाथी १६ ना अंकमां अंतर्गत जाणवो. ओ प्रमाणे आठ कोठा पूर्ण थयाबाद मध्यकोठामां दिशः=१० स्थापवा, ते कारणथी सूत्रार्थ ओ प्राप्त थयो के चंद्रांभोनिधि=चन्द्र अेटले १ सहित अंभ=जळ ते कूवा-नदी-तलाव-अने आकाशना भेदथी ४ ५ कारनुं छे. अथवा अंभ अेटले जळ, तेनुं स्थान जे समुद्र ते ४ छे (अर्थात् समुद्र संज्ञाथी ४ नो अंक गणाय छे), त्यारबाद निधि अेटले ९, बाण अेटले ५, अथवा ६, मुनि अेटले ७, वसु अेटले ८ ते सर्व अंकोनी मध्ये दश [१०] तथा खेचर अेटले गृहो ते ओने ईशानादि दिशाओमां स्थापवा. अेप्रमाणे ओ मंत्रान्=रहस्योने ध्यायामि=हुं ध्यान करुं छुं. " मंत्र " ओ शब्दनो अर्थ रहस्यवार्तामां [गोप्यवार्तोमां] प्रवर्ते छे ओम अमरकोशमां कह्युं छे. परंतु अहिं मंत्र अेटले पाठरूप अक्षरवाळा मंत्र नहिं, ओ प्रमाणे अहिं ध्याननो अधिकार होवाथी मंत्रणा लक्षणवाळा रूपध्याननुं आलंबन छे, कारणके पदस्थध्यानथी पण रूपध्यान [रूपस्थध्यान] अधिक छे, ओ व्याख्याथी " चंद्रांभोनिधि बाणषण् मुनिवसून् " ओ पाठनी सिद्धि थई ओ प्रमाणे अन्यत्र [रोष सर्व प्रकारना विंशतियंत्रोमां] पण ओ पाठना मन्त्र अेटले रहस्यो यथायोग्य विचारवां.

तपागच्छेशसूरीश । विजयप्रभसेवकः ॥

कृपाविजयधीराणां । शिष्योर्हच्छासनाश्रिये ॥ ४९ ॥

Aho ! Shrutgyanam

आत्मज्ञानका खजाना.

प्रियविज्ञ पाठकवृन्द—

आपको वह जानकर हर्ष होगा कीं, आपने जैन समाजमें आज तक गीता जैसे ग्रंथका अवश्यही अभाव था. सौभाग्यकी बात है की जिसकी पूर्ति आप महानुभावोंके समक्ष यह " **अर्हद्गीता** " ग्रंथकी चतुर्थ आवृत्ति के साथ प्रकाशित हो रही है.

वैष्णव धर्ममें भगवद्गीताकों कितना मान है. अर्हद्गीता भी मानव समुदायके लिये वैष्णव भगवद्गीतासे कहीं अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती है. यदि विज्ञ पाठकोनें इसे आपनायातो। क्योंकि यह अर्हद्गीता जिस अध्यात्मज्ञानरुपी सुधा रससे ओतप्रोत है. वह अद्वितीय हैं.

श्रीगौतमस्वामी प्रथमही प्रश्न कहते हैं कि भगवान योगियोंका ओर गृहस्थोंका मन वशमें हो जाता हैं. तो क्या कोई इसकी विधि है उत्तरमे विश्व वंदनीय प्रभु महावीर भगवान विधि बतलाने हुये क्या कहते है यह ग्रंथकी आदिमे आपके दृष्टीगोचर होगा.

विशेशमें आपको ईस ग्रंथकी प्रशंसा लेखणीद्वारा क्या करूं. पाठक आप इसको खरीदकर एक वक्त ईसका जरूर मनन करें. **मुल कीमत रु. ७ भेट कीमत रु. २**

प्यारे भाईयों ! क्या ! आपको आकाशकी सैर करनी है ?

तो फीर आप क्यों बिचार करते हों. श्रीमहावीर ग्रंथमालासें आकाशगमिनी औषधी कल्प मंगावो ताकी आपकी मनकी मुराद पुरी होगी. अगर आपको वशीकरण चहीये तो इसी कल्पके साथ गोपीचक्र नामका कल्प दिया है. ईस कल्पके द्वारा पत्थर हृदयभीमोम हो जाताहै. ओरईसीमें लिखी हुई औषधीओसे जलस्थंभन अग्नि स्थंभन आदि कार्य सिद्ध होते है. यह ग्रंथ सुश्रावक नागार्जुन का बनाया हुवा है तब इसके बारेमे विशेष क्या लिखे.

मुल कीमत रुपीया १५ व भेट कीमत रुपीया ७॥

मिलनेका ठिकाना:—**एस्. के. कोटेचा, धुलीया.**

Aho ! Shrutgyanam

जैन सायन्स जगतसुंदरी पयोगमाला.

जस महत्तर कौनथे ? जैनोंमें उनकी कितनी प्रतिष्ठा थी ? वह कितने उच्छ कोटीके पुरुषथे ?

उस भाग्यशाली पुरुषको कोन नही पहिचानताथा ? आज उस महात्मा की कीर्तीको जैन समाजके बालगोपाल सब परिचित है. अब उनके विषयमे मै क्या लिखुं.

अगर जो उनकी आश्चर्यकारक बाते देखनी होतो उनका बनाया हुवा **जगतसुंदरी पयोगमाला** नामके ग्रंथको दृष्टीगोचर करे.

इसी ग्रंथमें प्रत्येक वस्तुंओंका वर्णन दीया है केवळ वस्तुके संयोगसे अनेक चमत्कारो देख सकते हो आप इस ग्रंथको एकवक्त जरूर पढे ओर पढावे एसी आपसे नम्र प्रार्थना है.

तीसरीआवृत्ति मुल किमत रुपिया १० व भेट किमत ५ रु० एक शेठकी तर्फसे

मणिओंका उत्पत्तिस्थान.

मानतुंग शास्त्र [कर्ताः-मानतुंग सूरि]

आजतक जनताकों मणिकी उत्पत्ति ओर उसकी उपयोगिताकी बिलकुल खबर नथी। परंतु हमारे इस ग्रंथने साराही भेद बता दिया और जनताकों होशियार करा दिया. आपको इस ग्रंथसे मणिकी उत्पत्ति ओर उसकी उपयोगिताका ज्ञान होगा. मणीद्वारा अदृश्य नाहो मन वांछित स्थानपे पहुंचना, वशिकरण, महाविषधरका विष क्षण भरमें हटा देना वगैरे बहोतसे कार्य सिद्ध हो सकते है. स्तारे मणी महाशुक्र तीर्थ के एक गुप्त स्थानपर मिलते है. जिसका वर्णन ग्रंथकारने स्वयं ग्रंथमे दिया है. दुर्भाग्यकी बात है की उसकी उपयोगिता न मालुम होनेसे उसका जो उपयोग लिया जाय व न लेते हुये, उसको एसेही फेंक देनेमें आते है. परंतु अगर आप इस ग्रंथको अपने पास रखेगे तो आपको इस ग्रंथ द्वारा बहुतही फायदा होगा. इस ग्रंथके द्वारा बहुतोने मणि प्राप्त करके फायदा उठाया है आपभी लाभ उठायें.

मुल कीमत रुपीया ३ भेट कीमत रुपीया १॥

नोटः—मणिओके नाम ' हनुमान मणी, निलकंठ मणी, हंसमणी इत्यादि बहुत मणीओके जात और नाम आपको इसी ग्रंथसे मालुम होगा.

Aho ! Shrutgyanam

अर्थः-श्रीतपागच्छना अधिपति आचार्य श्री विजयप्रभसूरिना सेवक श्री कृपाविजय धैर्यगुणवाळा तेमनो हुं शिष्य ते श्री अर्हत् शासननी शोभा अथवा लक्ष्मी माटे थाओ. ॥ ४९ ॥

श्रीमेघविजयप्राप्तो--पाध्यायपदविश्रुतः ॥
भू विश्वेत्यादि काव्यस्य । व्याख्यानं चकृवानिदम् ॥५०॥

अर्थः-प्राप्त थयेला उपाध्याय पदवडे विश्रुत-प्रसिद्ध एवो हुं श्रीमेघविजय उपाध्याय तेणे आ " भू विश्व " इत्यादि पदवाळा पद्मावती विंशतियंत्रना काव्यनी विशेषव्याख्या करी ॥ ५० ॥

इति श्री पद्मावतीस्तवन मध्यस्थ भू विश्वेत्यादिकाव्यस्य विवरणं समाप्तम्.

Aho ! Shrutgyanam

परिशिष्ट नं. १

४	२	९
१०	५	०
१	८	६

१५

६	०	९
८	५	२
१	१०	४

१५

२	१०	३
६	५	४
७	०	८

१५

३	१०	२
४	५	६
८	०	७

१५

१	१०	४
८	५	२
६	०	९

१५

१	८	६
१०	५	०
४	२	९

१५

८	०	७
३	५	६
४	१०	२

१५

७	०	८
६	५	४
२	१०	३

१५

६	८	१
०	५	१०
९	२	४

१५

४	१०	१
२	५	८
९	०	६

१५

२	६	७
१०	५	०
३	४	८

१५

७	६	२
०	५	१०
८	४	३

१५

९	२	४
०	५	१०
६	८	१

१५

९	०	६
२	५	८
४	१०	१

१५

८	४	३
०	५	१०
७	६	२

१५

३	४	८
१०	५	०
२	६	७

१५

६	७	२
१	५	९
८	३	४

१५

६	१	८
७	५	३
२	९	४

१५

२	७	६
९	५	१
४	३	८

१५

२	९	४
७	५	३
६	१	८

१५

Aho ! Shrutgyanam

१०	१	७
३	६	९
५	११	२

१८

११	२	८
४	७	१०
६	१२	३

२१

१६	२	१२
६	१०	१४
८	१८	४

३०

१४	७	१२
९	११	१३
१०	१५	८

३३

१	६	३	८
७	४	५	२
८	३	६	१
२	५	४	७

१८

१	७	३	८
७	४	६	२
९	३	६	१
२	५	४	८

१९

१	७	४	८
७	५	६	२
९	३	६	२
३	५	४	८

२०

१	८	४	८
७	५	७	२
१०	३	६	२
३	५	४	९

२१

१	८	५	८
७	६	७	२
१०	३	६	३
४	५	४	९

२२

१	९	५	८
७	६	८	२
११	३	६	३
४	५	४	१०

२३

१	९	६	८
७	७	८	२
११	३	६	४
५	५	४	१०

२४

१	१०	६	८
७	७	९	२
१२	३	६	४
५	५	४	११

२५

१	१०	७	८
७	८	९	२
१२	३	६	५
६	५	४	११

२६

Aho ! Shrutgyanam

१	११	७	८
७	८	१०	२
१३	३	६	५
६	५	४	१२

२७

१	११	८	८
७	९	१०	२
१३	३	६	६
७	५	४	१२

२८

१	१२	८	८
७	९	११	२
१४	३	६	६
७	५	४	१३

२९

१	१२	९	८
७	१०	११	२
१४	३	६	७
८	५	४	१३

३०

१	१३	९	८
७	१०	१२	२
१५	३	६	७
८	५	४	१४

३१

१	१३	१०	८
७	११	१२	२
१५	३	६	८
९	५	४	१४

३२

१	१४	१०	८
७	११	१३	२
१६	३	६	८
९	५	४	१५

३३

१५	८	१३
१०	१२	१४
११	१६	९

३६

१९	५	१५
९	१३	१७
११	२१	७

३९

१२	३	९
५	८	११
७	१३	४

२४

१३	४	१०
६	९	२
८	१४	५

२७

२२	४	१६
८	१४	२०
१२	२४	६

४२

२८	१	१६
३	१५	२७
१४	२९	२

४५

Aho ! Shrutgyanam

२५	४	१९
१०	१६	२२
१३	२८	७

४८

२६	५	२३
११	१७	२०
१४	२९	८

५१

३०	२	२२
१०	१८	२६
१४	३४	६

५४

३६	१	२०
३	१९	३५
१८	३७	२

५७

३२	४	२४
१२	२०	२८
१६	३६	८

६०

१	१०	१६	७
१५	८	२	९
६	१३	११	४
१२	३	५	१४

३४

१	१४	११	८
७	१२	१३	२
१६	३	६	९
१०	५	४	१५

३४

१	८	११	१४
१०	१५	४	५
१६	९	६	३
७	२	१३	१२

३४

१	१०	८	१५
१६	७	९	२
११	४	१४	५
६	१३	३	१२

३४

१	८	१४	११
११	१५	५	४
७	२	१२	१३
१६	९	३	६

३४

१	१०	१५	८
१६	७	२	९
६	१३	१२	३
११	४	५	१४

३४

१	१०	१६	७
१५	८	२	९
४	११	१३	६
१४	५	३	१२

३४

१	१२	१३	८
७	१४	११	२
१६	५	४	९
१०	३	६	१५

३४

Aho ! Shrutgyanam

१	८	१०	१५
११	१४	४	५
१६	९	७	२
६	३	१३	१२

३४

१	१०	८	१५
१६	७	९	२
१३	६	१२	३
४	११	५	१४

३४

१	८	१५	१०
११	१४	५	४
६	३	१२	१३
१६	९	२	७

३४

१	१०	१५	८
१६	७	२	९
४	११	१४	५
१३	६	३	१२

३४

१	११	१६	६
१४	८	३	९
७	१३	१०	४
१२	२	५	१५

३४

१	१२	१३	८
६	१५	१०	३
१६	५	४	९
११	२	७	१४

३४

१	८	११	१४
१३	१२	७	२
१६	९	६	३
४	५	१०	१५

३४

१	११	८	१४
१६	६	९	३
१०	४	१५	५
७	१३	२	१२

३४

१	८	१२	१३
१०	१५	३	६
७	२	१४	११
१६	९	५	४

३४

१	११	१४	८
१६	६	३	९
७	१३	१२	२
१०	४	५	१५

३४

१	११	१६	६
१४	८	३	९
४	१०	१३	७
१५	५	२	१२

३४

१	१५	१०	८
६	१२	१३	३
१६	२	७	९
११	५	४	१४

३४

Aho ! Shrutgyanam

१	८	१३	१२	१	११	८	१४	१	८	१४	१०
११	१४	७	२	१६	६	९	३	१३	१२	३	६
१६	९	४	५	१३	७	१२	२	४	५	१४	११
६	३	१०	१५	४	१०	५	१५	१६	९	२	७
	३४				३४				३४		
१	११	१४	८	१	१३	१६	४	१	१२	१३	८
१६	६	३	९	१२	८	५	९	७	१४	११	२
४	१०	१५	५	६	१०	११	७	१६	५	४	९
१३	७	२	१२	१५	३	२	१४	१०	३	६	१५
	३४				३४				३४		
१	८	१०	१५	१	१३	८	१२	१	८	१२	१३
१३	१२	६	३	१६	४	९	५	११	१४	२	७
१६	९	७	२	११	७	१४	२	६	३	१५	१०
४	५	११	१४	६	१०	३	१५	१६	९	५	४
	३४				३४				३४		
१	१३	१२	८	१	१३	१६	४	१	१४	११	८
१६	४	५	९	१२	८	५	९	७	१२	१३	२
७	११	१४	२	७	११	१०	६	१६	३	६	९
१०	६	३	१५	१४	२	३	१५	१०	५	४	१५
	३४				३४				३४		

Aho ! Shrutgyanam

१	१३	८	१२
१६	४	९	५
१०	६	१५	३
७	११	२	१४

३४

१	८	१३	१२
१०	१५	१६	३
१६	९	४	५
७	२	११	१४

३४

१	८	१४	११
१३	१२	२	७
४	५	१५	१०
१६	९	३	६

३४

१	१३	१२	८
१६	४	५	९
६	१०	१५	३
११	७	२	१४

३४

१	१५	६	१२
१०	८	१३	३
१६	२	११	५
७	९	४	१४

३४

१	७	१६	१०
१४	१२	३	५
११	१३	६	४
८	२	९	१५

३४

१	१०	१६	७
८	१५	९	२
११	४	६	१३
१४	५	३	१२

३४

१	१६	११	६
१०	७	४	१३
८	९	१४	३
१५	२	५	१२

३४

१	१०	७	१६
८	१५	२	९
१४	५	१२	३
११	४	१३	६

३४

१	१६	६	११
१०	७	१३	४
१५	२	१२	५
८	९	३	१४

३४

१	१५	४	१४
१०	८	११	५
१६	२	१३	३
७	९	६	१२

३४

१	७	१६	१०
१२	१४	५	३
१३	११	४	६
८	२	९	१५

३४

Aho ! Shrutgyanam

१	११	१६	६
८	१४	९	३
१०	४	७	१३
१५	५	२	१२

३४

१	१६	१३	४
१०	७	६	११
८	९	१२	५
१५	२	३	१४

३४

१	११	६	१६
८	१४	३	९
१५	५	१२	२
१०	४	१३	७

३४

१	१६	४	१३
१०	७	११	६
१५	२	१४	३
८	९	५	१२

३४

१	१४	७	१२
११	८	१३	२
१६	३	१०	५
३	९	४	१५

३४

१	६	१६	११
१२	१५	५	२
१३	१०	४	७
८	३	९	१४

३४

१	१३	१६	४
८	१२	९	५
११	७	६	१०
१४	२	३	१५

३४

१	१६	१०	७
११	६	४	१३
८	९	१५	२
१४	३	५	१२

३४

१	१०	७	१६
८	१५	२	९
१२	३	१४	५
१३	६	११	४

३४

१	१६	७	१०
११	६	१३	४
१४	३	१२	५
८	९	२	१५

३४

१	१४	४	१५
११	८	१०	५
१६	३	१३	२
६	९	७	१२

३४

१	६	१६	११
१५	१२	२	५
१०	१३	७	४
८	३	९	१४

३४

Aho ! Shrutgyanam

१	११	१६	६
८	१४	९	३
१३	७	४	१०
१२	२	५	१५

३४

१	१६	१३	४
११	६	७	१०
८	९	१२	५
१४	३	२	१५

३४

१	१३	४	१६
८	१२	५	९
१५	३	१४	२
१०	६	११	७

३४

१	१६	४	१३
११	६	१०	७
१४	३	१५	२
८	९	५	१२

३४

१	१२	६	१५
१३	८	१०	३
१६	५	११	२
४	९	७	१४

३४

१	७	१६	१०
१२	१४	५	३
१३	११	४	६
८	२	९	१५

३४

१	१३	१६	४
८	१२	९	५
१०	६	७	११
१५	३	२	१४

३४

१	१६	११	६
१३	४	७	१०
८	९	१४	३
१२	५	२	१५

३४

१	११	६	१६
८	१४	३	९
१२	२	१५	५
१३	७	१०	४

३४

१	१६	७	१०
१३	४	११	६
१२	५	१४	३
८	९	२	१५

३४

१	१२	७	१४
१३	८	११	२
१६	५	१०	३
४	९	६	१५

३४

१	७	१६	१०
१४	१२	३	५
११	१३	६	४
८	२	९	१५

३४

Aho ! Shrutgyanam

१	१०	१६	७
८	१५	९	२
१३	६	४	११
१२	३	५	१४

३४

१	१६	१०	७
१३	४	६	११
८	९	१५	२
१२	५	३	१४

३४

१	१३	४	१६
८	१२	५	९
१४	२	१५	३
११	७	१०	६

३४

१	१६	६	११
१३	४	१०	७
१२	५	१५	२
८	९	३	१४

३४

१	१४	१२	७
११	८	२	१३
६	९	१५	४
१६	३	५	१०

३४

१	१०	१५	८
७	१६	९	२
१२	३	६	१३
१४	५	४	११

३४

१	८	१५	१०
१४	११	४	५
१२	१३	६	३
७	२	९	१६

३४

१	८	१०	१५
१४	११	५	४
७	२	१६	९
१२	१३	३	६

३४

१	१४	११	८
१२	७	२	१३
६	९	१६	३
१५	४	५	१०

३४

१	१२	१४	७
१३	८	२	११
४	९	१५	६
१६	५	३	१०

३४

१	१०	१५	८
७	१६	९	२
१४	५	४	११
१२	३	६	१३

३४

१	८	१४	११
१५	१०	४	५
१२	१३	७	२
६	३	९	१६

३४

Aho ! Shrutgyanam

१	१२	८	१३
१४	७	११	२
१५	६	१०	३
४	९	५	१६

३४

१	८	११	१४
१५	१०	५	४
६	३	१६	९
१२	१३	२	७

३४

१	१२	१३	८
१४	७	२	११
४	९	१६	५
१५	६	३	१०

३४

१	१५	१२	६
१०	८	३	१३
७	९	१४	४
१६	२	५	११

३४

१	११	१४	८
६	१६	९	३
१५	५	४	१०
१२	२	७	१३

३४

१	८	१२	१३
१४	११	७	२
१५	१०	६	३
४	५	९	१६

३४

१	१५	८	१०
१२	६	१३	३
१४	४	११	५
७	९	२	१६

३४

१	८	१०	१५
१२	१३	३	६
७	२	१६	९
१४	११	५	४

३४

१	१५	१०	८
१२	६	३	१३
७	९	१६	२
१४	४	५	११

३४

१	१२	१५	६
१३	८	३	१०
४	९	१४	७
१६	५	२	११

३४

१	११	१४	८
६	१६	९	३
१२	२	७	१३
१५	५	४	१०

३४

१	८	१४	११
१२	१३	७	२
१५	१०	४	५
६	३	९	१६

३४

Aho ! Shrutgyanam

१	१२	८	१३
१५	६	१०	३
१४	७	११	२
४	९	५	१६

३४

१	८	१३	१२
१५	१०	३	६
४	५	१६	९
१४	११	२	७

३४

१	१२	१३	८
१५	६	३	१०
४	९	१६	५
१४	७	२	११

३४

१	१४	१५	४
११	८	५	१०
६	९	१२	७
१६	३	२	१३

३४

१	१०	१५	८
७	१६	९	२
१४	५	४	११
१२	३	६	१३

३४

१	८	१२	१३
१५	१०	६	३
१४	११	७	२
४	५	९	१६

३४

१	१४	८	११
१५	४	१०	५
१२	७	१३	२
६	९	३	१६

३४

१	८	११	१४
१२	१३	२	७
६	३	१६	९
१५	१०	५	४

३४

१	१५	१०	८
१४	४	५	११
७	९	१६	२
१२	६	३	१३

३४

१	१५	१४	४
१०	८	५	११
७	९	१२	६
१६	२	३	१३

३४

१	१०	१५	८
७	१६	९	२
१२	३	६	१३
१४	५	४	११

३४

१	८	१५	१०
१२	१३	६	३
१४	११	४	५
७	२	९	१६

३४

Aho ! Shrutgyanam

१	१५	८	१०
१४	४	११	५
१२	६	१३	३
७	९	२	१६

३४

१	८	१३	१२
१४	११	२	७
४	५	१६	९
१५	१०	३	६

३४

१	१४	११	८
१५	४	५	१०
६	९	१६	३
१२	७	२	१३

३४

१	११	६	१६
१४	८	९	३
१२	२	१५	५
७	१३	४	१०

३४

१	७	१२	१४
१०	१६	३	५
१५	९	६	४
८	२	१३	११

३४

१	१४	१२	७
८	११	१३	२
१५	४	६	९
१०	५	३	१६

३४

१	१२	१५	६
१४	७	४	९
८	१३	१०	३
११	२	५	१६

३४

१	१४	७	१२
८	११	२	१३
१०	५	१६	३
१५	४	९	६

३४

१	१२	६	१५
१४	७	९	४
११	२	१६	५
८	१३	३	१०

३४

१	१३	४	१६
१२	८	९	५
१४	२	१५	३
७	११	६	१०

३४

१	७	१४	१२
१०	१६	५	३
१५	९	४	६
८	२	११	१३

३४

१	१५	१२	६
८	१०	१३	३
१४	४	७	९
११	५	२	१६

३४

Aho ! Shrutgyanam

१	१४	१५	४
१२	७	६	९
८	११	१०	५
१३	२	३	१६

३४

१	१५	६	१२
८	१०	३	१३
११	५	१६	२
१४	४	९	७

३४

१	१४	४	१५
१२	७	९	६
१३	२	१६	३
८	११	५	१०

३४

१	१०	७	१६
१५	८	९	२
१२	३	१४	५
६	१३	४	११

३४

१	६	१५	१२
११	१६	५	२
१४	९	४	७
८	३	१०	१३

३४

१	१४	१५	४
८	११	१०	५
१२	७	६	९
१३	२	३	१६

३४

१	१२	१४	७
१५	६	४	९
८	१३	११	२
१०	३	५	१६

३४

१	१२	७	१४
८	१३	२	११
१०	३	१६	५
१५	६	९	४

३४

१	१२	७	१४
१५	६	९	४
१०	३	१६	५
८	१३	२	११

३४

१	१३	४	१६
१२	८	९	५
१५	३	१४	२
६	१०	७	११

३४

१	६	१२	१५
११	१६	२	५
१४	९	७	४
८	३	१३	१०

३४

१	१२	१५	६
८	१३	१०	३
१४	७	४	९
११	२	५	१६

३४

Aho ! Shrutgyanam

१	१५	१४	४
१२	६	७	९
८	१०	११	५
१३	३	२	१६

३४

१	१५	४	१४
८	१०	५	११
१३	३	१६	२
१२	६	९	७

३४

१	१५	४	१४
१२	६	९	७
१३	३	१६	२
८	१०	५	११

३४

१	११	६	१६
१४	८	९	३
१५	५	१२	२
४	१०	७	१३

३४

१	७	१४	१२
१०	१६	५	३
१५	९	४	६
८	२	११	१३

३४

१	१५	१४	४
८	१०	११	५
१२	६	७	९
१३	३	२	१६

३४

१	१५	१२	६
१४	४	७	९
८	१०	१३	३
११	५	२	१६

३४

१	१२	६	१५
८	१३	३	१०
११	२	१६	५
१४	७	९	४

३४

१	१४	७	१२
१५	४	९	६
१०	५	१६	३
८	११	२	१३

३४

१	१०	७	१६
१५	८	९	२
१४	५	१२	३
४	११	६	१३

३४

१	७	१२	१४
१०	१६	३	५
१५	९	६	४
८	२	१३	११

३४

१	१२	१४	७
८	१३	११	२
१५	६	४	९
१०	३	५	१६

३४

Aho ! Shrutgyanam

१	१४	१२	७
१५	४	६	९
८	११	१३	२
१०	५	३	१६

३४

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६

३४

१	१५	६	१२
१४	४	९	७
११	५	१६	२
८	१०	३	१३

३४

५८	४०	५२
४४	५०	५६
४८	६०	४२

१५०

५२	४०	५८
५६	५०	४४
४२	६०	४८

१५०

४८	६०	४२
४४	५०	५६
५८	४०	५२

१५०

४२	६०	४८
५६	५०	४४
५२	४०	५८

१५०

५२	५६	४२
४०	५०	६०
५८	४४	४८

१५०

४२	५६	५२
६०	५०	४०
४८	४४	५८

१५०

५८	४४	४८
४०	५०	६०
५२	५६	४२

१५०

४८	४४	५८
६०	५०	४०
४२	५६	५२

१५०

६८	३०	५२
३४	५०	६६
४८	७०	३२

१५०

३२	६६	५२
७०	५०	३०
४८	३४	६८

१५०

५२	३०	६८
६६	५०	३४
३२	७०	४८

१५०

५२	६६	३२
३०	५०	७०
६८	३४	४८

१५०

३२	७०	४८
६६	५०	३४
५२	३०	६८

१५०

६८	३४	४८
३०	५०	७०
५२	६६	३२

१५०

४८	७०	३२
३४	५०	६५
६८	३०	५२

१५०

४८	३४	६८
७०	५०	३०
३२	६६	५२

१५०

Aho ! Shrutgyanam

७८	२०	५२
२४	५०	७६
४८	८०	२२

१५०

५२	२०	७८
७६	५०	२४
२२	८०	४८

१५०

२२	८०	४८
७६	५०	२४
५२	२०	७८

१५०

४८	८०	२२
२४	५०	७६
७८	२०	५२

१५०

२२	७६	५२
८०	५०	२०
४८	२४	७८

१५०

५२	७६	२२
२०	५०	८०
७८	२४	४८

१५०

४८	२४	७८
८०	५०	२०
२२	७६	५२

१५०

७८	२४	४८
२०	५०	८०
५२	७६	२२

१५०

८८	१०	५२
१४	५०	८६
४८	९०	१२

१५०

१२	८६	५२
९०	५०	१०
४८	१४	८८

१५०

५२	१०	८८
८६	५०	१४
१२	९०	४८

१५०

५२	८६	१२
१०	५०	९०
८८	१४	४८

१५०

१२	९०	४८
८६	५०	१४
५२	१०	८८

१५०

४८	१४	८८
९०	५०	१०
१२	८६	५२

१५०

४८	९०	१२
१४	५०	८६
८८	१०	५२

१५०

८८	१४	४८
१०	५०	९०
५२	८६	१२

१५०

९८	०	५२
४	५०	९६
४८	१००	२

१५०

२	९६	५२
१००	५०	०
४८	४	९८

१५०

५२	०	९८
९६	५०	४
२	१००	४८

१५०

५२	९६	२
०	५०	१००
९८	४	४८

१५०

Aho ! Shrutgyanam

२	१००	४८
९६	५०	४
५२	०	९८

१५०

९८	४	४८
०	५०	१००
५२	९६	२

१५०

४८	१००	२
४	५०	९६
९८	०	५२

१५०

४८	४	९८
१००	५०	०
२	९६	५२

१५०

५७	४०	५३
४६	५०	५४
४७	६०	४३

१५०

४३	५४	५३
६०	५०	४०
४७	४६	५७

१५०

५३	४०	५७
५४	५०	४६
४३	६०	४७

१५०

५३	५४	४३
४०	५०	६०
५७	४६	४७

१५०

४३	६०	४७
५४	५०	४६
५३	४०	५७

१५०

५७	४६	४७
४०	५०	६०
५३	५४	४३

१५०

४७	६०	४३
४६	५०	५४
५७	४०	५३

१५०

४७	४६	५७
६०	५०	४०
४३	५४	५३

१५०

५६	४०	५४
४८	५०	५२
४६	६०	४४

१५०

४४	५२	५४
६०	५०	४०
४६	४८	५६

१५०

५४	४०	५६
५२	५०	४८
४४	६०	४६

१५०

५४	५२	४४
४०	५०	६०
५६	४८	४६

१५०

४४	६०	४६
५२	५०	४८
५४	४०	५६

१५०

५६	४८	४६
४०	५०	६०
५४	५२	४४

१५०

४६	६०	४४
४८	५०	५२
५६	४०	५.

१५०

४६	४८	५६
६०	५०	४०
४४	५२	५४

१५०

६५	३०	५५
४०	५०	६०
४५	७०	३५

१५०

३५	६०	५५
७०	५०	३०
४५	४०	६५

१५०

५५	३०	६५
६०	५०	४०
३५	७०	४५

१५०

५५	४०	३५
३०	५०	७०
६५	६०	४५

१५०

३५	७०	४५
६०	५०	४०
५५	३०	६५

१५०

६५	६०	४५
३०	५०	७०
५५	४०	३५

१५०

४५	७०	३५
४०	५०	६०
६५	३०	५५

१५०

४५	६०	६५
७०	५०	३०
३५	४०	५५

१५०

४०	२०	९०
१००	५०	०
१०	८०	६०

१५०

६०	०	९०
८०	५०	२०
१०	१००	४०

१५०

१०	१००	४०
८०	५०	२०
६०	०	९०

१५०

१०	८०	६०
१००	५०	०
४०	२०	९०

१५०

६०	८०	१०
०	५०	१००
९०	२०	४०

१५०

४०	१००	१०
२०	५०	८०
९०	०	६०

१५०

९०	२०	४०
०	५०	१००
६०	८०	१०

१५०

९०	०	६०
२०	५०	८०
४०	१००	१०

१५०

देडसो यंत्रोका भेद दोसो होता है उसका नमुना दाखल ७२ यंत्र दिया है.
बाकी सब गुरुमुखसे समज लेना.

Aho ! Shrutgyanam

परिशिष्ट नं. २

॥ अथ श्रीमहावीरजिनस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

(मूलकर्ता–श्रीपादलिप्तसूरिः. टीकाकार–श्रीपुण्यसागरवाचकः)

प्रणतसुरनरालिव्रातपादारविंदं ।
विदितसकललोकालोकसद्ज्ञेयवृंदम् ॥
सविनयमथ नत्वा वर्धमानं जिनेशं ।
किमपि विरचयेऽहं तत्स्तवस्यार्थलेशम् ॥ १ ॥

पूर्वं तावत् श्रीपादलिप्तसूरयोऽनेकयोगसिद्धा महांतः प्रभावकपुरुषा आसन्, तदन्वये सकलज्ञानविज्ञानविज्ञाः श्रीपुण्यतिलकसूरयो विहरंतोऽवंतीपुर्यां समेताः. तत्र च श्रीविधिपक्षगच्छाधिराजसरस्वतीलब्ध प्रसादश्रीमन्महेंद्रसिंहसूरयः संति, तेषां महिमानं सकलनागरिकजन निकरवदनकमलालंकारायमानं श्रुत्वा विद्यामदध्मातचित्ताः श्रीपुण्यतिलक सूरयो वादलिप्सया श्रीगुरुसमीपमागताः तैरुक्तं च भो मया सह वादो विधेयः. तदा श्रीगुरुभिरुक्तं? किं वृथायासेन वादेन? प्रयोजनमनुद्दिश्य मंदधियोऽपि न प्रवर्तंते. तदा श्रीपुण्यतिलकसूरिभिरुक्तं किं वृथायासः? यो यं जयति स तं शिष्यीकरोतीत्यावयोः संधा, तदा गुरुभिरंगीकृतं, प्रारब्धश्च वादः, श्रीगुरुभिर्मुहूर्तादेव ते जिताः. ततः श्रीपुण्यतिलक-सूरयः स्वं धन्यं मन्यमानाः श्रीगुरून् प्रणम्य संस्तूय च शिष्या जाताः. श्रीगुरुभिरपि तेषां महत्त्वरक्षणार्थं दीक्षां दत्वा शाखाचार्यत्वे स्थापिताः. तत्पूर्वजानां च श्रीपादलिप्तसूरिणां विरचितमिदं वीरजिनस्तोत्रं सप्रभावं बहुयोगसिद्धिसंपन्नं दृष्ट्वा श्रीसप्तस्मरणमहास्तोत्रेषु तृतीयमहास्तोत्रं स्थापितं, महत्त्वं चास्य स्तोत्रस्यानेकयोगसिद्धिमहत्वेन समहिमत्वेन च ज्ञेयं, श्रीउपसर्गहरस्तोत्रवत्, तदन्वये चाद्यापि नवीनशिष्यस्य दीक्षां दत्वा प्रथममिदं स्तोत्रं पाठयंतीति. अस्य प्रथमगाथा—

मूलम्—जयई नवनलिणकुवलय–वियासियसयवत्तपत्तलदलच्छो ॥
वीरोगइंदमयगल–सुललिअगइविक्कमो भयवं ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

ख्याख्या—वीरो जयतीत्यन्वयः. विशेषेण ईरयति गच्छति कर्मशत्रुजयाय सन्मुखतया, कंपयति वा कर्मशत्रूनिति वीरः, ईरगतिकंपनयोः पचाद्यच् कर्मशत्रुसमूहजेतृत्वाद्दर्शितपराक्रमत्वेन वीरयते इति वा वीरः. वीर-विक्रांतौ, पचाद्यच् पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् श्रीमहावीरश्चतुर्विंश तितमो जिनो जयति उत्कर्षं प्राप्नोति, जि जयेऽकर्मकोऽयं धातुः, पंच-मारकपर्यंतं यावद्विद्यमानशासनत्वेन वर्तमाने लट्. मंगलार्थं च प्रथमं जयतीति पदप्रयोगः, नमस्कारश्चाक्षिप्तः, यथा जयतींद्रियकषायकर्मपरीष होपसर्गादिशत्रुगणपराजयात्सर्वानप्यतिशेते उत्कर्षं प्राप्नोति, इत्थं सर्वा-तिशायी च भगवान् प्रेक्षावतामेवश्यं प्रणामार्हः, ततो जयतीति. किमुक्तं भवति ? तंप्रति प्रणतोऽस्मीत्यर्थः, किंविशिष्टो वीरः? नवनलिनकुवलय विकसितशतपत्रपत्तलदलाक्षः, नवं नवीनं, यन्नलिनं सूर्यविकासिकमलं, पुनः कुवलयं चंद्रविकासिकमलं, पुनः विकसितं च तत् शतपत्रं, शत-शब्दोऽत्र बहुत्वोपलक्षकस्तेन सहस्रपत्रादेरपि परिग्रहः. अथ समासः— नलिनं च कुवलयं च नलिनकुवलये, नवे च ते नलिन कुवलये च नवनलिनकुवलये, विकसितं तत् शतपत्रं च विकसितशतपत्रं, नवनलिन-कुवलये च विकसितशतपत्रं च नवनलिनकुवलयविकासितशतपत्राणि, तेषां पत्तलं तीक्ष्णं यद्दलं पत्रं तद्वद्क्षिणी नेत्रे यस्य स नवनलिनकुवलय-विकसितशतपत्रपत्तलदक्षः. बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्थांगात्षजिती षच्, पत्तलशब्दोऽत्र तीक्ष्णवाचकः. यदुक्तं देशीनाममालायां श्रीहेमसूरिभिः— 'पत्तलपडुवइआ तह । पत्तसमिद्धं च तिख्खमि ॥' तथा च तद्वृत्तिः— पत्तलं पडुवइयं पत्तसमिद्धं एत त्रयोऽपि तीक्ष्णार्थाः, पत्तलं पत्रबहुलमिति तु पत्रलशब्दभवमिति. भगवच्चक्षुषोरहोरात्रविकासित्वादुभयोः सूर्य-विकासिचंद्रविकासिकमलयोरुपमानत्वमुक्तं. पुनः किंविशिष्टो वीरः? प्राकृतत्वाद्विशेषणस्य परनिपातत्वान्मदकलगजेंद्रसुललितविक्रमः, मदेन कलो मनोहरो मदकलो मदोत्कट इत्यर्थः, मदोत्कटो मदकल इति श्रीहेमसूरिः. एवंविधो यो गजेंद्रः सकलगजलक्षणोपेतत्वेन गजेषु इंदति परमैश्वर्यं भजतीति गजेंद्रः सकलगजश्रेष्टः, तद्वत् सुअतिशयेन ललिता मनोहरा या गतिस्तया विशिष्टं क्रामति गच्छतीति मदकलगजेंद्रसुललित-गतिविक्रमः. पुनः किंविशिष्टो वीरः? भगवान्, भगो ज्ञानाद्यर्थः, स नित्यमस्यास्तीति भगवान्. भगोऽर्कज्ञान माहात्म्य–यशोवैराग्यमुक्तिषु ॥

Aho ! Shrutgyanam

रूपबुद्धिप्रयत्नेछा—श्रीधनैश्वर्ययोनिषु ॥ १ ॥ इति श्रीहेमसूरिः. तत्रार्कयोनिवर्जं द्वादशभगशब्दार्थयुक्त इत्यर्थः. ॥१॥ अथ श्रीवीरं कविराशिषति—

मूलम्—अज्जवि वहई सुतीत्थं। अखंडियं जस्स भरहवासंमि ॥
सो वद्धमाणसामी । तेलुक्कदिवायरो जयउ ॥ २ ॥

व्याख्या—स वर्धमानस्वामी श्रीवीरजिनो जयतु सर्वोतकर्षेण प्रवर्ततां. किंविशिष्टो वर्धमानस्वामी? त्रैलोक्यदिवाकरः, त्रय एव लोकास्त्रैलोक्यं, चतुर्वर्णानां स्वार्थे ष्यञ् वाच्य इति ष्यञ् स्वर्गमर्त्यपातालरूपं, तत्र दिवाकर इव दिवाकरः सूर्यः केवलज्ञानेन तस्य प्रकाशकत्वात्, त्रैलोक्यदिवाकरः. स कः? यस्य वर्धमानस्वामिनः सुतीर्थं तीर्यते संसारार्णवोऽनेनिति तीर्थं चतुर्विधः संघः. सकलशुभगुणोपेतत्वेन शोभनं तीर्थं सुतीर्थं अद्यापि दुःषमकालेऽपि अखंडितमविछिन्नं परतीर्थ्यादिखंडनारहितं भरतवर्षे भरतक्षेत्रे वहति, धातुनामनेकार्थत्वात्प्रवर्तत इत्यर्थः. अथाभिधेयं वक्ति—

मूलम्—गाहाजुअलेण जिणं । मयमोहविवज्जियं जियाणंगं ॥
थोसामि तिसंघाएण । तिण्णसंगं महावीरं ॥ ३ ॥

व्याख्या—अहं पादलिप्तसूरिर्महावीरं जिनं त्रिसंघातेन, त्रयाणां मनोवाक्कायानां संघातः समुदायस्त्रिसंघातस्तेन त्रिकरणशुद्धया स्तोष्यामि स्तुतिगोचरं करिष्यामित्यर्थः. केन? गाथायुगलेन, विपुलाचपलाद्यार्यालक्षणलक्षिता प्राकृते बहुलं गाथेत्यभिधीयते, तयोर्युगलं युग्मं तेन. किंविशिष्टं जिनं? मदमोहविवर्जितं, आनंद संमोहयोः संगमोत्था मत्तता मदः, मदोमुन्मोहसंभेद इति श्रीहेमसूरिः. स च जात्याद्यष्टप्रकारो मोहो मौढ्यमज्ञानमिति यावत, मदश्च मोहश्च मदमोहौ, ताभ्यां विवर्जितो रहितस्तं, पुनः किंविशिष्टं जिनं? जितानंगं, जितः स्ववशीकृतोऽनंगः कामो येन. 'जियकसाय' मित्याधुनिकः पाटः, तत्र जिताः कषायाः क्रोधाद्या येन तं, पुनः किंविशिष्टं जिनं? तीर्णसंगं, तीर्णः पारं प्राप्तः संगः संसारानुबंध्यभिष्वंगो बाह्यांतरभेदभिन्नो येन तं, तत्र बाह्यः पुत्रकलत्रादिरूपः, आंतरश्च कर्मपुद्गलरूपः, तीर्णसंसारसमुद्रमित्यर्थः, तिसंङ्गागं तं निसंगमित्याधुनिकः पाठः, तत्र तमिती प्रसिद्धं, महावीरं

Aho ! Shrutgyanam

जिनमिती योज्यं प्रसिद्धानुभूतार्थे तच्छब्दो यच्छब्दोपादानं नापेक्षते, तिसंझ्झागमिति तिस्रः संध्याः समाहृता इति त्रिसंध्यं, गोस्त्रियोरिति ह्रस्वत्वं त्रिसंध्यं तूपवैणवमिति श्रीहेमसूरयः, तिसंध्यमेव त्रिसंध्यकं, स्वार्थे कन्, क्रियाविशेषणमिदं दीर्घत्वं प्राकृतलक्षणात्, निस्संगमिति, निर्गतः संगान्निस्संगस्तमित्यक्षरार्थः, अथास्यां गाथायां रूपसिद्धिसुवर्णसिद्ध्यादयो भूयस्यः सिद्धय उक्ताः संति, परं किंचिद्दिग्दर्शनमात्रमुच्यते—

'गाहाजुअलेणात्ति' गा इति गगनं अभ्रकं अभ्रकं मेघाख्यं स्वच्छपत्रं गिरिजामलमिति हेमसूरयः, दीर्घत्वं च बहुत्वख्यापकं, बहुत्वं च शुभ्रादिगुणोपेतत्वेन प्राधान्यख्यापकं, तेन सिताभ्रकं न तु कृष्णमित्यर्थः. हा इति हरितालं, दीर्घत्वं पूर्ववत्, जुअलमिति तारं, एतैस्त्रिभिर्युक्तं जिनं पारदं, कथंभूतं ? 'मयमोहविवज्जियं जियाणंगं' मलशिखिविषदोषत्रयापेतं, 'थोसामित्ति' स्तंभयिष्यामि, केन कृत्वा ? त्रिसंघातेन सिताभ्रकतालतारत्रयाणां योगेन, तथौषधसमवायेन जारणस्वदनविधिं करोमि. पुनः कीदृशं जिनं ? तीर्णसंगं, मृतसप्तगुणसंगोत्तीर्णं महावीरमिति रूप्यं, इत्यक्षरयोजनामात्रमुक्तं, विशेषाम्नायस्तु सद्गुरोरवसेयः।३।

अथ प्रतिज्ञातमेव गाथाद्वयमाह—

मूलम्—सुकुमालधीरसोमा । रत्तकिसणपंडुरा सिरिनिकेया ॥
सीयं कुसगहभीरू । जलथलनहमंडणा तिन्नि ॥ ४ ॥

न चयंति वीरलीलं । हाउं जइसुरहिमत्तपडिपुण्णा ॥
पंकयगइंदचंदा । लोयणचंकमियमुहाणं ॥ ५ ॥ युग्मं ॥

व्याख्या—तवेत्यध्याहार्यं. हे वीर ! पंकजगजेंद्रचंद्राः 'तिन्नत्ति' एते त्रयस्तव लोचनचंक्रमितमुखानां लीलां हातुं न चयंतीत्यन्वयः. पंकजं कमलं, गजेंद्रो द्विपश्रेष्ठः, चंद्रश्चंद्रमाः, एषां द्वंद्वः, पंकजगजेंद्रचंद्रास्ते तव संबंधि लोचने नेत्रे, चंक्रमितं गगनं, मुखं च वदनं, एषां द्वंद्वः लोचनचंक्रमितमुखानि तेषां. ननु द्वंद्वश्च प्राणितूर्यसेनांगानामित्येकवदेव स्यात्तत्कथं बहुत्वं ? सत्यं, अधिकरणैतावत्त्वे चेति, एते त्रयः, एतेषां त्रयाणामित्येवंरूपे द्रव्यपरिमाणवगमे नैकवद्भावः, यथा दशदंतोष्ठा इति. लीलां विलासं, हातुं अंतर्भावितण्यर्थत्वात्त्याजितुं न चयंति न शक्नुवंति,

Aho ! Shrutgyanam

प्राकृतसूत्रेण शक्तृ शक्तौ इत्यस्य धातोः चय इत्यादेशः, न समर्था भवंतीत्यर्थः. ते कीदृशाः ? यदि सुरभिमत्तप्रतिपूर्णाः, यदीति संभावनायां, सुरभि घ्राणतर्पणं पंकजं, मत्तो गर्जितो हस्ती. प्रतिपूर्णः षोडशकलावांश्चंद्रः, एषां द्वंद्वः, अहं संभावयामि, यद्येते पंकजादित्रयः सुरभिमत्तप्रतिपूर्णा भवंति, तथापि भवतो लोचनचंक्रमितमुखानां लीलां हातुं न शक्नुवंतीत्यर्थः, तव लोचनं पंकजादप्यधिकसुंदरं, तव गमनं गजेंद्रगमनादप्यधिकतरं सुंदरं, तव मुखं सपूर्णचंद्रादप्याधिकसुंदरमित्यर्थः, एवं सर्वत्र विशेष्यविशेषणशब्दा यथासंख्यं योज्याः, पुनः कीदृशास्त्रयः ? सुकुमारधीरसौम्याः, सुकुमारं कोमलं पंकजं, धीरो धैर्यवान् गजः, 'धीरो ज्ञे धैर्यसंयुते इति श्रीहेमसूरिः, सौम्यः कमनीयश्चंद्रः, ततो द्वंद्वः पुनः कीदृशास्त्रयः ? रक्तकृष्णपांडुराः, रक्तं कमलं, कृष्णो गजः, पांडुरः श्वेतश्चंद्रः, एषां द्वंद्वः, पुनः कीदृशाः ! श्रीनिकेताः, श्रियः लक्ष्म्याः शोभाया वा निकेता , निकेतति वसत्येष्विति निकेता गृहाणि, कितनिवासे, निपूर्वः, अधिकरणे घञ, श्रीनिवासस्थानानीत्यर्थः. पुनः कीदृशाः? शीतांकुशग्रहभीरवः शीतं हिमं, अंकुशः सृणिः, ग्रहो राहुरुपरागो वा. ततो द्वंद्वः तेभ्यो भीरवो भीताः, पुनः कीदृशा ? जलस्थलनभोमंडनाः. जलं पानीयं, स्थलं स्वभावोन्नतभूमिः, रूढ्या भूमिमात्रं वा, नभो व्योम, ततो द्वंद्वः, तेषां मंडनाः, अलंकरिष्णव स्यादित्यनेकार्थसंग्रहः. एवंविधा अपि पंकजगजेंद्रचंद्रास्त्रयस्तव लोचनचंक्रमणमुखानां शोभां न प्राप्नुवंतीति तात्पर्यार्थः. अस्मिन् गाथाद्वये पादलेपजलज्वलनशस्त्रादिस्तंभनगगनगमनाऽदृष्टीकरणदयोऽनेके आम्नायाः संति, ते तु सद्गुरुगम्या इति ॥ ४ ॥ ५ ॥ अथोपसंहारमाह—

मूलम्—एवं वीरजिणिंदो । अच्छरगणसंघसंथुउ भयवं ॥
पालित्तयमयमहिउ । दिसउ खयं सव्वदुरियाणं ॥ ६ ॥

व्याख्या—वीरजिनेंद्रः श्रीवर्धमानस्वामी, ममेत्यध्याहार्यं, मम सर्वदुरितानां सकलपातकानां क्षयं नाशं दिशतु, धातूनामनेकार्थत्वात्करोत्वित्यर्थः. किंविशिष्टो वीरजिनेंद्रः ? अप्सरोगणसंघसंस्तुतः, अप्सरसां सुरवधूनां गणः समुदायः, तस्य संघैः समूहैः संस्तुतः स्तुतिविषयीकृतः

Aho ! Shrutgyanam

यद्वा अप्सरोगणः सुरवधूसमूहः, संघश्चतुर्विधस्ताभ्यां संस्तुतः. यद्वा अप्सरस उपलक्षणत्वात्समग्रदेवदेव्यः, गणः, साधुसमुदायः, सोऽस्त्येषां, अर्शआदिभ्यअच्. गणाः गणधरा इंद्रभूत्यादयः, संघः श्रमणादिश्चतुर्विधः, तैः संस्तुतः. पुनः कीदृशो वीरजिनेंद्रः ? भगवान्, ज्ञानादिगुणयुक्तः, प्रथमगाथायामुक्तविशेषणत्वात्पुनरुक्तिदोषो नाशंकनीयः उक्तं च—सज्झायझाण तवो–सहेसु उवएसथुइपयाणेसु ॥ संतगुणकित्तणासु य । न हुंति पुणरुत्तदोसाउ ॥ १ ॥ पुनः किंविशिषो वीरजिनेंद्रः ? एवं पूर्वोक्तप्रकारेण पादलिप्तकमतिमहितः, लिप्तौ पादौ यस्य स पादलिप्तः, वाहिताग्न्यादिष्विति निष्टांतस्य परनिपातः, स्वार्थे कनि, पादलिप्तकः प्राकृते तु कगचजतदपयवांप्रायोलुगिति सूत्रेण दकारलोपेऽकारस्य सवर्णदीर्घे पालित्तय इति भवति, तस्य या मतिर्बुद्धिस्तया महितः स्तुतिरूपपूजया पूजितः, अर्थात् कासद्रहगच्छीयपादलिप्तसूरिकृतमेतत्स्तोत्रमित्यर्थः ॥ ६ ॥ विधिपक्षगणाधीशाः । सूरयो भूरिसद्गुणाः ॥ श्रीअमरसागराख्या । विचरंति महीतले ॥ १ ॥ तत्पक्षद्योतकाः श्रीम–द्दयासागरवाचकाः ॥ सच्चारित्रगुणोपेता । ज्ञानविज्ञानपेशलाः ॥ २ ॥ तेषां प्रसादमासाद्य । पुण्यसागरवाचकैः ॥ महावीरस्तवस्येयं । टीका विरचिता शुभा ॥ ३ ॥ नंदाग्निमुनिभूसंख्ये । वर्षे मास्याश्विने सित ॥ दशम्यां रविवारे च । बुरहानपुरे पुरे ॥ ४ ॥ इति श्रीमहावीरस्तवस्यावचूरिः संपूर्णा ॥ श्रीरस्तु ॥

गाहा जुअल स्तुतिः आम्नायः

पादलिप्तसूरी विरचित स्वोपज्ञस्तोत्राम्नायः

गाहा जूअलेणजिणं । मयमोह विवज्जिअं जिअ कसायं ॥
थोसामि तिसंघाएणं । तिण्णसंग महावीरं ॥ १ ॥

आम्नाय गा० गाऽभ्रकं ॥ हाहारितालो ॥ जूअलेणतार मुच्यते ॥ जिनं पारदं कथं भूतं मयमोह विवर्जितं जिआणंगमल शिखिविषं दोषत्रय-

Aho ! Shrutgyanam

वर्जितं थोसामिति स्तंभयामिकेन कृत्वा त्रिसंयातेन सिताऽभ्रक हरि-तालकंतारत्रयाणां योगेन तथौषध समवायेन जारणा स्वेदन विधिं विधास्यामि । कथंभूतं जिनं तीर्णसंगं मृतसप्तगुणवंगोत्तीर्णं । एतावता-श्वेते दर्शिता अधुनापीतविधिमाह महावीरंमहे ममक्षाकं हा हारकंवी कृष्णाऽभ्रकंरसमित्यर्थः शेषा औषध्या समाना ॥ १ ॥

सुकुमाल धीरसोम । रत्तकसिपंडुरानिकेया ॥
सीअंकुस गहभीरु । जलथलमंडणातिण्णि ॥ २ ॥

आम्नाय ॥ सुकु. नाइणिधार नाइ सोमासोमवल्ली त्रयं रत्तरत्त दुग्धिका बहुफलि कचनिका 'पांडुरी देवदाल' सिशृंगबेरकं पंचकरि लघुरिंगणी लांगलिका कुसग्रह अहिस्वरबीजानि भीरुसंकोइणि 'लज्जलु जलमंडिका' जलच तादृशी नभमंडपिका थल अंगवती ॥ २ ॥

नचयंतिवीरलीलं । हाउंजे सुरहिमत्त पडिपुण्णा ॥
पंकयगईगचंदा । लोअणंचंकम्मिअंमुहाणं ॥ ३ ॥

आम्नाय इदानी रोचनक्रमेण उद्घात विधिमाहा पंकयगानं । गयंदं मत्तनागं चंदतारं हेमं वा त्रयमपि रोचनमित्यर्थः तथाक्रामणं । तथोद्-घाटनमित्यर्थः ॥ ३ ॥

एवंवीरजिणिंदो । अच्छर गणसंघसंथुओभयवं ॥
पालित्तयमइमहिओ । दिसउ खयं सव्वदुरिआणं ॥ ४ ॥

आम्नायः यदुक्तं तारहितारु सुवर्णदस्स सुवणिसूओ रेव नहू बज्झई अग्नि कामणु बेदुग्घाड एडनाई दवि करणहोई सराइ एवं कृत्वा जिणिंदो अच्छरगण इति अम्ल वर्गः वरगणइति क्षारवर्गः गणःसंघइति समुदा-येन एभिः संथुओ संस्तुत्य स्तंभितेत्यर्थः भगवान् सेंद्र पुज्योभवति कमकृद् भवति । पालियमयमहिओ महितः परिकर्मितः दिशतु क्षयं सर्वं दुरितानामित्यर्थः असणे इअ नतलेननिम्मलेहो इ सद्दणा रहिओ सारण रहिओ पसरं अकामिओ नेअ कमइ लोहेसु ॥ ४ ॥ स्तोत्रार्थः

॥ इति श्रीपालित्तयकृत स्तोत्रः हेमकल्प स्वोपज्ञावचूरी समाप्तो ॥
संवत १९६३ परसे नकल किया.

Aho ! Shrutgyanam

परिशिष्ट नंबर ३

—: उग्रवीर कल्प :—

१ २ ३४ ५ ६ ७ ८ ९१०११ १२१३१४१५१६
उग्रवीरं महाविष्नुं । ज्वलंतं सर्वतोमुखम् ।
१७१८१९ २०२१२२२३२४ २५२६ २७२८ २९३०३१३२
नृसिंहं भीषणंभद्रं । मृत्युं मृत्युं नमाम्यहम् ॥ १ ॥

१ शिर	९ द. भुजा	१७ द. जंघ	२५ गुदा
२ ललाट	१० वा. भुजा	१८ वा. जंघ	२६ इंद्रिय
३ द. नेत्र	११ द. पार्श्व	१९ द. जानु	२७ पृष्ठ
४ वा. नेत्र	१२ वा. पार्श्व	२० वा. जानु	२८ गला
५ द. कर्ण	१३ उदर	२१ द. टांग	२९ गर्दन
६ वा. कर्ण	१४ नाभि	२२ वा. टांग	३० दंत
७ द. स्कंध	१५ द. कटि	२३ द. पग	३१ जिव्हा
८ वा. स्कंध	१६ वा. कटि	२४ वा. पग	३२ दाढ

इस मंत्रका जप १२५००० सवालाख कम अधिक नहिं जपना प्रथम सूर्य ग्रहणके दिन जपना जितना जपा जावे उतना जाप करे फिर सवालक्ष पुरा करे बीचमे नागा [अंतर] न करे नहि तो मंत्र चला जायगा पुरा करे सिद्ध हुया. जबतक सवालक्ष न होवे तबतक लोहकी खीली मंत्रके अक्षरके उपर ३२ अक्षरका एक नंबर निकालकर खीली ठोकदे दरद नाश कार्य काले दरदवालेको २१ वार पढकर पानी देवे दरद नास हो जायगा. प्रयोगमे सदा जाप करना सवालक्ष पुरा न होय तबतक.१०००हजार जाप वशीकरणमें मंत्रनाम मंत्र संपूट करना सम्मोहन [सामने] करना नाममंत्रनाम, लक्ष्मीप्राप्ति ॐश्रीमंत्र ॐश्री,

उच्चाटन	नामनाममंत्र	राजवश्ये	ॐक्ली मंत्र ॐक्ली
विद्वेषण	मंत्र मंत्रनाम	शत्रुदमन	ॐह्री मंत्र ॐह्री
आकर्षण	मंत्रनाम मंत्रनाममंत्र	भूतोत्साधन	ॐ मंत्र ॐ
स्तंभण	नाममंत्रनाममंत्र	बाधानिवारण	क्षौं मंत्र क्षौं

Aho ! Shrutgyanam

जब मंत्रका जाप प्रारंभ करने बैठे पहिलें ईस मंत्रको पढकर फिर मंत्र सुरु करें इसमें विधि लिखीहैं वेसे करलेवे आसन बिछाकर हाथमुह धोकर स्नानकर धोती सफेद धारणकरे अस्यमंत्रस्य ब्रह्माऋषी गायत्री छंदः महान्नृसिंहो देवता क्ष्रौं बीजं श्रीशक्तिः ह्रीं कीलकं नृसिंह-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः

क्षाँ अंगुष्ठाभ्यांनमः	क्षीं तर्जनीभ्यांनमः
क्षूँ मध्यमाभ्यांनमः	क्षैं अनामिकाभ्यांनमः
क्षौं कनिष्टभ्यांनमः	क्षः करतलपृष्ठाभ्यांनमः
क्षाँ हृदयाय नमः	क्षीं शिरसे स्वाहा।
क्षू शिखावौषट्	क्षैं कवचाय हूं
क्षौँ नेत्राय वौषट	क्षः अस्त्रायफट् ध्यानं

रक्त वर्णं महाकायं सहस्त्रादित्यवर्चसम्।
अष्ट बाहुं शस्त्रधरं सिंहाननं हरिंभजे ॥

लं पृथवीतत्वंगंधंसमर्पयामिनमः हं आकाशतत्वंपुष्पंः यं वायुतत्वंधूपं रं अग्नितत्वंदीपं वं जलतत्वं नैवेद्यं

फिर मंत्र ३२ अक्षरका उग्रवीरका जपना प्रारंभ करदेना चाहिए। मंघ (चंदनलाल) पुष्प (लालकनेर) धूप (गूगल) दीप (तिलका-तेल) नैवेद्य (गुडगेहु)

किसी जगापर मंत्र प्रारंभ करना होवे तव तीन मंत्रपढकर फिर मंत्र पढना दिग् बंधनं ॐ सहस्त्रारे हूँफुट् तीनवार पढकर अपने चारोतर्फ अक्षत या सफेद सरसों छाडके, स्थानशुद्धि ॐ पवित्र वज्रमूर्ति ॐ फट् तीन वार पढके चारोतर्फ जल छांटना, आसन शुद्धि ॐ आसू रेखे वज्ररेखे हूं फट् बामे हातसे पकडकर आसनपर १० वारपडे अनुभुतं.

दादाजी श्री जिनदत्त सूरीश्वर आम्नाय

—बावन तोला पावरती. हेम कल्प—

हरताल मारण वि. प्रथम हरताल सोधन वि.। हरताल बगदादी पत्र पईसा दो भार आणिजे, कली चुनो असिल सेर ८ आणीजे, कोरा कुंडा माहि चूनो राखिजे, हरताल बासनारा कपडा रा तेरा पुड मांहि बांधी

Aho ! Shrutgyanam

गठडी कीजे चुनाका कुंडामांहि गठडी हरतालकी मेलीजे उपर दररोज पाणी सिंचीजे. चुनो पाणीसुं नीलो राखीजे, इम मास २ सिंचीजे आपरी किसीकी छाया उपर पडन न दीजे. एकांत राखीजे, किनही रो पग फेरो राखीजे नहीं. मास दो पीछे काढीजे, पिछे दीन ३घीकुआर रा रसमें खरल कीजे. दिन ३ काला भांगरा रा रसमें खरल कीजे, दिन ३ अर्क दुधमें खरल कीजे, दिन ३ थोहर कांटाली रा रसमें खरल कीजे. सर्व दीन १२ खरल किजे पछे टिकडी बांधिजे, पछे सेर पांच पिपलरी राख हांडीमे घाल बिचमे टिकडी मेल पचाईजे अग्नी प्रहर ३२ दिजे, आपरी छाया उपर पडन न दीजे अग्नी शीतल होय, तब काढीजे. सफेद बर्फ होय. असल हरताल निपजे. निसंदेह बात छे. इस्ट देवतारी पुजा किजे, पछे हरताल परीक्षाः–बावन तोलाने पाव रती बावन तोला तांबो गालने पाव रती माहे मेलीजे, कंचन होवे सही सत्य छई. पिछे खानेकी परीक्षा नामर्दनुं दिजे, तीन दिन तीन चावल दिजे सेर ३५ दुध तोलने खीर कर उपर पाईजे. अस्त्री २१ बरोबर सुवाणीजे पण अस्त्री हार छुटे, पण आप धापे नहीं, खलास मोडो हुवई मीसरी पईसा ११ भार उपर खवाडीजे तरा सितल हुवे. अनाज सेर७पक्को खाय, नामर्द होय सो पक्को मर्द हुवई. अस्त्री विना वालाने दीजे नहीं, दीजे तो इंद्री मांही संचीत उठे लोही पडे. । निपट मर्दमी हुवे तिनने चावल एक दीजे महाकामी होवे. । कोढवालेको चावल तीन दीजे, उपर रोटी चिणारी खिलावे कोढ जावे खाटो खारो न खावे । धोला चाठा वालाने चावल तीन दीजे, उपर चावल मुंगारी खीचडी चाठा सफेद जाय । पांडुरोग वालेको चावल तीन दीजे चावल साठी जीमाईजे. पांडुरोग जाय । पेट भार वालाको चावल तीन दीजे उपर थुली गहुंरी दीजे, दुध न दीजे. पतासा दीजे पेटभार जाय. झोलो लागो होय तिनने चार दिन चार दीजे उपर उडदारी ने चावलारी खीचडी दीजे. सीतांग झोलो सर्व समाध हुवे । अस्त्री सुहागनको नहीं दीजे, जो रोगरे वास्ते देवे तो रोग जावे. पिण तिनरे संतान हुवे नहीं तिनसु अस्त्री ने नहीं दीजे । उनने काम घणो व्यापे । जीणने मिरगी वालाने दिजे दीन तीन नागरवेलके पत्रमें दिजे मिरगी जाय. खारा खाटो टालीजे गहुरो लपटोने दुध दीजे मिरगी क्षयन वालाने दो२रती चार दिन दिजे उपर चिणारी रोटी लुखी खीलाईजे

Aho ! Shrutgyanam

खयनारा ढलफा पडे निसंदेह । गुघतावालानें रती १ दिन तीन दीजे उपर अलुणी रोटी गवारी खवाडी जे गुघतो जाय. रति ३ दिजे तो कीडी नगरो जाय एवं रोग ३५ जाय. रोग छत्तीसमारो ओखदलागे नहीं जिणरे रोग हुवे तिणरे रोग पेला गमायने पछे उन आदमीने चावल तीन दिन तीन भले दिजे खीचडी सेर ५ री कराइने खवाडीजे दुध सेर ३५ पाईजे खुदाघनी हुवे महाकामी हुवे अस्त्री घणी जोईजे इंद्री जाडी घणी हुवे, सोले अंगुल लांबी होवे निसंदेह बात सही छे. रोगी वालाने रोग पहली गमाईने पछे बली दीजे नामर्द हुवे सो महाकामी हुवे अस्त्री १०८ सोधापे नहि सवातीनरामुद्गर एक हाथसे उठावे महा बलवान हुवे निसंदेह बात छे सही सत्यजाणवो १९०९ रा बरसे साके १७७४ प्रवर्तमाने आसाढ कृष्ण दले ११ तिथौ अरक बारे लिखी पं हुकमविजये धेनाबसनगरे प्रमाण विजयजी दत्त आमनाय छे.

जगतसेठके पुस्तकके उपरसे चंद्रकल्प.

श्रीचंद्र मूर्त्तयेनमः । ॐ ऐं श्री क्लीं क्रों कौं कलंकरहिताय सर्वजन वल्लभाय क्षीरवर्णाय ॐ ह्रीं श्रीचंद्रमूर्त्तये नमः मूलमंत्र

विधिः—अथ विधान पहिलीचंद्रमाकी मुरति रुपेकी घडाईये. वाहन सुसला सोवी रूपेका घडाईयै हाथमे चंद्रमाके एकमै संख एक मै कलम एक मै फुलमाल एकमे झारी सुसला उपरि असवार पूरण मासी सोमवार आवैतदिए मंत्रका जाप सरुकीजै तदिपहिली गुरुकी पूजाकीजै तदि पीछै गुरुकी आग्या लेकर कै मंत्र लक्षसवा जपीजैमास ६ मै श्वेतवस्त्र पहिरवौ श्वेतमुक्ताफलकी मालासे जापकीजे स्वेत भोजनकीजै दूधभात भोजनकरीयै तदिपहिली अपने हाथसुं सुसाकितांई[1] दूधभात खिलाइये पीछे आप भोजन करीयै. ईसतरै मास ६ करीयै. पुरब सन्मुख होय करिकै जापकरीयै सत्य बोलीयै निद्रा कमकरीयै ब्रह्मचर्य रखीयै जमीन मै सोईये तदि एक दिवसै चंद्रमाका दर्शन होय जिस कार्यका वर मागीए होई राज्यद्वारमेंजय होई सर्वजन वल्लभहोय सर्वस्त्री वल्लभहोय.

॥ इति विधान संपूर्ण ॥

१ जाप करवावालाने जीवित ससलो पासे राखनो पूजाने वखते दुधभात खवरावनो.

Aho ! Shrutgyanam

हमारी ग्रंथमालाकी प्रकाशित पुस्तकें छपी हुई तयार है.

(१) अर्हद्गीता–भगवद्गीता–या तत्वगीता तृतीयावृत्ति छपके तैयार है.

(२) मानतुङ्ग शास्त्र [मानतुङ्ग सूरीकृत गुजराती, हिंदी संस्कृत टीका-साथ] तृतीयावृत्ति छपके तैयार है.

(३) विद्यारत्न महानिधि [यंत्र भाषांतर सहीत दश पूर्वधर भद्रगुप्ताचार्य-कृत] तृतीयावृत्ति छपके तैयार है.

(४) चंदप्पह चरिय [मूळमागधी टीका और संस्कृत छाया सहित यमकबद्ध कर्ता जिनेश्वर सूरी] तृतीयावृत्ति छपके तैयार है.

(५) आकाशगामिनी औषधी कल्प पादलेप शक्ति और गोपीचक्र कल्प [सरळ भाषांतर सहित] तृ. छपके तैयार है.

(६) अर्हच्चूडामणीसार [मूलमागधी टीकासहित चौध पूर्वधर भद्रबाहु स्वामिकृत] तृ. छपके तैयार है.

(७) सिद्ध बीशाकल्प–कर्ता श्रीमहामहोपाध्याय मेघविजयकृत पद्मावती देवीका बतायाहुवा भाषांतरसहित ४५० यंत्र फोटोसहित और परिशिष्ट सहित १ गाहायुअल टीका और सोपज्ञ आम्नाय २-३ कर्ता पादलिप्त सूरी, उग्रवीर कल्प कर्ता पूर्वाचार्य अनुभूत, ४ दादाजी श्रीजिनदत्त सूरीश्वर आम्नाय बावन तोला पावरती हेमकल्प, ५ जगत शेठजी महताबरायजीका अनुभव सिद्ध चंद्रकल्प ६ बधाराके साथ तृतीयावृत्ति छपके तैयार है.

(८) न्यायविशारद श्रीमद् यशोविजयजीका अनुभूत नवगाथाका उपसर्ग-हरस्तोत्र यंत्रके साथ विधिसहित द्वितीयावृत्ति छपके तैयार है.

(९) जगत्सुंदरी पयोगमाला [जैन सायन्स] कर्ता मुनि जसमहत्तर तृ. छपके तैयार है.

(१०) युक्तिप्रकाश मूल टीकाके भाषांतरके साथ द्वितियावृत्ति छपके तैयार है.

मिलनेका ठिकानः—

एस्. के. कोटेचा,

आग्रारोड–धुलिया, प. खानदेश.

Aho ! Shrutgyanam